

चैत - २

सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष ३३, अङ्क २४

२०८१ चैत १६-३१

पूर्णाङ्क ७८६



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७१२, ४२००७२९, ४२००७५०, Ext. २२६९ (सम्पादक), २२७० (सम्पादन शाखा), २१७० (छापाखाना), २२७४ (बिक्री)

टोल फ्री : १६६०-०१-३३३५५, फ्याक्स: ४२००७४९, पो.ब.नं. २०४३८

Email: info@supremecourt.gov.np, admin@supremecourt.gov.np / Web: www.supremecourt.gov.np

सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

| | |
|--|--------------|
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिप्रसाद फुयाल, सर्वोच्च अदालत | - अध्यक्ष |
| माननीय न्यायाधीश श्री सुनिलकुमार पोखरेल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| मुख्य रजिस्ट्रार श्री देवेन्द्रराज ढकाल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री टेकबहादुर घिमिरे, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय | - सदस्य |
| रजिस्ट्रार श्री भद्रकाली पोखरेल, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य |
| अधिवक्ता श्री सुरज खत्री, उपाध्यक्ष, नेपाल बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हरि शंकर निरौला, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन | - सदस्य |
| डा. कृष्णप्रसाद बस्न्याल, डिन, त्रिभूवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय | - सदस्य |
| सहरजिस्ट्रार श्री अर्जुनप्रसाद कोइराला, सर्वोच्च अदालत | - सदस्य सचिव |

सम्पादक : श्री कालीबहादुर साम्यु लिम्बू

सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत्
कर्मचारीहरू

शाखा अधिकृत श्री सुजता उप्रेती
शाखा अधिकृत श्री सुकराम मोक्तान
शाखा अधिकृत श्री विनिता महर्जन
शाखा अधिकृत श्री समिता श्रेष्ठ
नायब सुब्बा श्री सन्तोष घिमिरे
सिनियर प्रुफरिडर श्री रेशम शर्मा
कम्प्युटर अपरेटर श्री विदुर खड्का
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री अच्युतप्रसाद दाहाल

भाषाविद् : श्री रामचन्द्र फुयाल

बिक्री शाखा

नायब सुब्बा श्री खिमा पोखरेल

मुद्रण शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू

मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी
सिनियर कम्पोजिटर श्री श्यामकृष्ण प्रजापति
सिनियर प्रेसम्यान श्री सविता पोखरेल
सिनियर प्लेटमेकर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने
सिनियर बुकबाइन्डर श्री तारा वाग्ले
सहायक कार्टोग्राफर श्री विपिन अधिकारी
बुकबाइन्डर श्री सरिता चक्रधर
बुकबाइन्डर श्री मदन तिमल्सिना
बुकबाइन्डर श्री कृष्णप्रसाद घिमिरे
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी
कार्यालय सहयोगी श्री धनमाया नगरकोटी
कार्यालय सहयोगी श्री रमेश नेपाल

विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा
प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू

| | | | |
|---------------|-----------|--------------|----------|
| पूर्ण इजलास | | इजलास नं. ७ | ५ |
| संयुक्त इजलास | ३ | इजलास नं. ८ | |
| इजलास नं. १ | ५ | इजलास नं. ९ | |
| इजलास नं. २ | | इजलास नं. १० | |
| इजलास नं. ३ | | इजलास नं. ११ | |
| इजलास नं. ४ | | इजलास नं. १२ | २ |
| इजलास नं. ५ | ४ | इजलास नं. १३ | |
| इजलास नं. ६ | ३२ | इजलास नं. १४ | |
| जम्मा | ४४ | जम्मा | ७ |

कूल जम्मा ४४ + ७ = ५१

नेपाल कानून पत्रिकामा

प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि हालसम्म)
हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

www.nkp.gov.np

मा जानुहोला ।

खोज्ने तरिका

सर्वप्रथम www.nkp.gov.np लगइन गरेपश्चात् देखिने पृष्ठमा **शब्दबाट** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गरी हरियो बटनमा रहेको खोज्नुहोस् भन्ने बटनलाई थिची खोजी गर्न सक्नुहुनेछ । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा मुद्दाको किसिम, मुद्दाको नाम एवं निर्णय नं. तथा ने.का.प. विवरणमा रहेका विविध शीर्षकबाट आफूले चाहेअनुसार फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाम्रो बारेमा** समेतबाट हेर्न सक्नुहुनेछ ।

यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्ने छः

सअ बुलेटिन, २०८०, ... - १ वा २, पृष्ठ

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०८१, चैत - २, पृष्ठ १

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

सूचना

"नेपाल कानून पत्रिका र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन" को "वार्षिक ग्राहक" बन्न चाहनेका लागि २०७६ वैशाख अङ्कदेखि वार्षिक ग्राहक बन्न पाउने गरी सम्पादन तथा प्रकाशन समितिले निर्णय गरेको हुँदा सम्बन्धित सबैको जानकारीका लागि यो सूचना प्रकाशन गरिएको छ ।

समितिको निर्णयानुसार मूल्य समायोजन भई नेपाल कानून पत्रिका रु.१५० र सर्वोच्च अदालत बुलेटिन प्रति अङ्क रु.४० कायम गरिएकोसमेत सबैलाई जानकारी गराइन्छ ।

मूल्य रु.४०।-

मुद्रक: सर्वोच्च अदालत, छापाखाना

विषयसूची

| क्र.सं. | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ | इजलास नं. ५ | ९ - १२ | |
|---------------|-----------------------------|---|-------|-------------|---|---------|
| संयुक्त इजलास | | | १ - ४ | | | |
| १. | अंश चलन | मायाकुमारी पौडेल वि. ओमकारप्रसाद शर्मासमेत | १ | ९. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण परिवर्तित नाम ६४ छिन्चु (अः) वि. जिल्ला सरकारी वकिलको कार्यालय, सुर्खेतसमेत | ९ |
| २. | हाडनाता जबरजस्ती करणी | बडिखेल (क) वि. नेपाल सरकार | २ | १०. | वैदेशिक रोजगार कसुर चक्रबहादुर विष्ट वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. दिपक मगर | ९ |
| ३. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. कौटिल्य शर्मा भन्ने संजयकुमार गुप्ता, नेपाल सरकार, वि. राजकुमार गुप्तासमेत | ३ | ११. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण भतिज बविन सिंह वि. उच्च अदालत दिपायलसमेत | १० |
| इजलास नं. १ | | | ४ - ८ | १२. | बैंकिङ्ग कसुर दिपकराज न्यौपाने वि. नेपाल सरकार | ११ |
| इजलास नं. १ | | | ४ - ८ | इजलास नं. ६ | | १२ - ४५ |
| ४. | जबरजस्ती करणी उद्योग | नेपाल सरकार, वि. सुर्जा मुसहर | ४ | १३. | कर्तव्य ज्यान अजोध्या भन्ने दोदलाल थारू | १२ |
| ५. | दाखिल खारेज नामसारी | शिवमाया थापा वि. बुद्धिबहादुर थापा मगर | ५ | १४. | जबरजस्ती करणी नेपाल सरकार वि. कुमार नेपाली | १३ |
| ६. | जालसाजी | चन्देश्वर साह, वि. प्रतापनारायण साह | ६ | १५. | मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार नेपाल सरकार वि. नन्दे कामीसमेत | १४ |
| ७. | जबरजस्ती करणी | देवीराम भन्ने दलबहादुर वि.क. वि. परिवर्तित नाम ५६ तुलसीपुर ०७३-८(क) को जाहेरीले नेपाल सरकार | ७ | १६. | सरकारी छाप र दस्तखत किर्ते नेपाल सरकार वि. श्याम पुडासैनीसमेत, उपेन्द्रदास जोशी वि. नेपाल सरकार | १५ |
| ८. | लागु औषध चरेस | सत्यनारायण बस्नेत वि. नेपाल सरकार | ८ | | | |

| | | | | | | | |
|-----|---|--|----|-----|---|--|----|
| १७. | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | बुद्धिवीर महर्जनसमेत वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग, टंगाल, काठमाडौंसमेत | १६ | २३. | जबरजस्ती करणी | राजेन्द्र शाह वि. नेपाल सरकार | २२ |
| १८. | निर्णय दर्ता बदर, छुट जग्गा नामसारी दर्तासमेत | उत्तरा उदास तुलाधर वि. अकलान्त ताम्राकारसमेत | १८ | २४. | वैदेशिक रोजगार कसुर | एकिन्द्र मादेन वि. नेपाल सरकार | २४ |
| १९. | अनधिकृत निर्णय बदर गरी दर्ता हक कायम गरिपाउँ | श्याम पुडासैनीसमेत वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत, उपेन्द्रदास जोशी वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत | १९ | २५. | अंश चलन | लक्ष्मी थापासमेत वि. सुरेन्द्र थापा | २४ |
| २०. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | सिवानी जि.सी. (राजभण्डारी) समेत वि. श्री नेपाल सरकार, गृह मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत | २१ | २६. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | धनिक लाल मण्डल वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत | २६ |
| २१. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | श्रीनिवास पण्डित आचार्यसमेत वि. जिल्ला प्रहरी परिसर टेकु, काठमाडौंसमेत | २१ | २७. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | सुरेशचन्द्र घिमिरे वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत | २७ |
| २२. | अदालतको अवहेलना | मनराजा कोलाक्षपति वि. कृष्णराज तिवारीसमेत | २२ | २८. | अदालतको अवहेलना | ओम सिंह वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं.३ लाजिम्पाटस्थित नेशनल लाइफ इन्स्योरेन्स कम्पनी लि. समेत | २८ |
| | | | | २९. | बाँकी बक्यौता रकम र जिम्मामा रहेको कागजपत्र सहितको सामान फिर्ता दिलाइपाउँ | भरत बस्नेत वि. ओम सिंह | २९ |

| | | | |
|-----|-------------------------|---|----|
| ३०. | उत्प्रेषण / परमादेशसमेत | राजन मास्के वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत | ३० |
| ३१. | अंश चलन | कान्छी मास्के खत्री वि. राजन मास्के, पुष्कर मास्के वि. राजन मास्के, अमिरबहादुर खत्री मास्के वि. राजन मास्के | ३१ |
| ३२. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | यमबहादुर क्षेत्री वि. तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हाल उच्च अदालत तुल्सीपुर बुटवल इजलाससमेत | ३२ |
| ३३. | गोबध | डम्बरबहादुर गुरुङ वि. नेपाल सरकार | ३३ |
| ३४. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | उमेशबहादुर पौडेल वि. चितवन जिल्ला अदालत, भरतपुरसमेत | ३४ |
| ३५. | अपहरण तथा शरीर बन्धक | सरोज घोरासैनी वि. नेपाल सरकार | ३५ |
| ३६. | लागु औषध (अफिम) | भक्तबहादुर ब्लोन वि. नेपाल सरकार | ३६ |
| ३७. | जबरजस्ती करणी | रुद्रबहादुर पुन वि. नेपाल सरकार | ३७ |
| ३८. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | युद्धबहादुर के.सी वि. सर्वोच्च अदालत प्रशासन शाखासमेत | ३८ |

| | | | |
|--------------------|--------------------------------------|---|----------------|
| ३९. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | अजय शंकर झा "रुपेस वि. जिल्ला सरकारी वकिलको कार्यालय सुर्खेतसमेत | ३९ |
| ४०. | अपहरण तथा शरीर बन्धक र जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. चन्चले माइला भन्ने ज्ञानबहादुर थिङ्गासमेत | ३९ |
| ४१. | दूषित लिखत र कित्ताकाट बदर | शङ्करमान प्रधानसमेत वि. कुलमान तामाङ, विरेन्द्रमान प्रधानसमेत वि. कुलमान तामाङ | ४० |
| ४२. | उत्प्रेषण, परमादेशसमेत | गणेशबहादुर कुर्मी वि. भूमि व्यवस्था सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत | ४१ |
| ४३. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. मुकुन्द भन्ने एकराज हुमागाई | ४३ |
| ४४. | उत्प्रेषण / प्रतिषेध र परमादेशसमेत | दिपकबिक्रम मिश्र वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत | ४४ |
| इजलास नं. ७ | | | ४५ - ५० |
| ४५. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. पारससिंह राजपुत | ४५ |

| | | | |
|-----|---------------------------------------|--|----|
| ४६. | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. कान्छो भन्ने कुमार कान्छा सम्बाहाम्फे | ४६ |
| ४७. | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | RISHABH PAWA समेत वि. जिल्ला प्रहरी परिसर, काठमाडौं, टेकुसमेत | ४७ |
| ४८. | जबरजस्ती करणी | नेपाल सरकार वि. उपेन्द्र दास तत्मा | ४८ |
| ४९. | जबरजस्ती करणी / हाडनाता करणी | साङ्केतिक नाम ०४- ५-ड२ वि. नेपाल सरकार | ४९ |

| | | | |
|--------------|------------------------|---|---------|
| इजलास नं. १२ | | | ५० – ५२ |
| ५०. | वैदेशिक रोजगार कसुर | नन्दकुमार किराती वि. नेपाल सरकार | ५० |
| ५१. | परमादेशसमेत | लक्ष्मीप्रकाश भाग्य श्रेष्ठसमेत वि. नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत | ५१ |

संयुक्त इजलास

१

स.प्र.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल, ०७५-सी-१०६२, अंश चलन, मायाकुमारी पौडेल वि. ओमकारप्रसाद शर्मासमेत

वादी प्रतिवादीहरूबिच अंशबन्डा भइसकेको भन्ने कुनै प्रमाण पेस नभएको अवस्थामा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६(क) बमोजिम एकाघरसँगका अंशियारहरूमध्ये जुनसुकै अंशियारका नाममा रहेको सम्पत्ति सगोलको सम्पत्ति हो भनी अदालतले अनुमान गर्ने छ भन्ने कानूनी व्यवस्थाबमोजिम अन्यथा प्रमाणित नभएसम्मको लागि सो सम्पत्ति बन्डा लाग्नेअन्तर्गतकै सम्पत्ति मान्नुपर्दछ। ऐ. ऐनको दफा २९ मा अदालतले अनुमान गरेको कुनै कुरा कुनै पक्षले खण्डन गर्न चाहेमा त्यसको प्रमाण पुऱ्याउने भार सोही पक्षको हुने छ भनी उल्लेख गरेको पाइन्छ। प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी मायाकुमारी पौडेलले आफ्नो नाउँमा भएको सम्पत्ति स्वआर्जनको रहेको भनी जिकिर लिएको हुँदा आर्जित सम्पत्ति खरिद गर्न पुग्ने आर्जन वा आय रहे नरहेको कुरा हेर्नु आवश्यक हुने।

पुनरावेदक प्रतिवादी मायाकुमारी पौडेलले सुरु जिल्ला अदालतमा पेस गरेको तायदाती फाँटवारी अवलोकन गरी हेर्दा, बर्दिया जिल्ला मगरागडी वडा नं. ६ को कि.नं. ६८४ को जग्गा रु.३,६९,०००/- मा मिति २०५७।०९।२९ मा खरिद गरेको देखिन्छ भने बाँके जिल्ला बनकटवा वडा नं. ७ को कि.नं. ८४२ र ८९९ को जग्गा रु.३०,३६,०००/- मा मिति २०६८।०९।२७ मा खरिद गरेको देखिन्छ। त्यस्तै बाँके जिल्ला रुझेना वडा नं. ९ख र २ख मा पर्ने कि.नं. २७८, ९३५८ र सोमा बनेको घरको मूल्यसमेत जोडी रु.३७,७३,९००/- तिरी मिति २०७१।०३।०८ मा खरिद गरेको देखिन्छ। निज प्रतिवादीले SOS Children's Village Nepal

बाट सञ्चालित SOS H.G.H.S. School सुर्खेत मा २०४४।०२।२० देखि २०४८।१०।२३ सम्म, श्री नेपाल राष्ट्रिय नि.मा.वि. मगरागडी बर्दियामा २०४९।०५।२६ देखि २०५०।१०।०२ सम्म, श्री शारदा मा.वि. मैना पोखरी बर्दियामा २०५०।१०।०३ देखि २०५१।०९।१३ सम्म, नेपाल ग्रामीण विकास बैंक लि. मा २०५२ पौषदेखि २०५३।०७।१५ सम्म र नेपाल राष्ट्र बैंकमा २०५३।०७।१६ देखि मिति २०६९।०८।२९ सम्म सेवा गरेको भन्ने तथ्य निजले पेस गरेको विभिन्न कागजातहरूबाट देखिन्छ। यसरी प्रतिवादी मायाकुमारी पौडेलले २०६९ सालसम्म सेवा गरेको देखिएको हुँदा सोभन्दा पहिले खरिद गरेको अर्थात् मिति २०५७।०९।२९ मा रु.३,६९,०००/- तिरी बर्दिया जिल्ला मगरागडी वडा नं. ६ को कि.नं. ६८४ को जग्गा निजको निजी आर्जनबाट खरिद गरेको देखिन आयो। सो कि.नं. ६८४ को जग्गा निजी आर्जनको देखिएकाले वादीहरूमध्ये २ छोरालाई बन्डा लाग्ने भए पनि पति ओमकारप्रसाद शर्माका हकमा भने बन्डा लाग्ने देखिएन। त्यसैले सो कि.नं. ६८४ को जग्गा पतिलाई समेत बन्डा लाग्ने ठहर गरेको हदमा सम्म सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको फैसला मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी गरी सो जग्गा वादीहरू आयास शर्मा र आयाम शर्मा तथा प्रतिवादी मायाकुमारी तीन जनाबिच मात्र बन्डा लाग्ने।

पुनरावेदक प्रतिवादी मायाकुमारी पौडेलले आफ्नो नाउँमा भएको कित्ता नं. ६८४ बाहेकको जग्गा खरिद गर्न निज स्वयम्ले आर्जन गरेको रकमबाट पुग्यो भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरू पेस गर्न सकेको पाइँदैन। यी प्रतिवादीले निजी आर्जनको भन्ने जिकिर लिएको आधारमा मात्र निजी आर्जनको हुन् भनी निष्कर्षमा पुग्न मिल्ने हुँदैन। यी प्रतिवादीले २०५३ सालमा विवाह पूर्व नै खरिद गरेको अवस्था पनि होइन। निजले जागिर खाएको अवधिबाट निजले आर्जन गरेको आयलाई

मूल्याङ्कन गरी हेर्दा निजले मिति २०५७।०९।२१ मा खरिद गरेको बर्दिया जिल्ला मगरागडी वडा नं. ६ को कि.नं. ६८४ को जग्गासम्म निजको स्वआर्जनबाट खरिद गरेको देखिन आयो । यसैले वादी दाबीअनुसार सम्पूर्ण सम्पत्तिलाई ४ भाग लगाई त्यसबाट वादीहरूले १-१ भाग अंशबापत पाउने ठहर्नाई भएको सुरु जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७५।०६।१५ को फैसला केही उल्टी भई पुनरावेदक प्रतिवादी मायाकुमारी पौडेलको नाउँमा रहेको बर्दिया जिल्ला मगरागडी वडा नं. ६ को कि.नं. ६८४ को जग्गामा वादीहरू आयास शर्मा र आयाम शर्मा तथा प्रतिवादी मायाकुमारी तीन जनाबिच मात्र बन्डा लाग्ने ठहर्छ । यस कि.नं. ६८४ को जग्गामा ओमकारप्रसाद शर्माका हकमा वादी दाबी पुग्न सक्दैन । सोबाहेकको अन्य फैसला मिलेकै हुँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - तिर्थ लक्ष्मी महर्जन
कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल
इति संवत् २०८१ साल कार्तिक ४ गते रोज १ शुभम् ।
यसै लगाउको निम्न मुद्दामा पनि यसैनुसार फैसला भएका छन् ।

- ०७५-CI-१०६३, हालैको बकसपत्र बदर, मायाकुमारी पौडेल वि. ओमकारप्रसाद शर्मासमेत
- ०७७-WO-०८८६, परमादेश, राधादेवी पौडेल, वि. नेपाल सरकार गृहमन्त्रालय सिंहदरबारसमेत

२

स.का.मु.प्र.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की
र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७६-CR-०३४४,
हाडनाता जबरजस्ती करणी, बडिखेल (क) वि. नेपाल
सरकार

पीडित परिवर्तित नाम सातदोबाटो (घ) ले मौकामा अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष कागज गर्दा “बाबाले मलाई रु.५०/- पैसा चाहिन्छ भनेर सोध्नुभयो ।

मैले चाहिन्छ भनेपछि दिनुभयो अनि मलाई सुरुवाल फुकाल भन्नुभयो । मैले सुरुवाल नफुकालेपछि बाबाले आफैँले फुकाल्नु भयो र बाबाको सुसु गर्ने मेरो मलद्वार र पिसाब फेर्ने ठाउँमा छिराउनुभयो । बाबा निदाएपछि म दौडेर हजुरआमा भएको ठाउँमा गएर उक्त घटना सुनाएकी हुँ भनी उल्लेख गरेकोमा उक्त बेहोरालाई समर्थन हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरिदिएको अवस्था छ । मिसिल संलग्न जाहेरवाली परिवर्तित नाम फुल्चोकी (च) तथा वस्तुस्थिति मुचुल्का गर्ने व्यक्तिहरूको अदालतमा भएको बकपत्रबाट समेत जाहेरी बेहोरा तथा प्रतिवादीको साबिती बयान थप पुष्टि भइरहेको देखिने ।

जहाँसम्म प्रतिवादी बडिखेल (क) ले आफू रक्सीले माती अर्धचेतन भएको अवस्थामा पीडित छोरीलाई केवल समाएको, छामेको, च्यापेको मात्र हो र सो कुरा स्वास्थ्य परीक्षण रिपोर्टले प्रमाणित भइरहेको छ भनी लिएको पुनरावेदन जिकिर छ सोतर्फ हेर्दा, पीडित परिवर्तित नाम सातदोबाटो (घ) को स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा There is no any physical and genital injuries and hymen is intact भनी उल्लेख भएको पाइन्छ । जबरजस्ती करणीको कसुरमा खास गरी पीडित नाबालिग भएको अवस्थामा कसुर ठहर हुनका लागि पीडितको कन्याजाली च्यातिएको हुनु पर्ने वा शरीरमा संघर्षको चिह्न भेटिनुपर्ने जस्ता अवस्थालाई अनिवार्य तत्त्व मान्न मिल्दैन । पीडित कम उमेरकी नाबालिग भई यौनाङ्गको राम्रोसँग विकास भइनसकेको हुँदा योनिमा लिङ्ग प्रवेश हुन कठिन हुने भएकाले कन्याजाली च्यातिएको वा योनि वा भगोष्ठमा घाउ डाम आदि नहुने अवस्था रहन सक्छ । यसै गरी पीडितले प्रतिवादीसँग प्रतिकार गर्न सक्ने अवस्थासमेत नहुने भएबाट पीडित वा प्रतिवादीको शरीरको अन्य भागमा संघर्षका चिह्न नदेखिनुलाई पनि स्वाभाविक मान्नुपर्ने हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा आफ्नै पिताको संरक्षणमा रहेकी १० वर्षकी

नाबालिग छोरीलाई गुमाङ्गमा औलासमेत छिराई जबरजस्ती करणी गरेको अवस्था हुँदा स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट पीडितको शरीरमा घा खत निल डाम आदि नदेखिँदैनमा प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी नगरेको भन्ने तथ्य स्थापित हुन नसक्ने ।

प्रतिवादी स्वयम् ले अदालतसमक्ष बयान गर्दा आफूले रक्सीकोसुरमा होस नपुगी छोरीलाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने आरोपित कसुरमा साबित रही बयान गरेको अवस्था छ । पक्ष स्वयम्ले अदालतमा उपस्थित भई व्यक्त गरेको कुरा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा (४) (१) (क) अनुसार प्रमाणमा लिनुपर्ने हुन्छ । यस अतिरिक्त वादी पक्षका साक्षी मौकामा घटना विवरण कागज गर्ने रञ्जित पहारीलगायतका व्यक्तिहरूले समेत अभियोग दाबी पुष्टि हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई गरेको बकपत्रबाट समेत प्रतिवादीउपरको आरोप पुष्टि हुन आउँछ । प्रतिवादीले आरोपित कसुर नगरेको भए स्वयम् निजको जन्मदात्री आमा जाहेरवाली फुल्चोकी (घ) र पीडित छोरी परिवर्तित नाम सातदोबाटो (घ) ले आफ्नै छोरा तथा बुबालाई जबरजस्ती करणीजस्तो गम्भीर कसुरमा आरोप लगाउनुपर्नेसम्मको कारण मिसिल संलग्न कागजातबाट नदेखिँदा प्रतिवादीले आफ्नै नाबालिग छोरीलाई रक्सी सेवन गरी जबरजस्ती करणी गरेको पुष्टि हुन आयो । मिसिल प्रमाणबाट छोरीलाई जबरजस्ती करणी गरेको होइन भन्ने प्रतिवादी बडिखेल (क) को पुनरावेदन जिकिर समर्थित नहुने ।

प्रतिवादीलाई आरोपित कसुरमा सजाय ठहर गरेको सुरु ललितपुर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।८।२ मा भएको फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७५।१२।१८ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : राजकुमार दाहाल / सदिक्षा नेपाल (शा.अ.)

इति संवत् २०८० वैशाख १० गते रोज १ शुभम् ।

३

स.का.मु.प्र.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७६-CR-०६२५, ०७७-RC-००३५, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. कौटिल्य शर्मा भन्ने संजयकुमार गुप्ता, नेपाल सरकार, वि. राजकुमार गुप्तासमेत

प्रतिवादीहरू राजकुमार गुप्ता, निरदलिया भन्ने निरन्जनकुमार चौधरी, ज्ञानेश्वर राय यादव र गुड्डु शिवा भन्ने श्रवणकुमार मोरियाले अदालतमा बयान गर्दा आफूहरूले कसुर गरेकोमा इन्कार रहेको भए तापनि अनुसन्धानमा भएको आफ्नो साबितिलाई अन्यथा पुष्टि गर्न सकेको पाइएन । वस्तुनिष्ठ आधार प्रमाण पेस हुन नसकेको, केवल आरोपित कसुरबाट उन्मुक्ति पाउने उद्देश्यले गरेको इन्कारी बयान पुष्टि हुन आफैँ त्यस्तो इन्कारी बयानले प्रमाणको स्थान ग्रहण गर्न सक्दैन । इन्कारी बयान प्रमाण ग्राह्य हुन कुनै आधारभूत, तथ्यपरक एवं निश्चयात्मक प्रमाणबाट समर्थित भएको हुनुपर्छ । प्रतिवादीहरू मौकाको बयानमा आरोपित कसुरमा साबित रहेका र अदालतसमक्ष भएको बयानमा इन्कारी रहेको अवस्थामा अदालतले प्रतिवादीले अदालतबाहेक अन्यत्र व्यक्त गरेको कुरा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९(२)(क) बमोजिम सचेत अवस्थामा स्वेच्छाले व्यक्त गरेको हो वा होइन भनी हेर्नुका साथै मिसिल संलग्न अन्य स्वतन्त्र प्रमाणले मौकाको साबित्ती वा अदालतको इन्कारी कुन बयानलाई समर्थित गर्छ भन्ने तथ्यलाईसमेत विचार गर्नुपर्ने हुन्छ । प्रतिवादीहरूको भनाई वा कथन झुठ्ठा पनि हुन सक्छ तर दशी प्रमाण एवं वारदातबाट देखिएको वस्तुस्थिति यथार्थपरक हुन्छ । प्रस्तुत मुद्दाको वारदात परिस्थिति हेर्दा यी प्रतिवादीहरूले ईन्द्रकुमार श्रेष्ठलाई गोली प्रहार गरी हत्या गरेको कुरा अनुसन्धानको बयानमा खुलाएको, सबै प्रतिवादीहरूको मौकाको बयानमा उल्लिखित घटनाक्रममा सङ्गति र एकरूपता देखिएको, वारदात

स्थलबाट गोली तथा गोलीको खोका भेटिएको एवम् पोस्टमार्टम रिपोर्टमा मृत्युको कारण गोली लागी भएको भन्ने उल्लेख भएको देखिइरहेको अवस्थामा केवल प्रतिवादीहरू अदालतमा इन्कारी रहेकै आधारमा प्रतिवादीहरूको आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने अवस्था देखिएन । प्रतिवादी कौटिल्य भन्ने सञ्जय गुप्ताबाहेकका अन्य प्रतिवादीहरू राजकुमार गुप्ता, निरदलिया भन्ने निरन्जनकुमार चौधरी, ज्ञानेश्वर राय यादव र गुडु शिवा भन्ने श्रवणकुमार मोरियासमेतको आरोपित कसुरमा संलग्नता पुष्टि हुने ।

प्रतिवादीहरू गुडु शिवा भन्ने श्रवणकुमार मोरिया र बिक्रम उपनामले चिनिने ज्ञानेश्वर राय यादवसमेतका हकमा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. को सजायको मागदाबी रहेको र निजहरूलाई सोहीबमोजिम जन्मकैदको सजाय भई साधकको रोहमा पेस भएको देखिन्छ । यस सम्बन्धमा भएको कानूनी व्यवस्था हेर्दा, मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. मा “धार भएको वा नभएको जोखिमी हतियार गैह्रले हानी रोपी घोची ज्यान मारेमा जतिजना भई हतियार छाडेको छ उती जना ज्यानमारा ठहर्छन् । सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्नुपर्छ” भन्ने व्यवस्था रहेको देखियो । प्रस्तुत वारदातमा यी प्रतिवादीहरूले जोखिमी हतियार बन्दुकको गोली प्रहार गरी हत्या गरेको पुष्टि भएको हुँदा उक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने भए तापनि हाल प्रचलित मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) ले सर्वस्वसहित जन्म कैदको सजाय नहुने हुँदा प्रतिवादीहरू ज्ञानेश्वर राय यादव र गुडु शिवा भन्ने श्रवणकुमार मोरियालाई सर्वस्वतर्फको सजाय नभई जन्मकैदको सजाय हुने ।

प्रतिवादी कौटिल्य शर्मा भन्ने संजयकुमार गुप्ताले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने र प्रतिवादी राजकुमार गुप्ता र निरदलिया भन्ने निरन्जनकुमार चौधरीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको

१३(४) नं. बमोजिम जन्मकैद र प्रतिवादी ज्ञानेश्वर राय यादव र गुडु शिवा भन्ने श्रवणकुमार चौधरीलाई ऐ. ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई भएको सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतको मिति २०७१।५।१६ को फैसला सदर गरी मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४०(२) बमोजिम जन्मकैदको सजाय ठहर गरेको उच्च अदालत, जनकपुरबाट मिति २०७५।१०।२३ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : राजकुमार दाहाल

कम्प्युटर : चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०८० वैशाख १० गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. १

४

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७३-CR-११३९, जबरजस्ती करणी उद्योग, नेपाल सरकार, वि. सुर्जा मुसहर

जाहेरवाला नाम परिवर्तित CC ले जाहेरी बेहोरालाई समर्थन गर्दै पीडित छोरीलाई प्रतिवादी सुर्जा मुसहरले जबरजस्ती करणी गर्ने मनसाय राखी कट्टु खोलेको र पीडित बिउँझेको कारण निज भागी गएको बारेमा पीडित छोरीले भनेको भनी अदालतमा बकपत्र गरेको देखिन्छ । सोहीबमोजिम पीडित नाम परिवर्तित C ले पनि घरमा कोही नभएको समयमा प्रतिवादी सुर्जा मुसहरले करणी गर्ने मनसायले कट्टु खोलेको र आफू बिउँझेको कारण निज प्रतिवादी भागी गएको भनी मौकामा गरेको बयान बेहोरालाई गडाउ गर्दै अदालतमा बकपत्र गरेको अवस्थामा प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गर्ने उद्योगसम्म गरेको देखिने ।

पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट कन्याजाली च्यालिएको (Hymen torn) भन्ने उल्लेख

भए तापनि प्रतिवादीउपर जबरजस्ती करणीको अभियोग दायर भएको देखिँदैन । अर्कोतर्फ पीडितले आफूउपर प्रतिवादीले जबरजस्ती करणीको कसुर गरेको भनी भनेको पनि देखिँदैन । प्रतिवादीउपर उल्लिखित वारदातको अनुसन्धान र अभियोजनसमेत जबरजस्ती करणी उद्योगको कसुरतर्फ भएको देखिएकाले माथि विवेचित आधार, प्रमाणका सन्दर्भमा प्रतिवादीले पीडितउपर जबरजस्ती करणीको उद्योग गरी मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. तथा ५ नं. बमोजिमको कसुर गरेको स्थापित हुने ।

प्रतिवादी सुर्जा मुसहरलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिई सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को दफा २७ बमोजिम सरोकारला झिकाई सकार गरेमा मुद्दा आसय करणीतर्फ परिणत गर्ने गरी मोरङ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत विराटनगरबाट मिति २०७३।०४।३० मा भएको फैसला नमिलेकोले उल्टी भई प्रतिवादी सुर्जा मुसहरलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ नं. र ५ नं. को कसुरमा सोही महलको ५ नं. बमोजिम ५(पाँच) वर्ष कैद हुने ।

इजलास अधिकृत - कृष्णशोभा सुवाल
इति संवत् २०८० साल भदौ १० गते रोज १ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७५-CI-०१८२, दाखिल खारेज नामसारी, शिवमाया थापा वि. बुद्धिबहादुर थापा मगर

पुनरावेदकवादी स्वयंले आफूसँगै बस्दैआएको फुपूसासू दिलमाया मगरनीको मृत्यु मिति २०५२।८।६ मा भएको दाबी गरेकोमा अपुताली परेको मितिले ३ वर्षभित्र नालिस गरी अपुताली हक कायम गराई लिन सक्नुपर्नेमा विलम्ब गरी २०७१ सालमा अर्थात् करिब १९ वर्षको लामो अन्तरालमा कानूनले निर्दिष्ट गरेको हदम्याद नघाई फिरादपत्र दायर गरेको देखिन्छ । त्यसै गरी आफूले पेस गरेको सर्जमिन मुचुल्का एवम्

तत्कालीन ककुर ठाकुर गाउँ विकास समितिको मिति २०७०।७।१३ सिफारिसपत्रसमेतलाई प्रमाणको रूपमा मूल्याङ्कन गरिएन भन्ने पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिर रहेकोतर्फ विचार गर्दा, ससुरा बाजे बाचवीर भन्ने वीरबहादुर थापा मगरको ५ जना छोराहरूमध्ये माहिला खड्गबहादुर मगर वादीको ससुरा, गणेशबहादुर थापा मगर निजको पति एवम् निज ससुरा बाजेको २ जना छोरीहरूमध्ये अविवाहित नै रहेकी कान्छी दिलमाया मगरनी वादीको फुपू सासू नातापर्ने हुन् । म प्रतिवादीको बुबा दिपबहादुर थापा मगर बाजे बाचवीर भन्ने वीरबहादुर थापा मगरको काँहिला सन्तान हुन् भन्नेसमेत बेहोरा खुलाई लेखाई प्रतिवादीले प्रतिउत्तरपत्र फिराएको देखिन्छ । प्रतिवादीले फिराएको उल्लिखित बेहोराको प्रतिउत्तरपत्रलाई वादीले अन्यथा भनी कहींकतै खण्डन गरेको पाइँदैन । वादीले पेस गरेको सर्जमिन मुचुल्का एवम् सिफारिसपत्रमा ससुरा बाजे बाचवीर भन्ने वीरबहादुर थापा मगरको एक मात्र छोरा आफ्ना ससुरा खड्गबहादुर मगर र एक मात्र छोरी फुपूसासू दिलमाया मगरनी रहेभएको भन्ने उल्लेख रहेको पाइन्छ । यसरी उल्लिखित सर्जमिन मुचुल्का एवम् सिफारिसपत्रसमेत नाता र पुस्तेवारी नै लोप हुने गरी तयार गरिएको पाइँदा सो कागजातहरू प्रमाणको रूपमा ग्राह्य हुने देखिन आएन । विवादित कि.नं. ८० को जग्गाको दर्तावाला दिलमाया मगरनीलाई बाचुन्जेल बुद्धिबहादुर थापा मगरले नै पालेको र मरेपछि काजकिरियासमेत गरेको हो भनी प्रतिवादीका साक्षी इन्द्रबहादुर थापा मगर र लिलाबहादुर थापा मगरसमेतले अदालतसमक्ष बकपत्र गरिदिएको पाइन्छ । यसरी प्रत्यर्थी प्रतिवादीले आफ्नो जिकिरलाई आफ्ना साक्षी प्रमाणबाट पुष्टि गराएकोमा पुनरावेदक वादीले भन्ने आफ्नो दाबी पुष्टि गर्न गराउन कुनै विश्वसनीय आधार पेस गर्न नसकेको ।

दिलमाया मगरनीका नाममा दर्ता रहेको सिन्धुली जिल्ला, अरुण ठाकुर गा.वि.स. वडा नं. ८/

ङ को विवादित कि.नं. ८० को ०-१८-१०-२ जग्गा वादीको नाममा मात्र एकलौटी दाखिल खारेज नामसारी गरिपाउँ भन्ने फिराद दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्न्याई सुरु सिन्धुली जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत पाटनको मिति २०७३।११।१० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत :- गगनदेव महतो

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०८० साल चैत्र २५ गते रोज १ शुभम् ।

६

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७३-CR-१३६२, जालसाजी, चन्देश्वर साह, वि. प्रतापनारायण साह

प्रतिवादी चन्देश्वर साहले सा.कि.नं.७४७ को ०-१-११ को जग्गा आफ्नो नाउँमा लगत कायम गराउनका लागि निवेदन दिएकोमा प्रतिवादी चन्देश्वर साहले उल्लिखित जग्गाको मालपोत बुझाउँदै आएको भनी निवेदन मागबमोजिम सर्जमिन मुचुल्का भई भएको सिफारिसबमोजिम मालपोत कार्यालय, सप्तरीको टिप्पणी आदेशबाट मिति २०६६।०६।२७ मा उक्त सा.कि.नं.७४७ को जग्गाको लगत प्रतिवादी चन्देश्वर साहको नाउँमा कायम भएको मिसिल संलग्न टिप्पणी आदेशको प्रतिलिपिबाट देखिन्छ । सा.कि.नं.७४७ को जग्गाको लगत प्रतिवादी चन्देश्वर साहको नाममा कायम हुने गरी मालपोत कार्यालय, सप्तरीबाट भएको टिप्पणी आदेश बदर गरिपाउँन वादी अन्द्रिकादेवी साहले सप्तरी जिल्ला अदालतमा दायर गरेको टिप्पणी आदेश निर्णय बदर दर्ता बदर दर्ता कायम हक कायम मुद्दामा कि.नं.७४७ को ०-१-११मध्ये पश्चिमतर्फबाट ०-०-१३१/२ जग्गाको हदसम्म मिलेको नदेखिँदा सोही हदसम्म मालपोत कार्यालय, सप्तरीको मिति २०६६।०७।२७ को टिप्पणी निर्णय बदर गर्नुपर्नेमा डिसमिस गर्ने गरी भएको सप्तरी जिल्ला अदालतको फसला उल्टी हुने गरी पुनरावेदन अदालत

राजविराजबाट मिति २०६९।११।०६ मा फैसला भई अन्तिम भइसकेको मिसिल संलग्न फैसलाको प्रतिलिपिबाट देखिन्छ । यसबाट पनि विवादित साबिक कि.नं.७४७ को जग्गामध्येको कुनै पनि जग्गामा प्रतिवादीमध्येको चन्देश्वर साहको हक भोगमा रहेको नदेखिने ।

प्रतिवादी चन्देश्वर साहले आफ्नो नाउँमा कायम भएको जग्गा अन्य व्यक्तिहरूलाई हक हस्तान्तरण गरिसकेपश्चात् पनि वादीको हक मेटाउने बदनियतले सर्जमिन सिफारिसका लागि निवेदन गरेको र निवेदन मागबमोजिम सर्जमिन सिफारिस भई सो सर्जमिन सिफारिसका आधारमा सा.कि.नं.७४७ को जग्गालाई प्रतिवादी चन्देश्वर साहले आफ्नो नाउँमा लगत कायम गराएको कार्य मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको १ नं. विपरीतको कार्य हुने देखिन्छ । यस परिवेशमा प्रतिवादीले मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको १ नं.ले व्याख्या गरेको कसुर गरेको देखिएको र उल्लिखित विवादित जग्गाको मूल्य खुलिआएको नदेखिएको अवस्थामा निज प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको १० नं. बमोजिम रु.२००।- (दुई सय रूपैयाँ) जरिवाना गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट भएको फैसला अन्यथा देखिएन । यस अदालतबाट प्रत्यर्थी झिकाउँदा लिइएका कारण तथा आधारहरूसँग यस इजलास सहमत नहुने ।

प्रतिवादी चन्देश्वर साहको हक भोग नरहे नभएको भन्ने पुष्टि भएको अवस्थामा प्रतिवादी चन्देश्वर साहको हक भोग रहेको भनी गरिएको दाबीको सर्जमिन सिफारिस र साबिक कि.नं.७४७ को जग्गाको प्रतिवादी चन्देश्वर साहले आफ्नो नाउँमा लगत कायम गराएको कार्यसमेत जालसाजीपूर्ण रहेकोले प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, कित्ते कागजको महलको १० नं. अनुसार जनही रु.२००।- (दुई सय रूपैयाँ) जरिवाना हुने ठहर्न्याई पुनरावेदन अदालत राजविराजबाट मिति २०७३।०५।२० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा

सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - कृष्णशोभा सुवाल

इति संवत् २०८० साल भदौ १० गते रोज १ शुभम् ।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैनुसार फैसला भएका छन् ।

- ००७३-CR-१३६३, जालसाजी, चन्देश्वर साह वि. प्रताप नारायण साह
- ७३-CR-१३६५, जालसाजी, चन्देश्वर साह वि. लक्ष्मीनियादेवी साह

७

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र
मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल, ०७४-CR-
१८०४, जबरजस्ती करणी, देवीराम भन्ने दलबहादुर
वि.क. वि. परिवर्तित नाम ५६ तुलसीपुर ०७३-८(क)
को जाहेरीले नेपाल सरकार

पीडितको भजाइनल स्वावमा शुक्रकिट नपाइएको भन्ने पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिँदा आरोपित कसुरबाट प्रतिवादीले सफाइ पाउनुपर्ने भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरतर्फ विचार गर्दा पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने डा. रोशनी के.सी.ले अदालतमा गरेको बकपत्रमा पीडितको योनिमा कोतरिएको र नयाँ घाउ देखिएकोले प्रयास भएको भन्ने बुझिन्छ जसमा लिङ्ग वा सोही आकारको सामानले यी पीडितमाथि आक्रमण गरिएको भन्ने बुझिन्छ भन्ने बेहोराको उल्लेख गरेको पाइन्छ । प्रतिवादीको अनुसन्धान अधिकारीसमक्षको बयानबाट वारदात भएको मिति समयमा निजको उपस्थिति घटनास्थलमा थियो भन्ने देखिएको, पीडितका एकाघरका लोग्नेले निज प्रतिवादीले आफ्नो अपाङ्ग श्रीमतीलाई जबरजस्ती करणी गरेका हुन् भनी किटानी जाहेरी दिएको, पीडिताले आफूलाई प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेका हुन् भनी मौकामा गरेको कागज, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन तथा स्वास्थ्य जाँच गर्ने चिकित्सकले गरेको बकपत्रलगायतका सबुत

प्रमाणबाट यी प्रतिवादी निर्दोष रहेछन् भनी निष्कर्षमा पुग्ने अवस्था नदेखिने ।

जाहेरवाला तथा पीडितले अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र नगरेको कारण आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउनुपर्छ भन्ने प्रतिवादीको अर्को पुनरावेदन जिकिरतर्फ हेर्दा, प्रस्तुत मुद्दामा जाहेरवाला तथा पीडितले अनुसन्धानको क्रममा व्यक्त गरेको कथनलाई निजहरू साक्षीसह अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र नगरेको भए तापनि विशेषज्ञ चिकित्सकले पीडितको शरीर, यौनाङ्गको जाँच गरी शरीरमा देखिएको घाउ चोटको बारेमा उल्लेख गरी तयार पारिएको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन अरु स्वतन्त्र र भरपर्दो प्रमाणबाट अन्यथा प्रमाणित नभएको अवस्थामा प्रमाणको लागि ग्राह्य हुने नै देखियो । वैज्ञानिक विधि पद्धतिबाट जाँच गरिएको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन तथ्यगत प्रमाण नै हो । पीडितको शरीरमा जबरजस्ती आपराधिक कार्य गर्दा पर्न गएको घाउचोट प्रमाण वस्तुगत आधारमा देखिने हुँदा त्यस्तो प्रमाणलाई न्यायको रोहमा अनदेखा गर्नु मनासिब नहुने ।” भनी यसै अदालतबाट नजिर सिद्धान्तसमेत प्रतिपादन भएको र प्रस्तुत मुद्दामा पीडितको योनिको माथिल्लो भागमा १×१ c.m. को कोतरिएको नयाँ घाउ पाइएको, योनिको भित्री भागमा (labia majora) २×१ को च्यातिएको घाउ पाइएको भन्ने स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट देखिँदा निज प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको ठहर गरी सजाय गरेको उच्च अदालत तुलसीपुरको फैसला अन्यथा नदेखिने ।

प्रतिवादी देवीराम भन्ने दलबहादुर बि.क. ले अभियोगदाबीबमोजिम पीडितलाई जबरजस्ती करणीको कसुर गरेको देखिँदा निजलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको दफा ३(५) नं. बमोजिम ५(पाँच) वर्ष कैद तथा पीडित अपाङ्गता भएको महिला भएकोले निज प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको दफा ३(क) नं.

बमोजिम थप ५(पाँच) वर्ष कैद साथै पीडितालाई स्थानीय महिला बालबालिका कार्यालय, दाङबाट क्षतिपूर्तिस्वरूप रु.३०,०००।- (तीस हजार रूपियाँ) भराई दिने ठहर्‍याएको दाङ जिल्ला अदालतको मिति २०७३।१०।११ को फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत तुलसीपुरबाट मिति २०७५।१०।०३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : तिर्थ लक्ष्मी महर्जन

कम्प्युटर : मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०८० साल माघ ७ गते रोज १ शुभम्

८

मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल, ०७५-CR-२०५७, लागु औषध चरेस, सत्यनारायण बस्नेत वि. नेपाल सरकार

मिति २०७०।१०।१२ गते बाँके मनिकापुरमा प्रहरी टोलीले भे २. प ९५५७ नं. को मोटरसाइकल चेकजाँच गर्दा उक्त मोटरसाइकलमा सवार अर्जुन कार्की र सत्य नारायण बस्नेतको साथबाट ४/४ के.जी. चरेस बरामद भएको भन्ने प्रहरी प्रतिवेदनबाट सुरु भएको प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरू अर्जुन कार्की र सत्य नारायण बस्नेतले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष मानबहादुर भन्ने मनबहादुर बस्नेतलाई पोल गरी आफूहरूले ४/४ के.जी चरेश बोकी ल्याएको र उक्त लागु औषध चरेस नेपालगन्ज ल्याएबापत प्रति के.जी. रु.१,०००।- का दरले लिने भन्ने सल्लाह भएको थियो भनी कसुरमा साबित रही बयान गरेको पाइन्छ। निजहरूले पोल गरेको आधारमा पक्राउ गरिएका प्रतिवादी मानबहादुर भन्ने मनबहादुर बस्नेतले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष जीवन क्षेत्रीले ल्याई राखेको चरेश निजबाट खरिद गरी प्रतिवादीहरू सत्यनारायण बस्नेत र अर्जुन कार्कीलाई नेपालगन्ज पुऱ्याउन पठाएको भन्ने बेहोरा उल्लेख गरी बयान गरेको देखिन्छ भने निजले अदालतसमक्ष जीवन क्षेत्रीले झोला ल्याई आफ्नोमा राखेकोमा अर्जुन कार्की र सत्य नारायण बस्नेतलाई आलु भनी दिँदा चरेसको

झोला परेछ भनी बयान गरेको पाइने।

प्रतिवादी सत्यनारायण बस्नेतको साथबाट लागु औषध चरेस बरामद भएको भन्ने तथ्यमा कुनै विवाद रहेको छैन। सो तथ्य बरामदी मुचुल्काबाटसमेत पुष्टि भएको पाइन्छ। प्रतिवेदकले अदालतमा बरामदी मुचुल्काको बेहोरा समर्थित हुने गरी बकपत्र गरेको देखिन्छ। उल्लिखित तथ्यगत आधारसमेतबाट यी प्रतिवादीले लागु औषध चरेस साथमा लिई बिक्री गर्न हिँडेको अवस्थामा बरामद भएको भन्ने पुष्टि हुन आयो। लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को परिच्छेद २ को दफा ४ को देहाय (क) मा “कुनै पनि व्यक्तिले गाँजाको खेती गर्न, उत्पादन गर्न, तयारी गर्न, खरिद गर्न, बिक्री वितरण गर्न, निकासी वा पैठारी गर्न, ओसार पसार गर्न, सञ्चय गर्न वा सेवन गर्ने कार्यहरू गर्न हुँदैन” भन्ने व्यवस्था रहेको छ। यसबाट यी प्रतिवादीको उक्त कार्य उल्लिखित लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(क) अनुसारको निषेधित कार्य देखिन्छ। साबिती बयान आफैँमा महत्त्वपूर्ण प्रमाण रहेको र अनुसन्धानको क्रममा भएको प्रतिवादीहरूको साबिती बयान अन्य प्रमाणहरूबाट समर्थित भइरहेको देखिँदा अदालतको इन्कारी बयानलाई मात्र आधार मानी प्रतिवादी सत्य नारायण बस्नेतलाई आरोपित कसुरबाट सफाइ दिनुपर्ने मनासिब आधार, कारण नदेखिने।

प्रतिवादी सत्यनारायण बस्नेतलाई अभियोगदाबी बमोजिम १ वर्ष कैद र रु.५,०००।- जरिवाना हुने ठहर्‍याएको बाँके जिल्ला अदालतको मिति २०७२।०३।१५ को फैसला सदर हुने गरी उच्च अदालत तुलसीपुर, नेपालगन्ज इजलासबाट मिति २०७४।०२।०८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : तिर्थ लक्ष्मी महर्जन

कम्प्युटर : सुप्रभा अर्याल

इति संवत् २०८० साल माघ ७ गते रोज १ शुभम्।

इजलास नं. ५

९

मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा र
मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७८-WH-
०२३३, बन्दीप्रत्यक्षीकरणसमेत, परिवर्तित नाम ६४
छिन्चु (अः) वि. जिल्ला सरकारी वकिलको कार्यालय,
सुर्खेतसमेत

महासन्धिको प्रावधानबाट राज्यले प्रत्येक बालबालिकाको सर्वोत्तम हितलाई सदैव ध्यान दिइनुपर्ने। उनीहरूको विकासका खातिर सकेसम्मका उपायहरू अवलम्बन गरिनुपर्ने, आफू विरुद्धको कारबाहीमा सामेल हुन पाउने तथा सो कारबाहीका हरेक चरणमा प्रतिनिधित्व हुन पाउने एवं आफ्नो अविभावकसँग रहन पाउनेजस्ता बालबालिकाको अधिकारको सदैव ख्याल गरिनुपर्ने तथा साधारणतः बालबालिकालाई कैद वा थुनामा राख्नु नहुने र कानूनतः बालबालिकालाई कैद वा थुनामा राख्नु पर्ने भएमा पनि अन्य विकल्पहरूको सम्भावना नभएमा मात्र अन्तिम उपायको रूपमा त्यसमा पनि सीमित समयको लागि मात्र कैद वा थुनामा राखिनुपर्ने भन्ने देखिने।

उल्लिखित नेपालको संविधानको धारा ३९, बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा १६(१), ३६(७) तथा मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ३(च) र (छ) को परिभाषालगायतका कानूनी प्रावधानहरूलाई सामञ्जस्यतात्मक (Harmonious) रूपमा बालबालिकाको सर्वोत्तम हितलाई ध्यानमा राखी कानूनी प्रावधानहरूलाई सम्पूर्णतामा राखी अर्थ र व्याख्या गरिनु नै न्यायोचित हुने हुन्छ। यस दृष्टिबाट हेर्दा, वस्तुतः यी रिट निवेदिका १६ वर्ष पूरा नभएको बालिका रहेको देखिएको र पटके कसुरदारसमेत नरहेकोले निज निवेदिकालाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(७) अनुसार कैदको

सजाय हुन सक्ने अवस्था देखिँदैन। तसर्थ, निवेदिकालाई कैदमा राख्न नमिल्ने यस अवस्थामा निज निवेदिकालाई १ वर्ष ६ महिना बाल सुधार गृहमा राख्न पठाउने गरी भएको सुर्खेत जिल्ला अदालतको मिति २०७८।०९।२६ च.नं. ३९३० को कैदी पुर्जी, पत्राचारलगायतका सम्पूर्ण कार्य कानूनसङ्गत देखिन नआएकोले प्रस्तुत रिट निवेदनमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिने।

उल्लिखित आधार, कारणबाट, यी रिट निवेदिकालाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(७) अनुसार कैदको सजाय नहुने भएबाट निजलाई कैदमा राख्न नमिल्ने हुँदा निजलाई १ वर्ष ६ महिना कैद असुल गर्न बाल सुधार गृहमा राख्न पठाउने गरी सुर्खेत जिल्ला अदालतबाट निवेदिका परिवर्तित नाम ६४ छिन्चु(अः) उपर मिति २०७८।०९।२६ च.नं. ३९३० मा जारी भएको कैदी पुर्जी, पत्राचारलगायतका कार्य कानूनसम्मत नदेखिँदा उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर हुने। साथै, निवेदिकालाई कानूनविपरीत थुनामा राख्न पठाएको देखिँदै निवेदिकाको थुना गैरकानूनी भएको हुँदा निज निवेदिकालाई अविलम्ब बाल सुधार गृहबाट मुक्त गरी निजको अभिभावक वा संरक्षकको जिम्मा लगाइदिने सम्बन्धमा आवश्यक काम कारबाही तत्काल अघि बढाउनु भनी सुर्खेत जिल्ला अदालतको नाउँमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने।

इजलास अधिकृत : वसन्तप्रसाद मैनाली
कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने
इति संवत् २०७९ साल अषाढ १ गते रोज ४ शुभम्।

१०

मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा र मा.न्या.डा.श्री कुमार
चुडाल, ०७३-CR-१६२५, ०७४-CR-०१८९,
वैदेशिक रोजगार कसुर, चक्रबहादुर विष्ट वि. नेपाल
सरकार, नेपाल सरकार वि. दिपक मगर

प्रतिवादीमध्येका दिपक मगरलाई समेत
अभियोग दाबीबमोजिम कसुरदार ठहर हुनुपर्छ

भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरको सम्बन्धमा विचार गर्दा, यी प्रतिवादीले जाहेरवालसँग रकम बुझेको भने तापनि रकम बुझेको भरपाई वा अन्य कुनै प्रमाणबाट सो कुरा पुष्टि हुन सकेको देखिँदैन । जाहेरवालालाई प्रतिवद्धताको कागज प्रतिवादी महेश विष्टले नै गरिदिएको तर यी प्रतिवादीबाट सो प्रकारको प्रतिवद्धतासमेत भएको देखिँदैन । कुनै ठोस प्रमाणबाट कसुरमा संलग्नता पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा जाहेरी बेहोरा र सहप्रतिवादी महेश विष्टको पोलको भरमा मात्र निजको आरोपित कसुरमा संलग्नता रहेको भनी मान्न मिल्ने हुँदैन । जाहेरी बेहोरा, प्रतिवादीको अनुसन्धानको बयान, जाहेरवालालाई बकपत्रहरूको कथनबाट मात्र कुनै लिखत प्रमाणको अभावमा विदेशमा भएको लेनदेन पुष्टि हुन सक्ने देखिँदैन । यी प्रतिवादीसमेतको दाबीको कसुरमा संलग्नता रहेको भन्ने पुनरावेदन जिकिर लिने वादी पक्षले यी प्रतिवादी दिपक मगरको हकमा आफ्नो अभियोग माग दाबी तथा पुनरावेदन जिकिरलाई वस्तुनिष्ठ प्रमाण वा अन्य परिस्थितिजन्य प्रमाणद्वारा प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार शंकारहित तवरबाट पुष्टि गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादी दिपक मगरसमेतलाई अभियोग दाबीबमोजिम कसुरदार ठहर हुनुपर्छ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँगसमेत सहमत हुन नसकिने ।

वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट कसुरदार ठहर गरिएको प्रतिवादी महेश विष्ट पुनरावेदक/प्रतिवादी चक्र बहादुर विष्ट नै रहेको पुष्टि हुन आएको देखिँदा निज प्रतिवादी महेश विष्ट भन्ने चक्रबहादुर विष्टलाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १०, ४३ को विपरीतको कसुर अपराधमा सोही ऐनको दफा ४३ बमोजिम ३ (तीन) वर्ष कैद र रु.३,००,०००।- (तीन लाख रुपियाँ) जरिवाना हुने र प्रतिवादीले अभियोगपत्र मागदाबीबमोजिम जाहेरवाला मंगल कृष्ण राइले बिगो रु.२,००,०००।- फिर्ता लगिसकेको देखिँदा

उक्त रकम घटाई बाँकी बिगो,सोको हर्जाना र स्वदेश फर्की आउँदा लागेको खर्च रु. ४७,४००।- समेत र पीडित मेघराज बुढाथोकी र हरिलाल विष्टको कानूनको म्यादभित्र दरखास्त परे अभियोग माग दाबीबमोजिमको रकम प्रतिवादी महेश विष्ट भन्ने चक्रबहादुर विष्टबाट भराइपाउने ठहर गरी कसुरमा संलग्नता नदेखिएको प्रतिवादी दिपक मगरउपरको अभियोग दाबी पुन नसक्ने ठहर गरेको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको मिति २०७३।११।२२ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - विकाशकुमार राजक

कम्प्युटर - सरस्वती दाहाल

इति संवत् २०७८ असोज ६ गते रोज ४ शुभम् ।

११

मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७८-WH-०१७२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, भतिज बविन सिंह वि. उच्च अदालत दिपायलसमेत

निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने हो वा होइन भन्ने मूल प्रश्न रहेको देखिन्छ । बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुनका लागि निवेदकलाई कानूनबमोजिम बाहेक थुनामा राखेको हुनुपर्छ अर्थात् थुना गैरकानूनी छ भन्ने देखिनु आवश्यक हुन्छ । नियमित न्यायिक प्रक्रियाअन्तर्गत साधिकार अदालतबाट भएको आदेशको परिणामस्वरूप मुद्दामा पुर्पक्षका लागि थुनामा राखिएको कुरालाई सामान्यतया: गैरकानूनी थुना भनी मान्न मिल्ने हुँदैन । आपराधिक विश्वासघातसम्बन्धी कसुर मुद्दामा वादी नेपाल सरकारसमेतको तर्फबाट उच्च अदालत दिपायलमा परेको निवेदनका आधारमा मिति २०७८।०५।०९ मा प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी मुद्दामा पुर्पक्षका लागि निवेदक खड्कबहादुर सिंहलाई थुनामा राख्ने गरी आदेश भएको देखिन्छ । सो मुद्दाको वादी नेपाल सरकार र प्रतिवादी खड्कबहादुर सिंहसमेत

रहेको कुरामा विवाद छैन । यस अवस्थामा मुद्दाको पक्षको रूपमा रहेको प्रतिवादी खड्कबहादुर सिंहलाई विपक्षी बनाई नेपाल सरकारले मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ७३ बमोजिम दिएको निवेदन मागबमोजिम निवेदकलाई थुनामा राख्ने आदेश भएको देखियो । साधिकार निकायबाट आफ्नो अधिकार क्षेत्रान्तर्गत पर्न आएको निवेदन सुनी आफ्नो अख्तियारीभित्र रही निवेदकलाई थुनामा राख्ने गरी भएको आदेशका सम्बन्धमा यस अदालतबाट असाधारण अधिकार क्षेत्रान्तर्गत बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेशद्वारा हस्तक्षेप गर्नु सामान्यतया रिटसम्बन्धी सिद्धान्तानुकूल हुँदैन । त्यसरी हस्तक्षेप गरेको अवस्थामा रिट क्षेत्र पुनरावेदन वा पुनरावलोकनको वैकल्पिक स्वरूपमा परिवर्तन हुन जान्छ र यसले निर्णयको अन्तिमताको सिद्धान्त (Doctrine of Finality of Judgement) मा समेत असर पर्छ । अतः उच्च अदालतले आफ्नो क्षेत्राधिकारान्तर्गत थुनामा राखेको अवस्थामा निवेदकलाई गैरकानूनी रूपमा बन्दी बनाएको भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुनेसम्मको पर्याप्त आधार र कारण नदेखिने ।

उच्च अदालत दिपायलबाट आदेश भएको मिति २०७८।८।१६ सम्म उक्त आदेशको पूर्ण पाठ तयार भई सबै अदालतहरूले जानकारी प्राप्त गरिसकेको भन्ने देखिन नआएको एवम् आदेशमा उल्लिखित निर्देशनबमोजिम नियमावली संसोधनसमेत नभइसकेको अवस्थामा साबिकबमोजिमको अभ्यास एवम् कार्यविधि अवलम्बन गरी यी निवेदकलाई कुनै सूचना नदिई भएको आदेशलाई बाध्यात्मक रूपमा पालना गर्नुपर्ने कार्यविधि पालना नगरेको वा प्रचलित कानूनप्रतिकूल रहेको भन्न मिल्ने अवस्था नहुँदा त्यस्तो आदेशलाई असाधारण अधिकारक्षेत्र ग्रहण गरी बदर गर्न मिल्ने भएन । अतः निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान नदेखिँदा निवेदन

खारेज हुने । उपर्युक्तबमोजिम प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने भए तापनि यस अदालतबाट मिति २०७८।१०।१४ गते भएको निर्देशनात्मक आदेश सम्बन्धमा आवश्यक पहल गर्नेतर्फ सो आदेशमा उल्लिखित अदालत तथा पदाधिकारीको पुनः ध्यानाकर्षण गर्नुका साथै निवेदकउपर चलेको मुद्दा यथाशीघ्र पेसी चढाई किनारा लगाउनु भनी सम्बन्धित बझाङ जिल्ला अदालतलाई निर्देशनात्मक आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत :- कल्याण खड्का, ओजा लामिछाने
कम्प्युटर :- विजय खड्का
इति संवत् २०७९ साल वैशाख १४ गते रोज ४ शुभम् ।

१२

मा.न्या.श्री सुष्मालता माथेमा र मा.न्या.श्री नहकुल सुवेदी, ०७७-RB-०३००, बैकिङ्ग कसुर, दिपकराज न्यौपाने वि. नेपाल सरकार

अनुसन्धानको क्रममा र अदालतमा प्रतिवादी दिपकराज न्यौपानेले जाहेरवालाले जुत्ताको होलसेलको व्यापार गर्ने भएको हुँदा निजसँग जुत्ता खरिद गरिलिएको थिएँ । जाहेरवालाले सामान दिने क्रममा ग्यारेन्टीका लागि चेक मागेको हुनाले मैले चेकमा सही गरी चेक दिँदा नै खातामा रकम छैन भनी जाहेरवालालाई जानकारी गराएको थिएँ भनी गरेको बयान बेहोराबाट प्रतिवादीले आफ्नो खातामा रकम नरहेको अवस्थामा जानी जानी चेक काटिदिएको तथ्यलाई स्वीकार गरेको देखियो । जाहेरवालाले पेस गरेको चेकमा उल्लेख भएको मितिमा प्रतिवादी दिपकराज न्यौपानेको नाममा रहेको खातामा पर्याप्त रकम नभएको र खाता निष्क्रियसमेत भएको कारण जाहेरवालाले चेकमा उल्लेख भएको रकम भुक्तानी पाउन नसकेको भन्ने नेपाल इन्भेस्टमेन्ट बैंक लिमिटेडको पत्र तथा स्टेटमेन्टसमेत देखिने ।

मैले अभियोग माग दाबीबमोजिमको कुनै अपराध नगरेको, अपराध गर्ने मनसाय र उद्देश्यसमेत नरहेको भन्ने जिकिरलाई पुष्ट्याई गर्ने प्रतिवादीबाट

इजलास नं.६

१३

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०८०-RC-००३६, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. अजोध्या भन्ने दोदलाल थारू

मृतक जयराम थारूको लासको निधारमा ३/४ पटक धारिलो हतियार प्रहार गरी ५ इन्च लम्बाइ २.५ इन्च चौडाइ भएको काटिएको घाउ खत रहेको, चिउँडोमा १ इन्चको लम्बाइ भएको अर्को कटिएको घाउ र नाकको डाँडीमा पनि काटिएको निधारको दाहिनेतर्फ २ ठाउँमा सानो प्वाल परेको, घाउ चोटका कारण बायाँ आँखा फुटेको, मृतकको बायाँतर्फ टाउकोदेखि कुमको भागसम्म रगतको खाल सुकेको अवस्थामा रहेको भन्ने घटनास्थल लास जाँच मुचुल्काबाट देखिने।

बरामदी र खानतलासी मुचुल्का हेर्दा प्रतिवादी सुत्ने गरेको खाटदेखि उत्तरतर्फ कोठाकोबिच भागमा पूर्व-पश्चिम भई लहरैसँग ३ वटा धान राख्ने माटोको डेहरी रहेको, उक्त डेहरीमध्ये पश्चिमतर्फ भित्तासँग सटेर रहेको डेहरीको ढक्कनमाथि पश्चिम टुप्पोको भाग र पूर्व बिँडको भाग भई १६ इन्च लम्बाइ काठको भाग, ७.२ इन्च लम्बाइ र २ इन्च चौडाई फलामको भाग, ७ इन्च गोलाई काठको टुप्पोतर्फको भाग र ५ इन्च गोलाई काठको बिँड भएको धारिलो हतियार गरसा थान १(एक) फेला पारी बरामद गरेको भन्ने देखिने।

मिसिल सामेल मृतक जयराम थारूको शव परीक्षण प्रतिवेदनमा Severe Head Injury र Opinion on probable type of objects or weapon causing injuries मा heavy object with sharp end भन्ने उल्लेख भएको देखिने।

प्रतिवादीले अदालतमा गरेको बयान हेर्दा वारदात मिति २०७६।०३।०४ गते हामीहरूले सँगै रक्सी खाइरहेको बेलामा सामान्य झैझगडा भएको

विश्वासनीय एवं तथ्यपरक सबुद प्रमाण पेस हुन नसकेको। प्रतिवादीले आफ्नो खातामा रकम नभएको अवस्थामा भुक्तानी लिनु भनी जाहेरवाला कर्णबहादुर श्रेष्ठलाई चेक जारी गरेको कुरालाई स्वीकार गरी गरेको बयान तथा जाहेरवालाको नाउँमा काटिएको चेकमा उल्लेख भएको रकम भुक्तानी हुन नसकेको भन्ने बैंकको पत्र र स्टेटमेन्टसमेतबाट प्रतिवादी दिपकराज न्यौपानेबाट अभियोग मागदाबीबमोजिमको कसुर अपराध भए गरेको भन्ने देखिने।

प्रतिवादीको बयान बेहोरा तथा निजको खातामा चेकलाई खाम्ने पर्याप्त रकम नभएको कारण चेक सटही हुन नसकेको भन्ने बैंकको पत्रसमेतबाट अभियोग माग दाबीबमोजिमको कसुर अपराध यी पुनरावेदक प्रतिवादीबाट भएगरेको भन्ने देखिँदा अभियोग दाबीबमोजिम कसुरबाट सफाई पाउँ भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर तथा निजको विद्वान् कानून व्यवसायीको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

यी पुनरावेदक प्रतिवादी दिपकराज न्यौपानेले बैंकिङ्ग कसुर तथा सजाय ऐन, २०६४ को दफा ३(ग) विपरीत कसुर गरेकाले निजलाई सोही ऐनको दफा १५(१) बमोजिम २ (दुई) दिन कैद सजाय, रु.४,९५,२६५/- (चार लाख पञ्चानब्बे हजार दुई सय पैँसठ्ठी) जरिवाना र जाहेरवालाले बिगोबमोजिमको रकम प्रतिवादीबाट भराइलिन पाउने साथै अपराध पीडित संरक्षण ऐन, २०७५ को दफा ४१(३) बमोजिम जरिवाना रकमको ४% ले हुन आउने रु.१९,८१०/०६ (उन्नाइस हजार आठ सय दश रूपियाँ छ पैँसा) प्रतिवादीले क्षतिपूर्ति शुल्कबापत बेहोर्नुपर्ने ठहर्‍याएको उच्च अदालत, पाटनबाट मिति २०७६/११/०४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : ऋतु राई

कम्प्युटर : शंकर गुरुङ

इति संवत् २०७९ साल मङ्सिर ७ गते रोज ४ शुभम्।

थियो । सोही रक्सी खाएको तालमा मृतकले मलाई गाली गलौज गरी १/२ पटक गालामा झापड हानेका थिए । सोही कारणले मैले पनि सहन नसकी मृतक रक्सी खाएर आफ्नो घरमा गई सुतेको अवस्थामा म पनि निजको घरमा गई मेरो घरबाट लगेको धारिलो हतियार गरसा र बाँसको डन्डा लिई मृतक घर आँगनमा सुतिरहेकोमा मैले मृतकको टाउको तथा शरीरका अन्य भागमा हानेर भागेको हुँ भनी आरोपित कसुर स्वीकार गरी अदालतमा समेत बयान गरेको देखिन्छ । यसरी प्रतिवादीले मौका र अदालतसमक्ष बयान गर्दासमेत मृतक जयराम थारूलाई धारिलो हतियार गरसा र लाठीले हानी मारेको तथ्य स्वीकार गरेको देखिने ।

प्रतिवादी अजोध्या भन्ने दोदलाल थारूलाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा १७७(१) बमोजिमको कसुर गरेकोले ऐ. संहिताको दफा १७७(२) बमोजिम जन्मकैद हुने र पीडित परिवारले प्रतिवादीबाट ऐ. संहिताको दफा १८६ नं. बमोजिम रु.१,००,०००।- (एक लाख) क्षतिपूर्ति भराइपाउने ठहर्‍याएको सुरु बर्दिया जिल्ला अदालतको फैसला सदर ठहर्‍याई उच्च अदालत तुलसीपुर, नेपालगन्ज इजलासबाट मिति २०७७।१२।१७ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा साधक सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल फागुन १० गते रोज ५ शुभम् ।

१४

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०८०-RC-००३३, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. कुमार नेपाली

मिति २०७७।०३।०९ गते दिउँसो अं.१४:०० बजेको समयमा प्रतिवादी कुमार नेपालीले मेरो ४ वर्षीया छोरी परिवर्तित नाम ०७६/०७७ भानु १२ लाई बोलाई आफ्नो घरभित्र लगी सुताइ छोरीले लगाएको सुरुवाल र आफूले लगाएको कपडा खोली

आफ्नो लिङ्ग छोरीलाई देखाइ छोरीको योनिमा हातले छोई चलाई रातो हुने गरी योनिमा चोट पुर्‍याएको हुँदा निज प्रतिवादीलाई कानूनबमोजिम कारबाही गरी मनासिब क्षतिपूर्ति दिलाई भराइपाउँ भनी प्रतिवादीउपर परिवर्तित नाम २०७६/०७७ अ कुमारीले किटानी जाहेरी दिई सो जाहेरीलाई समर्थन गरी सुरु अदालतमा बकपत्रसमेत गरिदिएको देखिने ।

पीडित परिवर्तित नाम ०७६/०७७ भानु १२ को स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन हेर्दा perineum:- mild congestion present, Vulva:- mild congestion present, Vagina: mild congestion present, अर्थात् Vulva, perineum र Vagina को भागमा हल्का रगत जमेको, Hymen:- Tear at ६ o'clock Position, अर्थात् कन्याजाली ६ बजेको लाइनमा च्यातिएको अवस्थामा रहेको भन्ने उल्लेख भएको देखिने ।

प्रतिवादीले अदालतमा बयान गर्दा उक्त मिति २०७७।०३।०९ गते दिउँसो म मेरे घरको पिँढीमा घोप्टो परी सुती आराम गरिरहेको थिएँ । सोही बखत पीडित पनि मेरो घरमा आई मेरो ढाडमा बसेकी थिइन् र पछि निजले पिसाब लाग्यो भनेकी हुँदा निज पीडितको सुरुवालसम्म खोलिदिएको हुँ अभियोगमा उल्लिखित कुनै पनि कार्य गरेको छैन भनी आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको भए तापनि निज प्रतिवादीले वारदात मिति समयमा पीडित बालिका आफ्नो घरमा आएको र आफूले पीडितको सुरुवाल खोलेकोसम्मको तथ्यलाई स्वीकार नै गरेको देखियो । प्रतिवादीले अदालतमा कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिए तापनि मौकामा गरेको साबिती बयानलाई अन्यथा हुने गरी कुनै प्रमाण पेस गर्न सकेको बेहोरा मिसिलबाट पुष्टि हुन आएको नदेखिएकाले प्रतिवादीले अदालतसमक्ष गरेको इन्कारी बयानलाई विश्वसनीय मान्न सकिने नदेखिने ।

प्रतिवादी कुमार नेपालीले पीडित बालिकाको

योनिभिन्न आफ्नो आँला प्रवेश गराई मुलुकी अपराध संहिता २०७४ को दफा २१९(१)(२) र स्पष्टीकरण खण्डको (ग) बमोजिमको कसुर गरेको र प्रतिवादीको उक्त कार्य जबरजस्ती करणीअन्तर्गतको कसुर गरेको मानिने भएकाले प्रतिवादीकुमार नेपालीले अभियोग दाबीबमोजिम कसुर गरेको ठहर गरी निज प्रतिवादीलाई मुलुकी अपराध संहिता २०७४ को दफा २१९ (३)(क) बमोजिम जन्म कैदको सजाय हुने साथै पीडितलाई पुनर्गएको क्षतिसमेतलाई मध्यनजर राखी प्रतिवादीबाट पीडितले रु.५०,०००।- क्षतिपूर्तिसमेत भराइलिन पाउने ठहर गरी सुरु तनहुँ जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत पोखराबाट मिति २०७९।०२।२३ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल फागुन १० गते रोज ५ शुभम्।

१५

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री मनोजकुमार शर्मा, ०८०-RC-००३०, मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार, नेपाल सरकार वि. नन्दे कामीसमेत

केशव बि.क.ले मलाई विवाहको बहानामा भारतमा लगी कोठी (वेश्यालय) मा बेचेको हो। नन्दे कामी केशव बि.क.को दाजु भएको हुँदा दुःख कष्ट भएमा म जिम्मेवार छु भनी केशव बि.क.सँगै मलाई भारत पठाउने काम गरेको हो भन्ने बेहोरा कैलाली जिल्ला अदालतबाट प्रमाणित पीडितको बयान कागजमा उल्लेख भएको देखिन्छ। यसबाट पीडितलाई यी प्रतिवादीहरूले भारतमा लगी वेश्यालयमा बिक्री गरेको तथ्य पुष्टि हुने।

प्रतिवादीहरू केशव वि.क. र नन्दे कामी सुरु देखि नै फरार रही निजहरूको नाउँमा अदालतबाट जारी भएको सूचना म्यादसमेत निज प्रतिवादीहरूको घरदैलोमा टाँस भई तामेल भएकोमा

समेत निज प्रतिवादीहरू अदालतमा उपस्थित भई आफूउपरको आरोपको खण्डन गर्न सकेको देखिँदैन। पीडितको किटानी जाहेरी र सो समर्थन हुने गरी जिल्ला अदालतसमक्ष गरेको प्रमाणित बयानबाट यी प्रतिवादीहरूले योजनाबद्ध ढङ्गले विवाहको नाटक मञ्चन गरी नेपालमा केही समय सँगसाथमा राखी भारतको इलाहावाद स्थित वेश्यालयमा बिक्री गरी पीडितले १० महिना त्यहाँ नारकीय जीवन बिताएको भन्ने देखिन्छ। मानव बेचबिखन तथा ओसार पसार मानव अस्मिता र आत्मसम्मानमाथि नै गहिरो चोट पुऱ्याउने बर्बर ढंगको अपराध भएको र यस्तो कसुर गरेको भनी कुनै व्यक्तिलाई अभियोग लागेकोमा सो कसुर गरेको छैन भन्ने कुराको प्रमाण निज व्यक्तिले नै पुऱ्याउनुपर्ने भन्ने मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ९ को व्यवस्थाबमोजिम अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर यी प्रतिवादीहरू केशव वि.क. र नन्दे कामीले नगरेको भए सो कुराको प्रमाण निज प्रतिवादीहरूले नै पुऱ्याउनुपर्नेमा सो काम प्रतिवादीहरूबाट भएको नदेखिने।

प्रतिवादीहरू केशव वि.क. र नन्दे कामीलाई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४ (२)(क) को कसुरमा ऐ.को दफा १५ (१)(क) बमोजिम जनही बिस वर्ष कैद र दुई लाख रुपैयाँ जरिवाना गरेको हदसम्म सुरु फैसला सदर गरी प्रतिवादीहरूबाट जनही पचास हजार रुपियाँका दरले पीडितले क्षतिपूर्तिसमेत भराइपाउने ठहर गरेको हदसम्म सुरु फैसला केही उल्टी गरी मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १७(१क) तथा अपराध पीडित संरक्षण ऐन, २०७५ को दफा १९, ३०, ४७ समेतबमोजिम रु.१,००,०००।- पीडित राहतकोषबाट पीडित परिवर्तित नाम ७१ शिक्षालाई क्षतिपूर्ति रकम भराइदिने ठहर्‍याई उच्च अदालत दिपायलबाट मिति २०७९।१२।१५ मा

भएको फैसला मिलेको देखिँदा साधक सदर हुने ।
इजलास अधिकृत :- टीकाबहादुर थापा
कम्प्युटर :- पुजा कंडेल
इति संवत् २०८० साल फागुन १० गते रोज ५ शुभम् ।

१६

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७४-CR-१३८२, ०७४-CR-१६२५, सरकारी छाप र दस्तखत कित्ते, नेपाल सरकार वि. श्याम पुडासैनीसमेत, उपेन्द्रदास जोशी वि. नेपाल सरकार

प्रस्तुत मुद्दामा मुख्य अभियुक्त रहेका प्रतिवादी अरविन्ददास जोशीउपरको कसुर र अभियोग दाबी पुष्टि हुन नसकी निजले सफाइ पाउने देखिएको अवस्थामा निजलाई कित्ते गर्ने कार्यमा सघाएकाले मतियार कायम गरिएका अन्य प्रतिवादीहरूले मतियारको भूमिका निर्वाह गरेको भन्ने कसुरसमेत पुष्टि हुन सक्ने देखिएन । त्यसै गरी कुनै जग्गाको सम्पूर्ण कागजातहरू ठिक रहेको तथा मालपोत कार्यालयबाटसमेत सबै कुरा भरपर्दो रहेको ठानी तोकिएको रकम बुझाएर राजीनामामार्फत जग्गा खरिद बिक्री गरिने हुँदा उक्त खरिद बिक्री गरेको कार्य सही हो भनी साक्षी बसेकै आधारमा मालपोत कार्यालय भक्तपुरमा रहेको स्त्रेस्तामा कित्ते गरेको भनी प्रतिवादीहरू तुलसीमाया जोशी, अरविन्द दास, अरुणदास जोशी र गणेशप्रसाद फुयालउपरको अभियोग दाबीसमेत पुष्टि हुन नसक्ने ।

अब मालपोत कार्यालय भक्तपुरका कर्मचारीहरू लोकनाथ भुषाल, मोहनबहादुर थापा, शान्ती बोगटी, थमप्रसाद श्रेष्ठ, धनबहादुर कटुवाल, शिवजीप्रसाद रेग्मी र राजेन्द्र काफ्लेसमेतका कर्मचारीहरूको हकमा हेर्दा निजहरूले राष्ट्रसेवक कर्मचारीको हैसियतमा रही कार्यालयको कार्यसम्पादन गरेको देखिन्छ । जग्गा दर्ता नामसारीसम्बन्धी विषयमा नागरिकतालगायतका आवश्यक कागजातसहित कानूनबमोजिमको सेवा पाउनका लागि निवेदन पेस

गरेको स्थितिमा मालपोत कार्यालयका अधिकृत तथा कर्मचारी भएको हैसियतले सेवा प्रदान गर्नुपर्ने हुन्छ । यसैक्रममा आवश्यक कागजात यकिन गरी कर्मचारीले तोक आदेश दिने र सोअनुसार मालपोत कार्यालयमा रहेको स्त्रेस्ताको आधारमा मोठ भिडे नभिडेको यकिन प्रमाणित भई आएपछि गरिएको टिप्पणीलगायतको काम कारबाही गर्न सक्ने नै हुन्छ । यसरी मालपोत ऐनलगायत अन्य प्रचलित कानूनको आधारमा निज कर्मचारीहरूले आफ्नो पदीय कर्तव्य पालनको सिलसिलामा नामसारी दर्ता निर्णय गरेको देखिएको र मिलेमतो गरी कित्ते गरेको भन्ने आरोप वस्तुनिष्ठ ढंगबाट पुष्टि हुन नसकेको देखिँदा लोकनाथ भुषाल, मोहनबहादुर थापा, शान्ती बोगटी, थमप्रसाद श्रेष्ठ, धनबहादुर कटुवाल, शिवजीप्रसाद रेग्मी र राजेन्द्र काफ्लेसमेतका कर्मचारीहरूलेसमेत आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहरी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला सो हदसम्म बदर गरियोस् भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर मनासिब नदेखिने ।

प्रतिवादी शिवनारायण श्रेष्ठको हकमा हेर्दा निज काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. २७ को सचिव रहेको देखिन्छ । निजलाई प्रतिवादी उपेन्द्रदास जोशीले विवादित जग्गा आफ्नो पिताको नामको रहेको र हाल उक्त जग्गा आफ्नो नाममा नामसारी गर्न भनी मालपोत कार्यालय भक्तपुरको नाममा सिफारिस गरिपाउन पिताको मृत्युदर्ता प्रमाण पत्र, नाता प्रमाणित कागजात, नागरिकता, जग्गाधनी प्रमाण पुर्जाको प्रतिलिपिलगायतका कागजातहरू संलग्न गरी निवेदन दिएको र प्रतिवादी शिवनारायण श्रेष्ठले उक्त सिफारिस बनाइदिएको भन्ने देखिन्छ । तसर्थ प्रस्तुत मुद्दामा मुख्य अभियुक्त रहेका प्रतिवादी उपेन्द्रदास जोशीले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाएको र प्रतिवादी शिवनारायण श्रेष्ठले सरकारी छाप र दस्तखत कित्ते गर्ने कार्यमा सहयोग गरेकोसमेत पुष्टि नभएको

अवस्थामा प्रतिवादी शिवनारायण श्रेष्ठलाई अभियोग दाबी तथा पुनरावेदन जिकिरबमोजिम कसुरदार कायम गरिरहनुपर्ने अवस्था नदेखिँदा निजको हकमा समेत उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेको देखिने ।

प्रतिवादीहरू भिमसेन काफ्ले, राजन बुढाथोकी, सानुमैया बुढाथोकी र श्याम पुडासैनीले सबै कागजातहरूले विवादित जग्गा ठिक रहेको पुष्टि गरेको देखी उक्त जग्गा राजीनामाबाट खरिद गरी लिएकोसम्म देखिएको तर सरकारी छाप र दस्तखत कित्तैको कसुरमा कुनै संलग्नता नदेखिँदा निजहरूलेसमेत सफाइ पाउने ठहर गरी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेको देखियो । त्यसै गरी प्रतिवादी दिनेशकुमार कार्की र प्रतिवादी रुपेस न्यौपानेको हकमा हेर्दा निजहरू प्रतिवादी गणेशप्रसाद फुयालका गाउँका चिनजानका मानिसहरू रहेको र मालपोत कार्यालयमा उपस्थित भएको तथा जग्गा खरिद गरी लिने दिने कार्यमा साक्षीसम्म बसेको देखिन्छ । सोबाहेक निजहरूले सरकारी छाप र दस्तखत कित्तै गरेको भन्ने कुरा मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट नदेखिएको हुँदा निजहरूलेसमेत आरोपित कसुरबाट सफाइ पाउने ठहरी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसलासमेत मिलेको देखिने ।

विवादित जग्गाको अप्रमाणित स्नेस्तालाई प्रमाणित गर्दा मिति २०२८।०५।०२ मा भएको सहीछाप कित्तै रहेको देखिएको र सो समयमा कोबाट सो कित्तैको कसुर भएको हो भन्ने अनुसन्धानबाट ठोस रूपमा खुल्न नआएको र प्रस्तुत मुद्दाका प्रतिवादीहरूको संलग्नतामा उक्त कित्तैको कार्य भएको कुरा वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेको हुँदा प्रतिवादी उपेन्द्रदास जोशी, तुलसीमाया जोशी, अरुणदास जोशी, अरविन्ददास जोशी, गणेशप्रसाद फुयाल, प्रतिवादीहरू मालपोतका तत्कालीन कार्यालय प्रमुख लोकनाथ भुसाल, शाखा अधिकृत मोहनबहादुर

थापा, ना.सु. शान्ति बोगटी, थमप्रसाद श्रेष्ठ, धनबहादुर कटुवाल, शिवजीप्रसाद रेग्मी, नापी सर्वेक्षक राजेन्द्र काफ्ले तथा अन्य प्रतिवादीहरू शिवनारायण श्रेष्ठ, भिमसेन काफ्ले, राजन बुढाथोकी, सानुमैया बुढाथोकी, श्याम पुडासैनी, रुपेस न्यौपाने र दिनेश कार्कीसमेतले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर गरी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०४।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा / रंजना विश्वकर्मा

कम्प्युटर : सन्जय गुरुङ

इति संवत् २०७९ फाल्गुन ०५ गते रोज ६ शुभम् ।

१७

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०६८-WO-०७६२, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, बुद्धिवीर महर्जनसमेत वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग, टंगाल, काठमाडौंसमेत

अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगमा काठमाडौं जिल्ला, साङ्गला गा.वि.स. वडा नं.९ स्थित करिब १७ रोपनी जग्गामा गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालयबाट मोही कायम गर्न लागेको भन्नेसमेत विषयको उजुरी परी उक्त उजुरीको आधारमा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट साङ्गला गा.वि.स. वडा नं.९(झ) कि.नं. ११,१२ र १३ का जग्गा साबिक नापीको फिल्डबुकमा क्रमशः खोल्सो बगर भनी नाप नक्सा भएको र नेपाल सरकारको नाममा दर्ता प्रमाणितसमेत भएको देखिएकोमा गुठी संस्थानका गुठी प्रशासकबाट मिति २०६७/०४/०५ मा उल्लिखित कि.नं. ११,१२,१३,१२३ र १२४ को जग्गाहरूलाई नरदेवी स्वेतकालीका सुनछाना गुठीको नाममा दर्ता गराई पुर्जा झिकाउने र कि.नं. १२३ र १२४ को जग्गा नेपाल सरकारको नाममा दर्ता भएका हुँदा गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा ३९(२) को प्रयोजनको लागि नेपाल सरकार, भूमि सुधार तथा

व्यवस्था मन्त्रालयका नाममा म्याद दिने भनी गरेको निर्णय गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा ३९(१) को दुरुपयोग हुने गरी गलत मनसायबाट क्षेत्राधिकारभन्दा बाहिर गई सरकारी सार्वजनिक जग्गा गुठीका नाममा दर्ता गरी गुठीबाट कालान्तरमा मोहियानी हकको सिर्जना गर्ने गराउने उद्देश्यले गुठी प्रशासकबाट निर्णय भएको देखिएकोले अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग ऐन, २०४८ को दफा १२(ख) बमोजिम गुठी प्रशासकबाट मिति २०६७/०४/०५ मा गरेको निर्णयबाट उत्पन्न दुष्परिणाम सच्याउनको लागि गुठी संस्थानका केन्द्रीय कार्यालय, सञ्चालक समितिलाई लेखी सोको जानकारी आयोगलाई गराउन लेखी पठाउने र काठमाडौं जिल्ला, साङ्गला गा.वि.स. वडा नं.९(झ) कि.नं. ११,१२ र १३ का जग्गाको साबिक फिल्डबुकको बेहोराबाट सरकारी/सार्वजनिक प्रकृतिको देखिएकोले आवश्यक प्रक्रिया पूरा गरी नेपाल सरकारको नाममा दर्ता गरी जग्गाधनी प्रमाण पुर्जा जिल्ला प्रशासन कार्यालय काठमाडौंमा पठाई सोको जानकारी आयोगमा समेत गराउन मालपोत कार्यालय, काठमाडौंमा लेखी पठाउने भनी मिति २०६८/०४/१८ मा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट निर्णय भएको देखिने।

उक्त निर्णय कार्यान्वयन गर्ने सम्बन्धमा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगले गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालय डिल्लीबजार, काठमाडौंलाई मिति २०६८/०४/२३ मा पत्र पठाएको हुँदा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगको निर्णय र उक्त निर्णयसँग सम्बन्धित कामकारबाही बदर गर्न माग गरेर विवादित जग्गाका मोहीहरू भनिएका बुद्धिवीर महर्जनसमेतका निवेदकहरू यस अदालतमा रिट निवेदन लिई प्रवेश गरेको देखिन्छ। प्रस्तुत रिट निवेदनसँग सम्बन्धित जग्गाका विषयमा गुठी संस्थान केन्द्रीय कार्यालयसमेतको तर्फबाट यस अदालतमा ०६८-WO-०३८२ को निवेदनमा आज

यसै इजलासबाट फैसला भई गुठी प्रशासकले गुठीको घर जग्गा रैकरमा दर्ता भएको प्रमाणित भएको पाइएमा त्यस्तो जग्गालाई गुठी अन्तर्गत दर्ता गर्ने निर्णय गर्न सक्ने भए पनि सरकारी जग्गा गुठीमा दर्ता गर्न सक्ने भन्ने देखिएन। यसरी हेर्दा गुठी प्रशासकबाट मिति २०६७/०४/०५ मा भएको निर्णय गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा ३९(१) तथा मालपोत ऐन, २०३४ को दफा २४ अनुरूप नभई अनुचित देखिएको, अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग ऐन, २०४८ को दफा १२(ख) बमोजिम सार्वजनिक पद धारण गरेको व्यक्तिले गरेको अनुचित निर्णयबाट उत्पन्न दुष्परिणाम सच्याउन सक्ने अधिकार अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगलाई रहेको, गुठी संस्थान सार्वजनिक संस्थान रही सोका गुठी प्रशासक सार्वजनिक पद धारण गरेको व्यक्ति भएको र निजबाट अनुचित कार्य भएको देखिएको स्थितिमा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगले दुष्परिणाम सच्याउन लेखी पठाउन सक्ने नै देखिँदा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगको मिति २०६८/०४/१८ को निर्णय कानूनसम्मत भएको देखिएको भनी रिट निवेदन खारेज हुने ठहरी फैसला भएकाले प्रस्तुत रिट निवेदन पनि सोही विवादित कित्ताका जग्गाका सम्बन्धमा गुठी संस्थानबाट भएको निर्णय बदर गर्ने गरी अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट भएको निर्णय बदर गर्न माग गरिएकोमा सोही आधार र कारणबाट अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगको निर्णय बदर गरिरहनुपर्ने देखिएन। अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट भएको उक्त निर्णयउपर निवेदक विशेष अदालतमा पुनरावेदन गर्न जान सक्ने वैकल्पिक उपचारको बाटोसमेत हुँदाहुँदै रिट निवेदन दिएकाले निवेदकहरूको मागबमोजिम आदेश जारी गरिरहनुपर्नेसमेत नदेखिने।

गुठी संस्थानबाट भएको अनुचित निर्णयउपर परेको उजुरीमा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान

आयोगबाट अनुसन्धान भई अनुचित कार्य भएको देखिएको, सार्वजनिक पदाधिकारीबाट भएको अनुचित कार्यको दुष्परिणाम सच्याउने अधिकार अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगलाई रहे भएको साथै अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट भएको निर्णयमा पक्षहरूलाई चित्त नबुझेको खण्डमा विशेष अदालतमा पुनरावेदन दिन सक्ने वैकल्पिक उपचारको व्यवस्था रहेको देखिएकोले रिट निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिल्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा / रंजना विश्वकर्मा

कम्प्युटर : सन्जय गुरुङ

इति संवत् २०७९ फाल्गुन ५ गते रोज ६ शुभम् ।

१८

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०६७-८१-०७६२, निर्णय दर्ता बदर, छुट जग्गा नामसारी दर्तासमेत, उत्तरा उदास तुलाधर वि. अकलान्त ताम्राकारसमेत

विवादित कित्ता जग्गाका सम्बन्धमा मालपोत कार्यालय डिल्लीबजार, काठमाडौँबाट भएको निर्णय हेर्दा, मालपोत ऐन, २०३४ को दफा ७(२) बमोजिम उक्त विवादित कित्ता नं. का जग्गा यस कार्यालयको रेकर्डअनुसार साङ्गला गा.वि.स. वडा नं. ९(क) कि.नं. १२३ र १२४ साबिक तत्कालीन श्री ५ को सरकारको नाउँमा र ९(क) कि.नं. ११, १२, १३ क्रमशः खोल्सी बगर जनिएको देखिने साथै पुनरावेदक काठमाडौँ जिल्ला, काठमाडौँ महानगरपालिका वडा नं. १८ बस्ने खड्गसिद्धि भन्ने संघसिद्धि तुलाधर विरुद्ध गुठी संस्थानसमेत भएको २०६१ सालको दे.पु.नं. २६६।२४०५ को मुद्दामा पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६३।०४।२९ गते भएको फैसलाको ठहर खण्डमा उल्लिखित साङ्गला गा.वि.स. वडा नं. ९

मा कि.नं. ११, १२ र १३ तथा साङ्गला ९(क) कि.नं. १२३ र १२४ का जग्गाहरू सुनछाना स्वेतकालिका गुठीको भई हालसम्म एकै चक्लाको रहेको भनी उल्लेख भएको समेत देखिँदा निवेदकका मागबमोजिमको जग्गाहरू छुट जग्गा दर्ता सम्बन्धमा कारबाही बढाउन मनासिब नदेखिएको हुँदा तामेलीमा राखी दिने भनी मिति २०६५।०२।०९ मा निर्णय भएको देखिने ।

मालपोत कार्यालयबाट भएको उक्त निर्णयमिले नमिलेको सम्बन्धमा विचार गर्दा, उल्लिखित विवादित भनिएका ५ कित्ता जग्गाको सम्बन्धमा पुनरावेदन अदालत पाटनले २०६१ दे.पु.नं.२०६६/२४०५ को मुद्दामा मिति २०६३।०४।२९ मा फैसला गर्दा सन्दर्भविहीन अवस्थामा अनावश्यक रूपमा कि.नं. ११, १२, १३, १२३ र १२४ का पाँच कित्ता जग्गाहरू जम्मा क्षेत्रफल १७-३-३-० एकै चक्लाको सुनछाना श्वेतकाली गुठीको भनी लेखिएको आधारमा रैकरतर्फ कारबाही गर्न नपर्ने भनी मालपोत कार्यालय काठमाडौँबाट निर्णय भएको देखिन्छ । मालपोत कार्यालयको निर्णयमा उक्त जग्गाहरू खोल्सा बगर भएको भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । विवादित जग्गाको फिल्डबुक उतार हेर्दा, साङ्गला गा.वि.स. वडा नं.९(झ) कि.नं.११ क्षेत्रफल १-८-०-० जोताहा खोल्सो, ऐ.ऐ. कि.नं.१२ क्षेत्रफल ६-१०-०-० जोताहा बगर, ऐ.ऐ. कि.नं. १३ क्षेत्रफल २-१०-०-० जोताहा बगर, ऐ. वडा नं.९(क) कि.नं.१२३ क्षेत्रफल ३-०-०-० जोताहा बगर, ऐ. ९(ख) कि.नं.१२४ क्षेत्रफल ३-७-३-० जोताहा बगर भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । अन्य व्यक्तिहरूको समेत दाबी रहेको यी जग्गाहरूको सम्बन्धमा फिल्डबुकमा रहेको यी तथ्यहरूसँगै मिसिल संलग्न प्रमाण कागजहरूबाट उल्लिखित कि.नं.१२३ र १२४ का जग्गाहरू तत्कालीन श्री ५ को सरकारको नाममा मोठ कायम रहेको र कि.नं.११, १२, १३ का जग्गाहरू खोल्सा र बगर भनी जनिएको देखिने ।

यिनै विवादित कित्ता जग्गाका सम्बन्धमा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट गुठी प्रशासकबाट भएको निर्णयको दुस्परिणाम सच्याउने भन्दै गैरकानूनी निर्णय गरेको हुँदा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट मिति २०६८।०४।१८ को त्रुटिपूर्ण निर्णय उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरी गुठी संस्थानबाट मिति २०६७।०४।१५ मा भएको निर्णय कायम राख्नु भनी परमादेशको आदेशसमेत जारी गरिपाउँ भन्ने गुठी संस्थानको रिट निवेदन ०६८-WO-०३८२ मा गुठी संस्थानका गुठी प्रशासकबाट मिति २०६७।०४।०५ मा विवादित कि.नं. ११,१२,१३,१२३ र १२४ को जग्गाहरूलाई नरदेवी स्वेतकालिका सुनछाना गुठीको नाममा दर्ता गराउने गरी भएको निर्णय बदर गर्ने अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगको मिति २०६८।०४।१८ को निर्णय र तदनुरूप गुठी संस्थानलाई भएको पत्राचार कानूनसम्मत भएको देखिई आजै यसै इजलासबाट रिट खारेज हुने ठहरी फैसला भएकोले प्रस्तुत मुद्दामा पनि सोही आधार र कारणबाट पुनरावेदक खड्गसिद्धि भन्ने संघसिद्धि तुलाधर परलोक भई निजको मु.स. गर्ने एकाघरकी पत्नी उत्तरा उदास तुलाधरको विवादित कित्ता जग्गाहरू नरदेवी स्वेतकालिका सुनछाना गुठीको नाममा दर्ता हुने जग्गा रहेको भन्ने जिकिर मनासिब नदेखिने ।

प्रस्तुत विवादमा मालपोत कार्यालय डिल्लीबजार, काठमाडौँबाट मिति २०६५।०२।०९ मा भएको तामेलीमा राख्ने निर्णय बदर गरी प्रस्तुत विवादमा हक बेहकतर्फ निर्णय गराई ल्याउनु भनी पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०६६।०९।०२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : टिकाबहादुर थापा / रंजना विश्वकर्मा

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७९ फाल्गुन ०५ गते रोज ६ शुभम् ।

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री कुमार चुडाल, ०७८-CI-०२९९, ०७८-CI-०३००, अनधिकृत निर्णय बदर गरी दर्ता हक कायम गरिपाउँ, श्याम पुडासैनीसमेत वि. काठमाडौँ जिल्ला, काठमाडौँ महानगरपालिका वडा नं.५ स्थित अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत, उपेन्द्रदास जोशी वि. काठमाडौँ जिल्ला, काठमाडौँ महानगरपालिका वडा नं.५ स्थित अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगसमेत

विवादित जग्गाहरू उपेन्द्रदास जोशीले रामदास जोशीको श्रीमती तुल्सीमाया, छोरा अरुणदास र अरविन्ददासको मन्जुरी लिई विवादित जग्गा मिति २०६५।०९।२७ मा आफ्नो नाममा नामसारी गरी श्याम पुडासैनी, सानुमैया वुढाथोकी, राजन बुढाथोकी, भीमसेन काफ्ले र गणेशप्रसाद फुयालसमेतलाई बिक्री वितरण गरेको देखिन्छ । यसरी विवादित जग्गाहरूको हक हस्तान्तरण तथा लिखत पारित गर्दा स्थानीय निकायको घर तथा बाटो विवरण खुलेको सिफारिस पेस नै नगरी हक हस्तान्तरण भएको पाइन्छ । सो विषयमा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट अनुसन्धान हुँदा अनुसन्धान अधिकृतको प्रतिवेदनमा नापी कार्यालयको प्राविधिक कर्मचारी र मालपोत कार्यालयको कर्मचारीले दिएको प्रतिवेदनको आधार लिएको भनी उल्लेख भएको पाइन्छ । अनुसन्धानमा खटिएका नापी कार्यालय भक्तपुरका कर्मचारीहरूले नापी नक्सा अनुसार उक्त जग्गाहरूमा घर नभएको तथा जग्गाधनीहरूले पनि घर नभएको भनी बताएका हुँदा मूल्याङ्कन प्रयोजनको लागि कच्ची बाटो उल्लेख गरिएको हो भनी प्रतिवेदनमा उल्लेख गरेको देखिन्छ । अनुसन्धानकै क्रममा गाउँ विकास समितिको कार्यालय कटुञ्जेबाट प्राप्त मिति २०६६।०३।२८ को पत्रमा कि.नं. ६७८ मा २ वटा र कि.नं. ६७७ मा ३ वटासमेत गरी ५ वटा घर भएको कुरा उल्लेख भएको

देखिन्छ । उक्त जग्गाका सम्बन्धमा गुठीको प्रश्नसमेत समावेश भएको मिसिल संलग्न कागजातबाट देखिन आउँछ । मालपोत कार्यालयबाट भएको निर्णय हुँदा गुठी सम्बन्धमा केही बुझ्नेको पनि नदेखिने ।

हक स्रोत प्रमाणको यथेष्ट र यथोचित मूल्याङ्कन नगरी विवादित जग्गाको दर्ता नामसारी निर्णय र सोको खरिद बिक्रीसमेत भएको देखिएको स्थितिमा सो निर्णय अनुचित भएको मान्नुपर्ने हुँदा यथास्थितिमा राख्नु भनी अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगले गरेको निर्णय मिले नमिलेको हेर्न अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग ऐन, २०४८ को दफा १२ख अन्तर्गत प्रयोग गर्न पाउने अधिकार क्षेत्रभित्र पर्न आउने हो, होइन भन्ने कुरा निकर्षाल गर्नुपर्ने देखिन्छ । अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग ऐन, २०४८ को दफा १२ख को कानूनी प्रावधान हेर्दा “सार्वजनिक पद धारण गरेको व्यक्तिले गरेको अनुचित कार्यबाट उत्पन्न दुष्परिणाम प्रचलित कानूनबमोजिम सच्याउनका लागि आयोगले सम्बन्धित अधिकारी वा निकायलाई लेखी पठाउन सक्ने छ” भनी उल्लेख भएको देखिन्छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाबाट सार्वजनिक पद धारण गरेको पदाधिकारीले गरेको अनुचित कार्यबाट सिर्जित दुष्परिणाम सच्याउन अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगलाई अधिकार रहेको देखिने ।

अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग ऐन, २०४८ को दफा २(घ) ले सार्वजनिक पद धारण गरेको व्यक्तिको परिभाषा गर्दै “प्रचलित कानूनबमोजिम कुनै सार्वजनिक अख्तियारी प्रयोग गर्न पाउने वा कुनै कर्तव्य पालन गर्नुपर्ने वा दायित्व निर्वाह गर्नुपर्ने पदमा बहाल रहेको व्यक्ति सार्वजनिक पद धारण गरेको व्यक्ति” भनी परिभाषा गरेको देखिन्छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाबमोजिम सार्वजनिक अख्तियारी वा दायित्व वा कर्तव्यको पालना गर्नुपर्ने पदमा रहेको व्यक्ति सार्वजनिक पद धारण गरेको व्यक्तिमा पर्ने भन्ने देखियो । प्रस्तुत विवादमा मालपोत कार्यालय

भक्तपुरबाट मिति २०६५।१०।२७ मा भएको निर्णयमा “सार्वजनिक पद धारण गरेको व्यक्ति” को कर्मचारीको संलग्नता देखिएकोले ती कर्मचारीहरूले गरेको निर्णय अनुचित देखिएमा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगले त्रुटि सच्याउन आवश्यक कार्य गर्न सक्ने नै देखिने ।

गोविन्ददासको नाममा दर्ता कायम भनी जनिएको स्रेस्ता एवम् सोसम्बन्धी मिति २०२८।०५।०२ को निर्णयमा समेत कित्ते भई दूषित देखिएको र सो दूषित निर्णयका आधारमा दर्तावाल भनिएका गोविन्ददासको मृत्यु भएकाले निजको हकदार छोरा उपेन्द्रदास जोशीका नाममा विवादित कित्ता जग्गाहरू नामसारी दर्ता गर्ने गरी भएको मालपोत कार्यालय भक्तपुरको मिति २०६५।१०।२७ को निर्णयसमेत दूषित देखियो । उक्त दूषित निर्णयका आधारमा कायम भएका जग्गाको बिक्री एवम् मालपोत कार्यालय भक्तपुरबाट भएका रजिस्ट्रेसन पारित गर्ने निर्णयसमेत दूषित देखिन आयो । अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगको मिति २०६६।०८।१९ को निर्णय उक्त आयोगलाई प्राप्त क्षेत्राधिकारभित्रै रही भएको देखिएको, दूषित वा अनुचित देखिएको निर्णयको दुष्परिणाम सच्याउन आवश्यक निर्णय गर्ने अधिकार अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगलाई भएको देखिएको स्थितिमा, मालपोत कार्यालय भक्तपुरको मिति २०६५।१०।२७ को निर्णय र सोबाट कायम जग्गाको पारित रजिस्ट्रेसनलाई बदर गरी यथास्थितिमा राख्ने अधिकार अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगलाई रहे भएकै देखियो । यसर्थ, प्रस्तुत मुद्दामा अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगले अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग ऐन, २०४८ को दफा १२ख बमोजिम विवादित जग्गाको दर्ता र लिखत अमान्य गरी यथास्थितिमा राख्न मालपोत कार्यालय भक्तपुरलाई दिएको निर्देशन आदेश नमिलेको भन्नेसमेत आधार लिई यस अदालतबाट भएको प्रत्यर्थी झिकाउने आदेश

एवम् अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट मिति २०६६।०८।१९ मा भएको निर्णय सदर हुने ठहर गरी विशेष अदालतबाट मिति २०६७।०८।२२ मा भएको फैसला त्रुटिपूर्ण रहेकाले बदर हुनुपर्छ भन्ने पुनरावेदकहरूका तर्फका विद्वान्हरूबाट प्रस्तुत बहस जिकिरसँगसमेत सहमत हुन नसकिने।

भक्तपुर जिल्ला, कटुञ्जे गाउँ विकास समिति वडा नं. १(ख) कि.नं. ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९ र ६८० का जग्गाहरूको हक प्रमाण देखाई आएका बखत निर्णय हुने नै हुँदा सो जग्गाहरूको दर्ता लिखत अमान्य गरी यथास्थितिमा राख्न मालपोत कार्यालय भक्तपुरलाई निर्देशन दिने गरी अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोगबाट मिति २०६६।०८।१९ मा भएको निर्णय सदर हुने ठहर गरी विशेष अदालत काठमाडौँबाट मिति २०६७।०८।२२ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा / रंजना विश्वकर्मा

कम्प्युटर : सन्जय गुरुङ

इति संवत् २०७९ साल फाल्गुन ५ गते रोज ६ शुभम्।

२०

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री नहकुल सुवेदी, ०८०-WH-०१७५, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, सिवानी जि.सी. (राजभण्डारी) समेत वि. श्री नेपाल सरकार, गृह मन्त्रालय, सिंहदरबार, काठमाडौँसमेत

प्रस्तुत निवेदनमा उठाइएको विषयवस्तुको स्थितिलाई हेर्दा निवेदकलाई पक्राउ गरिएकोमा विवाद नरहे पनि निवेदकहरू हाल थुनामा नरही अधिकार प्राप्त अधिकारीको आदेशबमोजिम धरौटी दाखिल गरी थुनामुक्त भइसकेको भन्ने देखिने।

यसप्रकार जुन उद्देश्यले निवेदन दायर भएको हो, उक्त उद्देश्य पूरा हुने गरी मिति २०८०।०८।२१ गते जिल्ला प्रशासन कार्यालय काठमाडौँबाट रु. १०/१० (दश/दश) हजार धरौटीमा निवेदकहरू थुनामुक्त भई

निजहरू हाल थुनामा रहेको नभई धरौटी राखी थुनामुक्त भइसकेको भन्ने निवेदकका कानून व्यावसायीबाट इजलाससमक्ष पेस भएको कागजातबाट देखिँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने आवश्यकता र औचित्य नै नभएकोले निवेदकहरूको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहनु परेन। रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत - हरिबहादुर चौधरी

कम्प्युटर :- पुजा कँडेल

इति संवत् २०८० साल मंसिर २४ गते रोज १ शुभम्।

२१

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री नहकुल सुवेदी, ०८०-WH-०१७४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, श्रीनिवास पण्डित आचार्यसमेत वि. जिल्ला प्रहरी परिसर टेकु, काठमाडौँसमेत

प्रस्तुत निवेदनमा उठाइएको विषयवस्तुको स्थितिलाई हेर्दा निवेदकलाई पक्राउ गरिएकोमा विवाद नरहे पनि निवेदकहरू हाल थुनामा नरही अधिकार प्राप्त अधिकारीको आदेशबमोजिम धरौटी दाखिल गरी थुनामुक्त भइसकेको भन्ने देखिने।

जुन उद्देश्यले निवेदन दायर भएको हो, उक्त उद्देश्य पूरा हुने गरी मिति २०८०।०८।२३ गते जिल्ला प्रशासन कार्यालय काठमाडौँबाट रु. १०/१० (दश/दश) हजार धरौटीमा निवेदकहरू थुनामुक्त भई निजहरू हाल थुनामा रहेको नभई धरौटी राखी थुनामुक्त भइसकेको भन्ने निवेदकको कानून व्यावसायीबाट इजलाससमक्ष पेस भएको कागजातबाट देखिँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने आवश्यकता र औचित्य नै नभएकोले निवेदकहरूको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहनु परेन। रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत - हरिबहादुर चौधरी

कम्प्युटर :- पुजा कँडेल

इति संवत् २०८० साल मंसिर २४ गते रोज १ शुभम्।

२२

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.डा.श्री नहकुल सुवेदी, ०७४-MS-०००१, अदालतको अवहेलना, मनराजा कोलाक्षपति वि. कृष्णराज तिवारीसमेत

प्रस्तुत निवेदनसंग सम्बन्धित विवादमा यिनै निवेदक र प्रत्यर्थीहरूबिचको विवाद समाधान गर्न नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को निर्णयले समिति गठन भएकोमा उक्त समितिले जग्गासम्बन्धी विवाद मिलाउँदै हेटौँडा क्याम्पसको शैक्षिक कार्यक्रम त्रि.वि.को हेटौँडा क्याम्पसले सञ्चालन गर्ने गरी प्रतिवेदन दिएको र सो प्रतिवेदनलाई नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्को २०७४।०१।०७ को बैठकले प्रतिवेदन कार्यान्वयन गर्ने निर्णय गरेको र उक्त प्रतिवेदन हेटौँडा क्याम्पसको शैक्षिक सत्र कार्यान्वयन गर्ने गरी दुवै विश्वविद्यालयका पदाधिकारीहरूको संयुक्त बैठकबाट निर्णयसमेत भएबमोजिम डिनको कार्यालयले विद्यार्थी भर्नाको लागि मिति २०७४।०२।२५ मा छनौट गरी पठाएअनुसार विद्यार्थी भर्ना गराएको भन्ने देखिएको अवस्थामा विवाद टुङ्गिसकेको देखिँदा यसलाई अदालतको आदेशको अवहेलनाको विषय मानिरहनुपर्ने नदेखिने।

अदालतको अवहेलना मुद्दा यस अदालतमा विचाराधीन रहिरहेको अवस्थामा अदालतको अवहेलनाको निवेदनमा उठाएको विषयमा निवेदक र अवहेलनाकर्ता भनिएका प्रत्यर्थीहरूबिच निवेदकले प्रस्तुत निवेदन दिनुअगावै सहमति भई विवाद टुङ्गिसकेको देखिन्छ। सोहीबमोजिम त्रि.वि.को उपकुलपतिको कार्यालयले च.नं.५६५/०७३-०७४ २८ जेष्ठ २०७४ मा श्रीमान् रजिस्ट्रार, कृषि तथा वन विज्ञान विश्वविद्यालय, रामपुर, चितवनलाई निर्णयको प्रतिलिपि पठाइएको भनी लेखेको पत्रको मिसिल संलग्न छायाप्रतिबाट देखिन्छ। उक्त पत्रमा “त्रिभुवन विश्वविद्यालय र कृषि तथा वन विज्ञान विश्वविद्यालयबिच देखिएका समस्या समाधानका लागि नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को मिति २०७४।०१।०७

को बैठकले निर्णय गरी कार्यान्वयनका लागि नेपाल सरकार शिक्षा मन्त्रालयबाट मिति २०७४।०१।२५ को पत्रसाथ संलग्न नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को निर्णय र प्रतिवेदनमा उल्लिखित कुराहरू कार्यान्वयन गर्नका लागि दुवै विश्वविद्यालयका पदाधिकारीहरूको संयुक्त बैठक, उक्त बैठकको मिति २०७४।०२।०२ गरेको निर्णय अनुसार त्रिभुवन विश्वविद्यालयका रजिष्ट्रारज्यूको संयोजकत्वमा गठित समितिले मिति २०७४।०२।२९ मा पेस गरेको प्रतिवेदनका आधारमा नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्को मिति २०७४।०१।०७ को निर्णय कार्यान्वयन गर्ने सम्बन्धमा भएका निर्णयहरूको प्रतिलिपि यसैसाथ संलग्न गरी पठाइएको बेहोरा निर्देशनानुसार अनुरोध गरिन्छ भन्नेसमेतको निर्णय बेहोरासमेत उल्लेख गरिएको र दुवै विश्वविद्यालयका वर्तमान र निवर्तमान पदाधिकारीहरूको मिति २०७४।०२।०२ को संयुक्त बैठकको माइन्च्युटमा विवाद समाधान भइसकेको बेहोरा उल्लेख भएबाट विवाद बाँकी नरहेको र सोबाट निवेदनको औचित्यसमेत समाप्त भइसकेको देखिँदा निवेदन दाबी नपुग्ने।

त्रिभुवन विश्वविद्यालय वन विज्ञान अध्ययन संस्थान, डिनको कार्यालय, पोखरासमेतलाई अदालतको अवहेलनाको कसुरमा सजाय गरिपाउँ भन्ने निवेदन दाबी पुग्न सक्दैन। प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने।
इजलास अधिकृत : रंजना विश्वकर्मा
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०८० साल जेठ ३ गते रोज ४ शुभम्।

२३

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७६-CR-००३९, जबरजस्ती करणी, राजेन्द्र शाह वि. नेपाल सरकार

पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनबाट निजको कन्याजाली (Hymen) च्यातिएको तर पुरानो भएको भन्ने देखिएको छ। प्रस्तुत वारदात मिति

२०७४।१२।१९ गते भएको र पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण मिति २०७४।१२।२२ मा मात्र भएको अर्थात् वारदात भएको ४ दिनपछि भएकोले पुरानो हुनु स्वाभाविकै देखिन्छ । कन्याजाली फाट्ने अरु कारण पनि हुनसक्ने भए पनि पीडितको शरीर परीक्षण गर्ने चिकित्सकले निजको योनिमा ह्वाङ्ग प्वाल परेको पाइएको भनी बकपत्र गरिदिएबाट पीडितलाई यी पुनरावेदक/प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेको कारणले नाबालिग पीडितको योनि अस्वाभाविकरूपमा रहेको भन्ने देखिएको छ । परीक्षण समयभन्दा ७२ घण्टापूर्व कन्याजाली च्यातिएको अवस्थालाई पुरानो मान्ने गरिन्छ भनी चिकित्सकले कतिपय मुद्दामा अदालतमा बकपत्रसमेत गरिदिएको अवस्था पनि पाइन्छ भनी उच्च अदालतको फैसलामा उल्लेख भएको देखिन्छ । यस कुरालाई पुनरावेदक/प्रतिवादीले समेत अन्यथा हो भन्न सकेको देखिँदैन । पीडितको शारीरिक परीक्षण वारदात भएको ४ दिनपछि भएको हुँदा कन्याजाली च्यातिएको पुरानो देखिनु र जबरजस्ती करणी भएको सङ्केत नदेखिनुलाई स्वाभाविकरूपमा लिनुपर्दछ । घटनास्थल मुचुल्काबाट पीडितले लगाउने गरेको पेन्टी (Panty) प्रतिवादीको कोठाबाट बरामद भएको देखिन्छ । यी पुनरावेदक/प्रतिवादीले पीडितलाई आफ्नो कोठामा लगी जबरजस्ती करणी नगरेका भए पीडितले लगाउने गरेको पेन्टी भित्री लुगा कसरी प्रतिवादीको कोठामा भेटिन गयो त भन्ने अहम् सवाल खडा हुन्छ । पुनरावेदकले पीडितको उमेरको हिसाबले Vagina tight हुनुपर्नेमा निजको यौनाङ्ग ह्वाङ्ग देखिएको भन्ने पीडितको परीक्षण गर्ने चिकित्सकको बकपत्रको बेहोरा र घटनास्थल अर्थात् प्रतिवादीको कोठाभित्रबाट पीडितको पेन्टी बरामद भएको विषयमा युक्तियुक्त तवरले प्रतिवादीले खण्डन गरी सफाइ पेस गर्न सकेको पनि नदेखिने ।

पीडितले भनेको भरमा सुनेको आधारमा लेखाइदिएको कागजलाई प्रमाणमा लिन नमिल्ने भन्ने

सम्बन्धमा विचार गर्दा, यी पुनरावेदक/प्रतिवादीले वारदात भएको भनिएको मिति २०७४।१२।१९ गते बिहान ११:०० बजे आफू आफ्नै मासु पसलमा भएकोले आफूले जाहेरवालीको छोरीलाई ललाइफकाइ जबरजस्ती करणी गरेको होइन भनी कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको देखिन्छ । वारदात मितिमा आफू काममा गएपछि प्रतिवादीले मेरो छोरीलाई आफ्नो कोठामा लगी जबरजस्ती करणी गरेकोले कारबाही गरिपाउँ भनी जाहेरवालाले यी पुनरावेदक/प्रतिवादीउपर किटानी जाहेरी दिई सो जाहेरीलाई समर्थन हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरी दिएको देखिन्छ । वारदात मितिमा हाम्रो कोठानजिक रहेको प्रतिवादीको मासु पसलनजिकै आफू खेलिरहेकोमा निज प्रतिवादीले मोटरसाइकलमा राखी चाउचाउसमेत किनी दिई आफ्नो कोठामा लगी खाटमा सुताई माया गरी मेरो सुरुवाल खोली निजको पाइन्ट खोली मेरो सुसुमा निजको सुसु राख्दै निकाल्दै गर्दा मलाई दुखी मैले खाटैमा पिसाब गरेकोमा निजले अर्को खाटमा लगी फेरि निजको सुसु गर्ने मेरो सुसुमा राख्दै निकाल्दै गरेपछि मलाई सुरुवाल लगाउन लगाई आफूले पाइन्ट लगाई मलाई मोटरसाइकलमा ल्याई मासु पसलनेर छोडी दिएका हुन् भनी यस घटनाका पीडितले मौकामा गरिदिएको कागजको बेहोरालाई समर्थन गर्दै अदालतमा बकपत्रसमेत गरिदिएको देखिन्छ । प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा १० को देहाय (१)(ख) बमोजिम पीडितले मौकामा व्यक्त गरेको कुरा प्रमाणमा लिन मिल्ने ।

पुनरावेदक/प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणीको कसुर गरेको पुष्टि भएको स्थितिमा जबरजस्ती करणी महलको ३ नं.को देहाय १ नं. बमोजिम दश वर्ष कैदको सजाय र ऐ. को १० नं. बमोजिम पीडितलाई प्रतिवादीबाट रु. ३०,०००।-(अक्षरेपि तिस हजार) क्षतिपूर्ति भराइदिने गरी सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर

गरेको उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७५।१०।२८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।
इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०८० भाद्र ४ गते रोज २ शुभम् ।

२४

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७४-CR-०५४३, वैदेशिक रोजगार कसुर, एकिन्द्र मादेन वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूलाई गरिदिएको मिति २०७२।०९।०४ को लिखत हेर्दा, तपाईंहरू जगतबहादुर लिम्बु र पूर्ण सिं लिम्बुलाई विभिन्न मितिमा वैदेशिक रोजगारीको लागि कतार मुलुकमा पठाइदिन्छु भनी जम्मा रु.१,७०,०००।- (एक लाख सत्तरी हजार रुपियाँ) लिएकोमा आजको मितिसम्म वैदेशिक रोजगारीमा पठाउन नसकेकोमा माथि उल्लिखित रकम मिति २०७२।१०।१५ भित्रमा सावाँ ब्याज फिर्ता दिने छु । उक्त म्यादाभित्रमा रकम फिर्ता नदिएमा वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ बमोजिम कारबाही गरी प्रतिवादीको चल अचल सम्पत्तिबाट रकम असुलउपर गरी लिनुहोला भनी बेहोरा उल्लेख गरी सो लिखत कागजमा सहीछाप गरेको देखिन्छ । उक्त लिखतमा उल्लेख भएको बेहोरासँग मिलान हुने गरी यी प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गरेको देखिन्छ । वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणसमक्ष बयान गर्दा आरोपित कसुरमा इन्कार रही जाहेरवालासमेतका मानिसले लिखत कागज जबरजस्ती गराएका हुन् भनी जिकिर लिएको भए पनि जबरजस्ती कागज गराएउपर कहीं कतै उजुर बाजुर गरेको छैन भनी उक्त लिखतको वैधानिकतालाई स्वीकार गरेको पाइयो । यसबाट उक्त लिखत अन्यथा हो भन्ने नभई प्रमाणमा लिन मिल्ने नै देखियो । निज प्रतिवादीले मौकामा गरेको बयान प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ९(२)(क)(२) बमोजिम प्रमाण लिन मिल्ने देखियो । यस अवस्थामा उक्त बयान,

निजले गरी दिएको लिखत अन्यथा नभएको अवस्थामा उक्त लिखतको कानूनी अस्तित्व कायमै रहेको देखियो । उल्लिखित तथ्य प्रमाणबाट प्रतिवादीले बिनाइजाजत जाहेरवाला तथा पीडितलाई वैदेशिक रोजगारमा पठाइदिन्छु भनी झुट्टा आश्वासन दिई प्रलोभनमा पारी रकमसमेत लिनै कार्य गरी निजहरूलाई वैदेशिक रोजगारमा नपठाएको तथ्य स्थापित भएकोले निज प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ विपरीतको कसुर गरेको देखिने ।

प्रतिवादी एकिन्द्र मादेनलाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र दफा ४३ को कसुरमा रु.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार रुपियाँ) जरिवाना र १।६।० (एक वर्ष छ महिना) कैद हुने र प्रतिवादीले लिएको खाएको बिगोमध्ये रु.७०,०००।- (सत्तरी हजार रुपियाँ) र सोको पचास प्रतिशतले हुने हर्जाना रु.३५,०००।- (पैंतिस हजार रुपियाँ) समेत गरी जम्मा रु.१,०५,०००।- (एक लाख पाच हजार रुपियाँ) पीडित जगतबहादुर लिम्बुले र बिगो रु.१,००,०००।- (एक लाख रुपियाँ) र सोको पचास प्रतिशतले हुने हर्जाना रु.५०,०००।- (पचास हजार रुपियाँ)समेत गरी जम्मा रु.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार रुपियाँ) पीडित पूर्ण सिं लिम्बुले प्रतिवादी एकिन्द्र मादेनबाट भराइपाउने ठहर्न्याई वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७३।१२।२० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने
कम्प्युटर : पुजा कंडेल
इति संवत् २०८० साल माघ २५ गते रोज ५ शुभम् ।

२५

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०७४-CI-०८२७, अंश चलन, लक्ष्मी थापासमेत वि. सुरेन्द्र थापा

साबिकको कि.नं.२४० हाल कि.नं.७१ र ७२ को जग्गा आफू साबिक नेपाल अरव बैंक लि.

हाल नविल बैंक लि. मा मिति २०४४।०४।०१ देखि २०९।०४।१० सम्म जागिर खाइआएको रकमबाट खरिद गरेको हो भनी आफ्नो दाबी जिकिर लिएको देखिन्छ। निजले जागिरबाट प्राप्त रकमले खरिद गरेको भने पनि स्रोतको एकमुष्ट रकममा यति प्राप्त भएको थियो सोको प्रमाण पेस गर्न सकेको देखिँदैन। आफ्नो निजी स्रोत खुलाउन नसकेको एवं पुष्टि गर्न नसकेको अवस्थामा उक्त जग्गा निजी हो भन्न मिलेन। प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६(क) को कानूनी व्यवस्था हेर्दा, एकाघरका सगोलका अंशियारमध्ये जुनसुकै अंशियारको नाममा रहेको सम्पत्ति सगोलको सम्पत्ति हुने भनी अदालतले अनुमान गर्ने छ भन्ने व्यवस्था उल्लेख भएको देखिन्छ। प्रतिवादीले निजी आर्जनको भन्ने जिकिर लिए पनि निजी आर्जन देखिने विश्वसनीय प्रमाण पेस गरी आफ्नो जिकिरलाई पुष्टि गर्न सकेको देखिँदैन। अर्कोतर्फ प्रतिवादीले अंश छुट्याई दाजु मोहनध्वज थापा एवं यी वादीले अंश बुझिसकेको र अंशबन्डा भएको भनी भन्न सकेको देखिँदैन। यस अवस्थामा वादी र प्रतिवादी एकासगोलका अंशियाराहरू देखिएको भन्ने आधारमा वादीले दुई भागको एक भाग अंश पाउने भनी उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको देखिने।

कि.नं.७२ को जग्गामा बनेको घर प्रतिवादीले सगोलको सम्पत्तिबाट बनाएको हो वा निजी आर्जनबाट बनाएको हो भन्नेतर्फ विचार गर्दा, काठमाडौं साबिक चितु वाहार-२(ग) कि.नं.२४० को ०-८-०-० जग्गा मिति २०४७।०८।२० मा धनबहादुर महर्जनबाट प्रतिवादीमध्येको माधव थापाले राजीनामा लिखत पारित गरी खरिद गरेको भन्ने देखिन्छ। उक्त कि.नं.२४० को जग्गा हाल साबिक हुँदा कि.नं.३६ कायम भई उक्त कित्ता जग्गामध्येबाट मिति २०६२।०८।०७ मा र.नं.९९३ को हालैदेखिको बकसपत्रको पारित भई कित्ताकाट हुँदा कि.नं.७१ कायम भई ०००१२७.३८

वर्ग मिटर जग्गा प्रतिवादीमध्ये लक्ष्मी थापाको नाममा र अरु बाँकी कायम भएको कि.नं.७२ को क्षेत्रफल ००१७४.२२ को घरजग्गा प्रतिवादी माधव थापाको नाममा रहेको भन्ने मिसिल संलग्न दर्ता स्वेस्ताबाट देखिन्छ। उक्त स्वेस्ताबाट कि.नं.७२ को जग्गामा घरसमेत रहेको भन्ने देखिने।

पुनरावेदक/प्रतिवादी माधवध्वज थापाले कि.नं.७२ को जग्गामा घर कर्जा लिई बनाए भन्ने जिकिर लिएको देखिन्छ। मिसिल संलग्न नेपाल बैंक लि.बाट रु.२,५०,८००।- ऋण लिई धितो बन्धकको लिखत मिति २०५०।११।१६ मा पारित भएको र नविल बैंकबाट मिति २०५२।१२।२५ (७ अप्रिल १९९६) मा रु.२,८०,६००। ऋण लिएको, उक्त ऋण मिति २०४७।०८।२० विवादको जग्गा खरिद भएपश्चात् नै लिएको देखिन्छ। उल्लिखित तथ्य एवं आधारसमेत बाट उक्त कि.नं.७२ को जग्गामा बनेको घर निज प्रतिवादीले निजी प्रयास र स्रोतबाट बनाएको रहेछन् भन्ने नै देखियो। यसै सन्दर्भमा कुनै अंशियारले कुनै सम्पत्ति आफ्नो निजी हो भनी प्रमाण पेस गर्दछ र सो प्रमाणलाई अन्य अंशियारले सप्रमाण खण्डन गर्न सक्दैनन् भने यस अवस्थामा अंशबन्डाको महलको १८ नं. बमोजिम त्यस्तो सम्पत्ति निजी आर्जनको मान्नुपर्ने देखिने भनी ने.का.प.२०७७ अड्क ७ नि.नं.१०५३१ मा सिद्धान्त प्रतिपादन भएको देखिन्छ। प्रस्तुत विवादमा विवादको घर निजी आर्जन वा बैंकमार्फत ऋण लिएको भन्ने झुठ्ठा हो भनी वादी पक्षले प्रमाण पेस गरी खण्डन गर्न सकेको देखिँदैन। यसरी प्रतिवादी माधव थापाको निजी प्रयासबाट बनाएको उक्त घरमा समेत यी वादीले बन्डा पाउने हुन् भन्न मिल्ने देखिएन। यस अवस्थामा कि.नं.७२ मा बनेको घर र सो घरले चर्चेको ०-४-०-० जग्गासम्ममा प्रतिवादी माधवध्वज थापाको अंश भाग कायम गर्नु न्यायको रोहमा मनासिब हुने देखिन आयो। उक्त कि.नं.७१ र कि.नं.७२ मा रहेको घर र सो घरले चर्चेको ज.रो.०-४-०-० जग्गा

बाहेकको ज.रो. ०-४-०-० जग्गासम्म मात्र वादीले अंश भराई लिन पाउने देखिँदा कि.नं.७२ मा रहेको घरसमेतबाट अंश पाउने भनि उच्च अदालत पाटनबाट भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी हुने।

वादीले प्रतिवादीबाट दुई भागको एक भाग अंश पाउने भनी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।०३।१८ मा भएको फैसला प्रतिवादी माधव थापाले कि.नं.७२ मा बनाएको घर निजी ठहरेकाले सो हदसम्म केही उल्टी भई वादीले कि.नं.७२ को जग्गामा बनेको घर र सो घर चर्चेको ज.रो.०-४-०-० जग्गा बाहेक कि.नं.७१ र कि.नं.७२ को जग्गाबाट नरम गरम मिलाई ज.रो.०-४-०-० जग्गासम्म प्रतिवादीबाट वादीले अंश भराइलिन पाउने।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल फाल्गुन ८ गते रोज ३ शुभम्।

२६

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ, ०८०-WH-०३१८, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, धनिक लाल मण्डल वि. काठमाडौं जिल्ला अदालतसमेत

रिट निवेदकले आफ्नो निवेदनमा नियमित अदालतबाट भएका काम कारबाही कानूनको प्रक्रियाअनुसार नभएको भनी उल्लेख गर्नुभएको देखिन्छ। कुनै कसुरमा राज्यबाट सोही कामको लागि स्थापित निकायले कानूनबमोजिम आफ्नो क्षेत्राधिकारभित्र रही काम कारबाही गर्ने कार्य निजको अधिकार मात्र नभएर कानूनी कर्तव्य नै हुन आउँछ। अनुसन्धान गर्ने निकायले जाहेरी परेपछि त्यसको सत्यताको आधारमा गरेको अनुसन्धान माथि बिनाआधार शंका गर्नु युक्तिसङ्गत हुने देखिँदैन। यसैगरी कानूनबमोजिम पक्राउ अनुमति दिने, म्याद थप गर्ने अदालतबाट भएको काम कारबाहीमा प्रत्यक्ष देखिने कानूनी त्रुटिको अभावमा असाधारण

अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत हस्तक्षेप गर्नुसमेत मनासिब हुँदैन। यस अदालतको असाधारण अधिकारसम्बन्धी नेपालको संविधानको धारा १३३ को उपधारा (२) र (३) मा रहेको कानूनी व्यवस्था हेर्दा, संविधान प्रदत्त मौलिक हकको प्रचलनको लागि वा अर्को उपचारको व्यवस्था नभएको वा अर्को उपचारको व्यवस्था भए पनि त्यस्तो उपचार अपर्याप्त वा प्रभावहीन देखिएको अन्य कुनै कानूनी हकको प्रचलनको लागि यस अदालतले बन्दीप्रत्यक्षीकरणलगायतका रिट जारी गर्न सक्ने देखिन्छ। बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिटको आधारभूत चरित्र कुनै पनि व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रता अपहरण हुने गरी बदनियतसाथ वा कपटपूर्ण तवरले थुनामा राखिएको वा प्रवृत्त भावना लिई थुनेको वा कानूनविपरीत वा अनिवार्य रूपमा पालना गर्नुपर्ने कार्यविधि पालना नगरी थुनामा राखिएको समेतका अवस्था पुष्टि हुनुपर्दछ। बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश उल्लिखित किसिमका गैरकानूनी थुनाबाट मुक्त गर्नको लागि जारी हुने विशेषाधिकारयुक्त आदेश हो। यस प्रकारको रिट जारी हुनको लागि प्रारम्भिक रूपमा (Prima facie) बन्दीको थुना गैरकानूनी देखिनु अनिवार्य हुन्छ। प्रत्यर्थीहरूको लिखित जवाफ हेर्दा रिट निवेदक विरुद्ध जाहेरी परी पक्राउ अनुमति लिई पटकपटक म्याद थप भई कानूनबमोजिम कारबाही भएको भन्ने देखिएको छ। रिट निवेदकले के कति कारणबाट आफ्नो मौलिक हक हनन भएको हो भन्ने स्थापित गरेको नदेखिएबाट निवेदकले रिट निवेदनमा उल्लेख गरेबमोजिम निजलाई बदनियत, प्रवृत्त भावना लिई, कानूनविपरीत हुने गरी गैरकानूनी थुनामा राखेको भन्ने नदेखिने।

निवेदकको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् अधिवक्ता तथा प्रत्यर्थीहरूका तर्फबाट उपस्थित विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताले रिट निवेदकलाई तत्कालीन अवस्थामा मुद्दा पुर्पक्षको लागि आधार कारण नखोली थुनामा राखिएको भनी प्रस्तुत बन्दीप्रत्यक्षीकरणको

रिट निवेदन दर्ता भएको भएपनि हाल रिट निवेदकउपर धरौटी माग भई तारेखमा छुटिसकेको कुरालाई दुवै पक्षबाट एकमत भई इजलासलाई जानकारी गराइएको हुँदा कानूनबमोजिम नियमित अदालतबाट भएको कानूनबमोजिम कारबाही भई रिट निवेदक धरौटी तारेखमा रहेकोले निजले निवेदनमा माग गरेको विषय उल्लिखित चालु मुद्दा सुनुवाइको क्रममा सोही अदालतबाट सम्बोधन हुने नै हुँदा हाल जिल्ला अदालतमा विचाराधीन रहेको मुद्दामा यस अदालतबाट कुनै हस्तक्षेप गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन। अनुसन्धानको थुना गैरकानूनी भएको भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट निवेदन दर्ता भएकोमा जिल्ला अदालतबाट नियमित सुनुवाई भई निवेदकसँग धरौटी माग भई निवेदक तारेखमा रहेको देखिएबाट उल्लिखित काम कारबाहीबाट यी रिट निवेदकको कुनै मौलिक वा कानूनी हकको हनन भएको मान्न नमिल्ने।

यी रिट निवेदक मनोजकुमार मण्डललाई अनुसन्धानको क्रममा राखिएको थुना गैरकानूनी भएको भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट निवेदन दर्ता भएकोमा जिल्ला अदालतबाट नियमित सुनुवाई भई निवेदकसँग धरौटी माग भई तारेखमा रहेको देखिएबाट प्रस्तुत रिट निवेदनको औचित्य समाप्त भएको देखिएकोले निवेदकको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था देखिएन। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : खुमप्रसाद भण्डारी

कम्प्युटर: अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल जेठ २२ गते रोज ३ शुभम्।

२७

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री तिलप्रसाद श्रेष्ठ,
०८०-WH-०३१४, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, सुरेशचन्द्र
घिमिरे वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत

प्रस्तुत निवेदनमा यी निवेदकउपर दायर भएको बैंकिङ्ग कसुर मुद्दामा जिल्ला गोरखा साबिक

छोप्राक गा.वि.स. वडा नं. ३ हाल परिवर्तित ऐ. सिरानचोक गाउँपालिका वडा नं. ५ घर भई हाल काठमाडौं जिल्ला काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. १३ बाफल भनी वतन उल्लेख भएको देखिन्छ। यी निवेदकको नाममा उच्च अदालत पाटनबाट जारी भएको म्याद जिल्ला गोरखा साबिक छोप्राक गा.वि.स. वडा नं. ३ हाल परिवर्तित ऐ. सिरानचोक गाउँपालिका वडा नं. ५ मा मिति २०७८/०८/२० मा घर दैलोमा तामेल भइआएको देखिन्छ। यी प्रतिवादीको नाममा जिल्ला प्रशासन कार्यालय काठमाडौंबाट जारी भएको नागरिकतामा जन्मस्थान जिल्ला गोरखा छोप्राक गा.वि.स. वडा नं. ३ भन्ने उल्लेख भए पनि स्थायी बसोबासको ठेगानामा का.म.न.पा. वडा नं. १३ उल्लेख गरी मिति २०७६/०७/२२ मा नागरिकता जारी भएको देखिन्छ। यस प्रकार जन्मघर र हालको वतन अलग अलग रहेको अवस्थामा निजको जन्मघरमा घरदैलोमा टाँस भएको म्यादलाई कानूनअनुकूल तामेल गरेको भनी मान्न मिल्ने देखिँदैन। उल्लिखित म्याद म्यादवाला व्यक्तिले बुझेको भन्ने पनि देखिएको छैन। यसबाट विवादित तामेली म्याद मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ६१(३) मा रहेको प्रावधानप्रतिकूल हुने गरी तामेल गरेको देखियो। यसरी बेरितसँग तामेल भएको म्यादको आधारमा भएको फैसलालाई सुनुवाइको उचित अवसर प्रदान नगरी प्रक्रियागत रूपमा त्रुटि गरी फैसला भएको मान्नुपर्ने देखिँदा सो फैसला र उक्त फैसलाबमोजिम भए गरिएका काम कारबाहीसमेत कानूनतः त्रुटिपूर्ण रहेको देखिएबाट निवेदकका नाममा उच्च अदालत पाटनबाट जारी भई मिति २०७८/०८/२० मा तामेल भएको म्याद रीतपूर्वक तामेल भएको भएको भनी मान्न नमिल्ने।

रीट निवेदक सुरेशचन्द्र घिमिरेको नाउँमा मिति २०७८/०८/२० मा तामेल भएको म्याद रितपूर्वक तामेल भएको नदेखिएबाट निज विरुद्ध उच्च अदालतबाट भएका सम्पूर्ण काम कारबाही

प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त तथा सुनुवाइको उचित अवसर प्रदान गरेको मान्न नमिल्ने हुँदा उक्त बेरितको म्याद, सो म्यादको आधारमा भएका काम कारबाही, उच्च अदालत पाटनको मिति २०७८/१२/०७ को फैसला तथा मिति २०८०/१२/३० मा निवेदकलाई थुनामा राख्न पठाइएको काठमाडौं जिल्ला अदालतको पत्रसमेत कानूनअनुकूल नदेखिएकाले नेपालको संविधानको धारा १३३(२) र (३) बमोजिम उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिएको छ । अब निवेदक/प्रतिवादी सुरेशचन्द्र घिमिरेलाई सम्बन्धित कारागारबाट झिकाई, उल्लिखित बैंकिङ कसुर मुद्दामा निजको बयान गराई, थुनछेक आदेश गर्ने, प्रमाण बुझ्नेलगायत निजको हकमा सम्पन्न गर्नुपर्ने आवश्यक कानूनी कारबाही सम्पन्न गरी निजको हकमा पुनः फैसला गर्नु भनी प्रत्यर्थी उच्च अदालत पाटनसमेतको नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ठहर्छ । उल्लिखित परमादेशको आदेशको परिणामस्वरूप निवेदकले न्यायिक उपचार प्राप्त गर्ने नै हुँदा निवेदकको मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरिरहन परेन । यस सम्बन्धमा यस इजलासबाट संक्षिप्त आदेश जारी भई सोही आदेशानुसार आवश्यक कारबाहीका लागि लेखी पठाइसकेको देखिँदा प्रस्तुत निवेदनबाट थप केही गर्नु नपर्ने ।

इजलास अधिकृत : खुमप्रसाद भण्डारी

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल जेठ २२ गते रोज ३ शुभम् ।

२८

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा,
०७३-CR-०४२८, अदालतको अवहेलना, ओम सिंह
वि. काठमाडौं जिल्ला, काठमाडौं महानगरपालिका
वडा नं.३ लाजिम्पाटस्थित नेशनल लाइफ इन्स्योरेन्स
कम्पनी लि.समेत

मिसिल संलग्न नेशनल लाइफ इन्स्योरेन्स
कम्पनी लिमिटेडको मिति २०६९।०२।३० को पत्र

बेहोरा हेर्दा बिमालेख नं. १४८१६ अन्तर्गत भुक्तानी गर्नुपर्ने रकम रु. १६,३२,०१३।७० मा बिमा समितिको निर्देशनबमोजिमको ब्याजसहितको रकम रु.२१,७८,०८९।९६ र बिमालेख नं. १९८३१ अन्तर्गत भुक्तानी गर्नुपर्ने रकम रु. १,०२,३४८।७५ सहित निवेदकको पत्नी त्रिपुरा राज्यलक्ष्मी सिंहको मृत्यु दाबी, हालसम्मको ब्याज र असुल गर्नुपर्ने रकमसमेत कट्टा गरी भुक्तानी गर्नुपर्ने हिसाब मिलान गरी बाँकी हुन आउने रकम रु.१९,२१,१५१।०३ निवेदकको हिमालयन बैंकको खाता नं. ०१९०००४२४८००१५ मा जम्मा गरेको भन्ने देखिन आउँछ । निवेदकले पुनरावेदन अदालतको फैसलाअनुरूप पाउनुपर्ने रकम नपाएको हुँदा अदालतको अवहेलनाजन्य कार्य विपक्षीले गरेको भनी दाबी लिए तापनि उक्त जम्मा भएको रकमलाई यी निवेदकले नलिएको तथा नपाएको भनी उक्त मितिको पत्र बेहोरालाई खण्डित गर्न सकेको देखिँदैन । यसर्थ, यी निवेदकले विपक्षी कम्पनीबाट बिमालेख नं. १४८१६ र बिमालेख नं. १९८३१ समेतका रकम प्राप्त गरिसकेको अवस्थालाई अन्यथा हो भनी खण्डन गर्न नसकेको अवस्थामा निवेदकले फैसलाअनुरूप पाउनुपर्ने रकम नपाएको अर्थात् फैसला कार्यान्वयन नै नगरेको भनी अर्थ गर्न नमिल्ने ।

निवेदकले दुवै बिमालेखबाट प्राप्त गर्ने रकमबाट निजकै श्रीमती त्रिपुरा राज्यलक्ष्मीको मृत्यु दाबीबापत भुक्तानी भएको रकम कट्टा गरेको भन्ने निवेदन जिकिर लिएको देखिन्छ । मिसिल प्रमाणको रूपमा पेस हुन आएको पुनरावेदक भरत बस्नेत र विपक्षी यिनै निवेदक भई पुनरावेदन अदालत पाटनमा चलेको दे.प.न. १०६६/२४१२ को बिमा दाबी मुद्दाको मिसिल तथा सोही विषयमा समितिबाट निर्णय भएको मिसिलसमेत हेर्दा बीमितले बिमा कम्पनीबाट पाउने बिमा रकमबाट घटाउनु पर्ने रकम भनी पेस्की रकम, सवारी साधनबापत सापटी रकम, भ्रमण भत्ता पेस्की, तलब पेस्की र बिमा समितिको पत्रानुसार बुझाउनुपर्ने

रकम भनी उल्लेख भएको पाइन्छ। उक्त पत्रमा श्रीमती त्रिपुराराज्य लक्ष्मीको मृत्यु दाबीबापतको भुक्तानी विषयको भन्ने कुनै बेहोरा उल्लेख भएको समेत देखिँदैन। निवेदकले दुवै बिमालेखबाट प्राप्त गर्ने रकमबाट निजकै श्रीमती त्रिपुरा राज्यलक्ष्मीको मृत्यु दाबीबापत भुक्तानी भएको रकम कट्टा गरेको भन्ने निवेदन जिकिर सम्बन्धमा उक्त बेहोरा उल्लेख भएको नदेखिएको तथा यो यस बेहोराले कट्टा हुनु नपर्ने रकम कट्टा गरेको भन्ने विषय अदालतको अवहेलनाजन्य विषय बन्न सक्ने देखिँदैन। साथै यस्तो विषय अदालतको अवहेलना भन्ने मुद्दाको रोहमा अदालतले बोल्न मिल्ने तथा अदालतबाट प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा निरूपण गर्ने विषयसमेत भएको नदेखिएको हुँदा सो सम्बन्धमा अन्य उपचारको माध्यमबाट उपचार खोज्नुपर्ने विषय देखिने।

पुनरावेदन अदालतमा चलेको बिमा दाबी मुद्दामा उठाइएका विषयहरूका रकमहरू कट्टा नगरी जीवन बिमाको रकम भुक्तानी दिने गरी फैसला भएकोमा कट्टा नगर्न भनिएका रकमहरू नै कट्टा गरेको भनी यी निवेदकले जिकिर लिनसमेत सकेको देखिँदैन। पहिले चलेको बिमा दाबी मुद्दामा कुनै विषय र प्रसङ्ग नै नगरिएको रकम विपक्षीले कट्टा गरेको भन्ने दाबी देखिन्छ भने बिमा कम्पनीबाट फैसलाबमोजिम पाउनुपर्ने रकममध्ये अधिकांश रकम निवेदकको बैंक खातामा जम्मा भइसकेको भन्ने कम्पनीको मिति २०६९।०२।३० यी निवेदक ओम सिंहलाई पत्राचार गरेको “बिमालेखबापतको रकम भुक्तानी बारे भन्ने पत्रबाट देखिएको र उक्त रकमलाई यी निवेदकले सोबापत भुक्तानी गरिएको होइन भनी खण्डित गर्न नसकेको तथा बिमा समितिको निर्णयलाई स्वीकारसमेत गरेको अवस्था देखिन आउँदा विपक्षीबाट अदालतको आदेश वा फैसलाको अवहेलनाजन्य कार्य भयो भनी मान्न नमिल्ने।

विपक्षीहरूले पुनरावेदन अदालतबाट मिति

२०६७।०२।१८ मा भएको आदेश तथा फैसला कार्यान्वयन नगरेकोले अदालतको अवहेलनाजन्य कार्य गरेको हुँदा कारबाही गरिपाउँ भन्ने निवेदक दाबी पुग्न सक्दैन भनी भएको पुनरावेदन अदालत पाटनको मिति २०७२।०६।०६ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजालास अधिकृत - देवेन्द्र पौडेल

कम्प्युटर - अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल असोज २२ गते रोज २ शुभम्।

२९

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा,
०६८-CI-०४५२, बाँकी बक्यौता रकम र जिम्मा
रहेको कागजपत्रसहितको सामान फिर्ता दिलाइपाऊँ,
भरत बस्नेत वि. ओम सिंह

बहाल टुटेपछि वा सेवाबाट अवकाश पाएपछि वा हटेपछि समेत प्रतिवादीले आफूसँग रहेको कम्पनीको कागजपत्र लेखा, नगदी वा जिन्सी हालवालालाई बुझाउनुपर्नेमा सो बुझाएको भन्ने दाबी प्रतिवादीले लिन नसकेको देखिँदैन। यसरी यी प्रतिवादी वादीको कर्मचारी होइन भन्ने नदेखिएको र निजले आफ्नो बरबुझारथ गरेकोसमेत नदेखिएकोमा आफूसँग रहे भएका कागजपत्र, लेखा, नगदी, जिन्सी बहाल टुटेपछि बुझाउनुपर्ने होइन भन्न मिल्ने देखिएन। त्यसै गरी ऐ. ऐनको दफा १६० को खण्ड (झ) मा “कम्पनीको नगदी वा जिन्सी हिनामिना गर्ने वा मास्ने वा कम्पनीको नगदी वा जिन्सी सञ्चालक समिति वा साधारण सभाको स्वीकृतिविना निजी काममा प्रयोग गर्ने वा कम्पनीको नियमानुसार पेस्की फछ्यौँट नगर्ने वा कार्यालयले दिएको आदेश पालना नगर्ने र कम्पनीको विवरण दाखिला नगर्ने सञ्चालक, पदाधिकारी तथा कर्मचारीलाई भन्ने कानूनी व्यवस्थाले कम्पनीको नगदी वा जिन्सी हिनामिना गर्ने वा मास्ने वा कम्पनीको नगदी वा जिन्सी सञ्चालक समिति वा साधारण सभाको स्वीकृतिविना निजी काममा प्रयोग

गर्ने वा कम्पनीको नियमानुसार पेस्की फछ्यौट नगर्ने वा कार्यालयले दिएको आदेश पालना नगर्ने र कम्पनीको विवरण दाखिला नगर्ने सञ्चालक, पदाधिकारी तथा, कर्मचारीले समेत सजायको भागी हुनुपर्ने व्यवस्था रहनुको अर्थ कम्पनीबाट लिएको पेस्की फछ्यौट नगरेको भएमा बहाल टुटेपछि वा सेवाबाट हटेपछि पेस्की फछ्यौट गर्न नपर्ने वा लिए खाएको कम्पनी नगद वा जिन्सीको दायित्व बेहोर्नुपर्ने छैन भन्ने अर्थ यो कानूनी व्यवस्थाबाट निकाल्न मिल्ने नदेखिएको हुँदा प्रतिवादीले यो प्रावधानबमोजिमको दायित्व निर्वाह गर्न बाँकी रहेको भएमा सेवाबाट हटेपछि सो दायित्व निर्वाह गर्न नपर्ने भन्ने अर्थ निकाल्न मिल्ने देखिँदैन । यसर्थ कम्पनी ऐन, २०६३को दफा १६० को देहाय (ङ) र (झ) को कानूनी प्रावधान बहाल टुटेको पूर्वसञ्चालक, पदाधिकारी वा कर्मचारीको हकमा आकर्षित नहुने भन्ने पुनरावेदन अदालत पाटनको सुरु फैसला कानूनसम्मत देखिन आएन । पुनरावेदन अदालतले पटकपटक आदेश गरी आवश्यक कागजपत्र, बिल भौचर, दस्तावेज झिकाई अन्तमा ती प्रमाण कागजातको मूल्याङ्कन र विश्लेषण गरी तथ्यमा प्रवेश गरी निर्णयमा पुग्नुपर्नेमा सोसमेत गरेको नदेखिएको कार्यसमेत कानूनसम्मत मान्न नमिल्ने ।

प्रतिवादी ओम सिंहले मिति २०६४।०२।२१ देखि लागु हुने गरी मिति २०६४।०६।२२ को सञ्चालक समितिको निर्णयले अवकाश पाइसकेको भन्ने देखिएको तथा कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा १६०(झ) बमोजिम प्रतिवादी ओम सिंहले लिएको पेस्की रकम दिलाइपाउँ भन्ने वादीको दाबी मिलेको देखिएन र वादीको दाबी सम्बन्धमा कम्पनी ऐन, २०६३ को दफा १६०(ङ) र (झ) आकर्षित नहुने भनी पुनरावेदन अदालतबाट मिति २०७६।०९।२५ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उक्त फैसला बदर गरिदिएको छ । अब, माथि विवेचित आधार तथा कारणबमोजिम प्रतिवादी ओम सिंहको हकमा उल्लिखित कानूनी व्यवस्था लागु हुने नै

देखिँदा तथ्यमा प्रवेश गरी वादी/उजुरीकर्ताको निवेदन, लिखित जवाफ तथा बयानसमेतको सम्बन्धमा प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी निर्णय गर्नु भनी पुनः इन्साफ गर्न मिसिल तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हाल उच्च अदालत पाटनमा फिर्ता पठाइ दिने ।

इजलास अधिकृत - देवेन्द्र पौडेल

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल असोज २२ गते रोज २ शुभम् ।

३०

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा,
०७४-WO-०६१६, उत्प्रेषण / परमादेशसमेत, राजन
मास्के वि. उच्च अदालत पाटन, ललितपुरसमेत

निवेदकले उच्च अदालत पाटनको फैसलामा ठहर खण्डबमोजिम तपसिल खण्ड नभएकोले ठहर खण्डबमोजिम तपसिल खण्ड कायम गर्ने गरी संशोधन गरिपाउन निवेदन दिएकोमा सोबमोजिम नहुने गरी भएको आदेश उत्प्रेषणबाट बदर गरी ठहर खण्डबमोजिम तपसिल खण्ड संशोधन गरिदिनु भनी परमादेशसमेत माग गरेतर्फ विचार गर्दा तल्लो अदालत वा न्यायिक निकायले कानूनले गर्नु भनेको कार्य नगरेको अवस्थामा त्यस्तो कार्य गर्नु भनी सम्बन्धित अधिकारी वा न्यायिक निकायका नाममा परमादेश जारी हुने अवस्था रहन्छ । सामान्यतः रिट क्षेत्रबाट साधारण क्षेत्राधिकारअन्तर्गत भएका काम कारबाहीमा हस्तक्षेप नगरिने भए पनि कानूनी उपचारको अभावमा व्यक्ति अन्यायमा परेको अवस्था देखिएमा स्थापित हकको प्रचलनका लागि असाधारण अधिकार क्षेत्रबाट उपचार प्रदान गर्नुपर्ने हुन्छ । नेपालको संविधानको धारा ४६ तथा १३३ अन्तर्गत सर्वोच्च अदालतलाई प्रदान गरिएको असाधारण अधिकार क्षेत्र यस्तै स्थापित सम्पत्तिसम्बन्धी मौलिक हकलगायतका अन्य हक अधिकार संरक्षणको लागि रहेको हुँदा आफ्नै अदालतको फैसलाको ठहर खण्डबाट स्थापित हक त्रुटिवश तपसिल खण्डमा उल्लेख हुन छुट भएका

कारण प्राप्त नहुने स्थिति सच्याउन निवेदकको संशोधनको निवेदन उच्च अदालतमा परेउपरको आदेशबाट समेत उपचार प्राप्त नभएको अवस्थामा रिट क्षेत्रबाट त्रुटि सच्याउन उचित आदेश जारी गर्न माग गरी ठहर खण्डबमोजिम स्थापित हक प्रचलन गराइपाउन परेको प्रस्तुत निवेदन असाधारण अधिकार क्षेत्रको घोषित लक्ष्यअनुरूप नै दर्ता भएको देखिन्छ । प्रस्तुत निवेदनमा उच्च अदालत नियमावली, २०७३ को दफा ११५ बमोजिम फैसलामा भएका त्रुटि सच्याउन माग गरी निवेदन दिएको तर निवेदनमा उल्लेख भएका विषयमा विवेचना नै नगरी संशोधन गर्दा फैसला प्रभावित हुने भन्ने गोश्वारा प्रकृतिको बेहोरा मात्र उल्लेख गरी आदेश गरेको देखिन्छ । यसबाट यी निवेदकको अंश पाउने नैसर्गिक हकमा समेत बाधा पुग्ने देखियो । फैसलाको ठहर खण्डबमोजिम तपसिल खण्ड संशोधन हुन सक्ने कानूनी व्यवस्था र न्यायिक सिद्धान्तअनुरूप नगरी फैसला संशोधन नहुने भनी उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७४।१०।०५ मा भएको आदेश कानूनी त्रुटिपूर्ण देखिँदा उक्त आदेश उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने ।

तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०५।२० मा भएको फैसलाले वादी प्रतिवादीहरूले तायदाती फाँटवारीमा उल्लेख गरेका जग्गाहरूबाट ६ भागको १ भाग वादीले अंश पाउने ठहर गरेको देखिएको, सो ठहरबमोजिम उक्त फैसलाको तपसिल खण्डमा उल्लेख गर्न छुट भएका, गलत बेहोरा उल्लेख भएका र दोहोरो उल्लेख भएका विषय संशोधन गरी ठहरबमोजिम तपसिल खण्डमा संशोधन गर्न निवेदकले माग गरेको, फैसला संशोधन गरी ठहर खण्डबमोजिम तपसिल खण्डमा कायम गर्न माग गरिएका उल्लिखित कित्ता जग्गाहरू वादी प्रतिवादीहरूले सुरु अदालतमा पेस गरेको तायदाती फाँटवारीमा उल्लेख गरेका कित्ता जग्गाहरूसँग मिले भिडेको देखिएको साथै प्रचलित कानूनी

व्यवस्था एवम् यस अदालतबाट प्रतिपादित न्यायिक सिद्धान्तबमोजिम फैसलाको ठहर खण्डअनुसार तपसिल खण्ड संशोधन गरी दिनुपर्ने देखिएकाले निवेदकले मिति २०७४।०६।०४ मा दिएको निवेदन मागबमोजिम तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०५।२० मा भएको फैसलाको तपसिल खण्डमा ठहर खण्डबमोजिम संशोधन गरिदिनु भनी विपक्षीहरूका नाममा परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल पौष १२ गते रोज ५ शुभम् ।

३१

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री विनोद शर्मा, ०७४-CI-०२६०, ०७४-CI-०२६४, ०७४-CI-०२६६, अंश चलन, कान्छी मास्के खत्री वि. राजन मास्के, पुष्कर मास्के वि. राजन मास्के, अमिरबहादुर खत्री मास्के वि. राजन मास्के

बन्डापत्रको कागज अंशियारहरूबिच भई रजिस्ट्रेसन भएको हुनुपर्ने अन्यथा सदर नहुने भन्ने देखियो । प्रस्तुत मुद्दामा पुनरावेदकले जिकिर लिएको बन्डा भएको भनिएको मिति २०३९।०३।२९ को लिखत रजिस्ट्रेसन भए पनि वादी नारायणबहादुर खत्रीलाई बन्डापत्रमा सहभागी गराएको देखिँदैन । त्यो लिखत कागजबाट नारायणबहादुर खत्रीले अंश पाएको भन्ने देखिँदैन । जहाँसम्म नारायणबहादुर खत्रीको अंश भाग निजका पत्नी र छोरालाई बकस पत्र गरिदिएको लिखतबाट निज छुट्टि भिन्न भएको भन्ने पुनरावेदकहरूको जिकिरका सम्बन्धमा हेर्दा, अंशियारबाहेकका अरू व्यक्तिलाई गरिदिएको बकसपत्र जस्तो खुसी भएर कसैलाई जग्गा वा सम्पत्ति दिने प्रकृतिको लिखतलाई अंश लिई छुट्टी भिन्न भएको लिखत प्रमाणका रूपमा मानी अंश बन्डाको ३० नं. बमोजिमको अवस्था हो भनी व्याख्या गर्न मिल्ने अवस्थासमेत नदेखिने ।

बन्डापत्र पारित हुनुअघि नै वादीका पति छुट्टी भिन्न भएका भन्ने पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूको जिकिर मिसिल सामेल कागज प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेको, शेरबहादुरखत्रीका छोराहरूमध्ये जीवित ६ भाई छोराहरूमा वादीका पति नारायणबहादुर खत्रीको नामै उल्लेख नगरी अरू ५ भाइले मात्र बन्डापत्र गरेको देखिएको, अंशियारहरूमध्ये एक अंशियारलाई बाहेक गरी भएको बन्डा पत्रले मान्यता नपाउने र वादीले अंश पाएको नदेखिएको स्थितिमा मिति २०२०।०५।१८ लाई मानु छुट्टिएको मिति कायम गरी सो मितिभन्दा पछाडि आर्जन गरेको सम्पत्तिसम्म बन्डा नलाग्ने र सोदेखि बाहेकका दर्ता स्रेस्ता भिडेसम्मका वादी प्रतिवादीले तायदातीमा उल्लेख गरेका सम्पत्तिहरूबाट ६ भागको १ भाग वादीले अंश पाउने ठहर गरी साबिक पुनरावेदन अदालत पाटनबाट भएको फैसला मिलेकै देखियो। यसबाट पुनरावेदन अदालत पाटनको फैसला बदर गरी पुनरावेदन जिकिरबमोजिम गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदकहरूको पुनरावेदन जिकिर एवम् पुनरावेदक/प्रतिवादीहरूको तर्फबाट प्रस्तुत विद्वान् वरिष्ठ अधिवक्ताहरू र विद्वान् अधिवक्ताहरूको बहस जिकिर तथा प्रस्तुत मुद्दामा यस अदालतबाट भएको प्रत्यर्थी झिकाउने आदेशसँगसमेत सहमत हुन नसकिने।

वादी प्रतिवादीहरू ६ अंशियार बाँकी रहेकोमा वादी नारायणबहादुर खत्रीले आफ्नो अंश भाग पाएको भन्ने नदेखिएको स्थितिमा प्रतिवादीहरूबिचमा भएको बन्डापत्रको मिति २०२०।०५।१८ लाई मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी सो मितिभन्दा पछाडि आर्जन गरेको सम्पत्तिसम्म बन्डा नलाग्ने देखिएको हुँदा सोभन्दा अगाडिको दर्ता स्रेस्ता भिडेसम्मको वादी प्रतिवादीहरूले तायदातीमा उल्लेख गरेका सम्पत्तिहरूबाट ६ भागको १ भाग वादीले अंश पाउने ठहर गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०५।२० मा भएको फैसला मिलेकै

देखिने।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा
कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन
इति संवत् २०८० साल पौष १२ गते रोज ५ शुभम्।

३२

मान्या.श्री कुमार रेग्मी र मान्या.श्री शारङ्गा सुवेदी, ०८०-WH-०१८०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, यमबहादुर क्षेत्री वि. तत्कालीन पुनरावेदन अदालत हाल उच्च अदालत तुल्सीपुर बुटवल इजलाससमेत

निवेदकको मागदाबीबमोजिम सुरु जिल्ला अदालतबाट फैसला हुँदाका समयसम्म २ वर्ष ६ महिना २१ दिन तथा मिति २०७८।०२।०६ देखि हालसम्म थुनामा नै रहेको र हाल कैदमा बसेको ५ वर्ष पूरा भई २५ प्रतिशत कैद भुक्तान भएको भन्ने देखिन्छ। निवेदक/प्रतिवादीका हकमा तत्कालीन पुनरावेदन अदालत बुटवलले सर्वस्वसहित जन्म कैद गर्ने गरी गरेको फैसला साधकको रोहमा समेत यस अदालतबाट सदर भएको मिसिल संलग्न कागजबाट देखिन्छ। ज्येष्ठ नागरिकसम्बन्धी ऐन, २०६३ को दफा १२(१) (ख) को कानूनी व्यवस्था हेर्दा सत्तरी वर्ष उमेर पूरा भई पचहत्तर वर्ष ननाघेको ज्येष्ठ नागरिकलाई पचास प्रतिशतसम्म कैद सजायमा छुट दिन सकिने भन्ने देखिन्छ। निवेदकले हाल आफ्नो उमेर ७३ वर्ष भइसकेको भनी निवेदनमा उल्लेख गरेको देखिँदा निजको हकमा उक्त ऐनको दफा १२ (१) (ख) को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम कैद सजायको पचास प्रतिशत कैद भुक्तान नभई २५ प्रतिशत मात्र भुक्तान भएको भन्ने निवेदन बेहोराबाट देखिएको यस स्थितिमा निजको हकमा ऐ.ऐनको दफा १२(१)(ख) को व्यवस्था आकर्षित हुने नदेखिने।

यी निवेदकले माग गरेको सर्वोच्च अदालत नियमावलीको नियम ६६(१०) को कानूनी व्यवस्थालाई हेर्दा कुनै पक्षलाई उपनियम २ वा ५ बमोजिम पुनरावेदनको म्याद जारी नभएको वा

बेरितपूर्वक जारी भएको कारण कुनै पक्षले साधकको रोहबाट मुद्दा फैसला भएपछि पुनरावेदनपत्र दर्ता गर्न ल्याएमा र सोसम्बन्धमा आवश्यक जाँच गर्दा बेहोरा मनासिब देखिएमा सो पुनरावेदन पत्र दर्ता गरी पूर्णइजलासबाट कारबाही र किनारा गरिने छ" भन्ने पाइन्छ । यी निवेदकको पुनरावेदन नपरेको ले साधक सदरका लागि यस अदालतमा पेस हुन आएकोमा निवेदकका नाउँमा रुद्रपुर गा.वि.स. वडा नं. ९ घर भई सिद्धार्थनगर नगरपालिका वडा नं. १ मा मिति २०५९।१।१२ मा म्याद तामेल हुँदा बेपत्ते तामेल भएको देखिएकोले उक्त म्याद बदर गरी निज प्रतिवादीले अनुसन्धानको क्रममा उल्लेख गरेको स्थायी ठेगाना जिल्ला रुपन्देही रुद्रपुर गा.वि.स. वडा नं. ९ हनुमान नगरमा पुनरावेदनको म्याद तामेल गरी पठाइदिनु भनी आदेश भएको र उक्त वतनमा पुनः बेपत्ते तामेल भई आएकाले यस अदालतबाट मिति २०६२।०९।२० मा साधक सदर हुने फैसला भई मुद्दा अन्तिम भई बसेको भन्ने मिसिलसाथ पेस भएका कागज प्रमाणबाट देखिँदा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम ६६(१०) को अवस्थाको विद्यमानता रहेको मान्न नमिल्ने ।

जेष्ठ नागरिक ऐन, २०६३को दफा १२ को उपदफा १(ख) को व्यवस्थाले ७०-७५ वर्षको हकमा ५० प्रतिशतसम्म सजायमा छुट दिने भन्ने व्यवस्था भएको र रिट निवेदक हाल ७३ वर्षको रहेको देखिँदा तथा निवेदक मिति २०७८।०२।०६ देखि थुनामा रहेको र जन्मकैदको ५० प्रतिशत कैद भुक्तान गर्न साबिक कानूनबमोजिम समेत १० वर्ष कैद सजाय भुक्तान गरेको हुनुपर्नेमा सोसमेत नदेखिएको अवस्थामा उक्त कानूनले दिएको सुविधा प्राप्त गर्न सक्ने अवस्था देखिएन । तसर्थ, रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : सीता रेग्मी

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल पौष ११ गते रोज ४ शुभम् ।

३३

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री अब्दुल अजीज मुसलमान, ०७६-CR-०४५१, गोबध, उम्बरबहादुर गुरुङ वि. नेपाल सरकार

पुनरावेदक प्रतिवादीले यसै वारदातका सम्बन्धमा लोके रावतसमेतका प्रतिवादीहरूको हकमा मिति २०६६।१२।२९ मा भवितव्य ठहरी सुरु अदालतबाट फैसला भएको र उक्त फैसला अन्तिम भई बसेको स्थितिमा मलाई अभियोग दाबीबमोजिम ६ वर्ष कैद गरेको नमिलेको भनी जिकिर लिएतर्फ विचार गर्दा, यी प्रतिवादीको हकमा मिति २०६५।०२।२० मा भएको फैसलाउपर प्रतिवादीले पुनरावेदनको हदम्याद नघाई पुनरावेदन दर्ता गरेको देखिएको र सोही आधारमा निजको पुनरावेदन जिकिर नै खारेज गर्ने गरी उच्च अदालत सुर्खेतबाट भएको फैसला मिलेको देखिएकाले कानूनले तोकेको अवधिभित्र उपचार नखोजी कानूनले निर्दिष्ट गरेको अवधिमा पुनरावेदन नै नगर्ने अनि अरु आफूसरहका प्रतिवादीको हकमा सुरु अदालतबाट भवितव्य ठहरेकाले आफ्नो हकमा पनि भवितव्य नै कायम हुनुपर्छ भन्नुलाई जायज मान्न सकिने नदेखिने ।

वादी पक्षका साक्षीहरूको भनाइमा विरोधाभाष रहेकोले प्रमाणग्राह्य नहुने भन्ने सम्बन्धमा यी प्रतिवादीले जाहेरवालाको गोरुलाई वारदात मितिमा कुटपिट गरेको भन्ने मूल तथ्यमा सबैको भनाइमा एकरूपता देखिएको स्थितिमा यसबाहेक सानातिना कुरामा फरक बकपत्र भयो भन्दैमा त्यसलाई प्रमाणमा नलिने भन्ने हुँदैन । तसर्थ, भन्ने तरिका र शैली फरक भए पनि यी प्रतिवादी कसुरदार हुन् भन्ने कुरा व्यक्त गर्दा वादी पक्षका सबै साक्षीको भनाइमा समानता नै देखिएकोले वादीका साक्षीको भनाइ प्रमाणमा लिन मिल्ने नै देखियो । अर्कोतर्फ यी पुनरावेदक प्रतिवादीले गोरुलाई नकुटेको भनी आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरेको भए पनि निजको इन्कारी

बयान पुष्टि गर्ने ठोस र वस्तुनिष्ठ प्रमाण निजले गुजार्न सकेको पनि देखिँदैन । यी प्रतिवादीसमेत समूहमा रही जाहेरवालाको गोरुउपर कुटपिट भएको देखिएको स्थितिमा पुनरावेदक प्रतिवादीको कसुरमा संलग्नता नरहेको भनी मान्न सकिने अवस्थासमेत नदेखिने ।

यी पुनरावेदक प्रतिवादी डम्बरबहादुर गुरुङ्गले सुरु सुर्खेत जिल्ला अदालतको फैसलाउपर दायर गरेको पुनरावेदन पत्र म्यादभित्र दायर भएको नदेखिँदा पुनरावेदन पत्र खारेज हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत सुर्खेतबाट मिति २०७५।०३।२४ मा भएको फैसला न्यायसम्मत भई मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा

कम्प्युटर :- पुजा कँडेल

इति संवत् २०८१ साल असार २० गते रोज ५ शुभम् ।

३४

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा. न्या.श्री अब्दुल अजीज मुसलमान, ०७६-CR-०९७२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, उमेशबहादुर पौडेल वि. चितवन जिल्ला अदालत, भरतपुरसमेत

पुनरावेदक/निवेदकले आफू हस्तबहादुर वि.क. नभई आफू हस्तबहादुर पौडेल भएको भनी पुनरावेदन जिकिर लिएकोमा निजले प्रथमपटक नागरिकताको प्रमाण पत्र प्राप्त गर्दाको वितरणको ढड्डामा हस्तबहादुर वि.क. लेखिएकोमा मिति २०६५।०४।२८ को निर्णय अनुसार पौडेल भनी सच्याई तेस्रो प्रतिलिपि लिएको भन्ने सोही नागरिकताको प्रमाण पत्र प्रदान गर्दा खडा भएको सक्कल मूल ढड्डाको कैफियतमा तेस्रो प्रतिलिपि प्रदान गर्दाको बेहोरा भनी उल्लेख भएको देखिन आयो । पुनरावेदक/निवेदक विरुद्ध माथि उल्लिखित तीन थान कसुर अपराध दायर हुनुअगाडि नै मिति २०३६।१२।०१ मा लिएको नागरिकताको प्रमाण पत्रमा आफ्नो नाम हस्तबहादुर पौडेल रहेको र हस्तबहादुर वि.क.ले गरेको कसुरमा आफूलाई सजाय गर्न मिल्दैन भन्ने पुनरावेदकको मूल

दाबी जिकिर उल्लिखित प्रमाणबाट खण्डित भएकोले अमुक व्यक्तिले गरेको कसुरमा आफूलाई सजाय भागी गराउन मिल्दैन भन्ने पुनरावेदक/निवेदकको जिकिर विश्वसनीय र ग्रहणयोग्य मान्न नमिल्ने ।

मिति २०३६।१२।०१ को नागरिकताको प्रमाण पत्र वितरणसम्बन्धी सुरुको सक्कल ढड्डामा हस्तबहादुर वि.क. नाम र थर रहेकोमा सर्जमिन मुचुल्काका आधारमा मिति २०६५।०४।२८ मा थर सच्याई लिएको तेस्रो प्रतिलिपिमा पौडेल उल्लेख भएको देखिए पनि उही मितिको उही नागरिकता नम्बरको सुरु नागरिकतामा हस्तबहादुर वि.क. उल्लेख भएकोमा वारदातपछि थर सच्याई पौडेल बनाइए पनि पिताको नाम र नागरिकता नम्बरसँगै सच्याइएको कैफियत बेहोरा सुरु ढड्डामा नै उल्लेख भएको देखिएबाट हस्तबहादुर वि.क. र हस्तबहादुर पौडेल एउटै व्यक्ति रहेकोमा समेत द्विविधा रहेको देखिएन । मिति २०६५।०४।२८ मा पौडेल थर सच्याई नागरिकता लिनुअघि आफ्नो विरुद्ध दायर भएका तीन थान् फौजदारी मुद्दामा कारबाही भई मिति २०६०।०३।१८ को फैसलाबमोजिम पुनरावेदक/निवेदक हस्तबहादुर वि.क.लाई प्रत्येक मुद्दामा १० वर्षका दरले कैद र रु.६४,०००।- का दरले जरिवाना हुने ठहर भएका फैसला अन्तिम भएको अवस्थामा सो फैसलाबाट लागेको कैद र जरिवानाको लगत असुलउपर गर्ने कार्यमा बाधा, अवरोध गरी सजाय छल्ने मनसायबाट अभिप्रेरित भई मिति २०६५।०४।२८ मा पौडेल थर बनाइएको स्वतः स्पष्ट भइरहेको देखियो । नाम थर परिवर्तित हस्तबहादुर पौडेललाई हस्तबहादुर वि.क.को नामको कैद र जरिवाना असुल गर्ने गरी चितवन जिल्ला अदालत, तहसिल शाखाले कैदी पुर्जा दिई कारागार कार्यालय, चितवनमा पठाएको कानूनबमोजिमको मुद्दाको नियमित प्रक्रिया (Due Process) को सिलसिलाको काम कारबाहीको अवस्थामा पुनरावेदक/निवेदक सफा

हात र शुद्ध हृदय लिई अदालत प्रवेश गरेकोसमेत नदेखिँदा कानूनबमोजिम नियमित प्रक्रियाको कैदबाट मुक्त गरिपाउँ भनी दिएको बन्दीप्रत्यक्षीकरण निवेदन उच्च अदालत पाटन, हेटौँडा इजलासबाट खारेज गर्ने गरी गरेको फैसला मिलेन भन्न मिल्ने देखिएन । व्यक्तिलाई गैरकानूनी थुनाबाट मुक्त गर्न जारी हुने बन्दी प्रत्यक्षीकरणको रिटको पूर्वावस्था भनेको थुनामा राखिएको व्यक्ति वास्तवमा गैरकानूनी थुनामा रहेको हुनुपर्दछ । प्रस्तुत पुनरावेदनमा पुनरावेदक/निवेदक अदालती प्रक्रियाबमोजिम कसुरदार ठहर भएको मुद्दाको रोहमा पक्राउ परी थुनामा रहेको देखिएको र अमुक व्यक्तिको कसुर अपराधमा आफूलाई थुनामा राख्न नमिल्ने भन्ने निवेदन जिकिर तथ्य प्रमाणहरूबाट खण्डित भइसकेको देखिँदा पुनरावेदक/निवेदकको थुनालाई गैरकानूनी मान्न नमिल्ने हुँदा उच्च अदालत पाटन, हेटौँडा इजलासको फैसलालाई अन्यथा गर्न नपर्ने ।

चितवन जिल्ला अदालतबाट मिति २०६०।०३।१८ मा भएका फैसलाहरूबमोजिमको कैद र जरिवानाको लगत असुल फर्छौँट गरी फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा चितवन जिल्ला अदालत, तहसिल शाखाले पुनरावेदकलाई कैदी पुर्जो दिई कारागार कार्यालय, चितवनमा पठाउने गरी मिति २०७५।१२।११ मा गरेको आदेश कानूनबमोजिमकै भएको भनी पुनरावेदकको बन्दी प्रत्यक्षीकरणको निवेदन खारेज गर्ने गरी उच्च अदालत पाटन, हेटौँडा इजलासबाट मिति २०७६।०३।११ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : मोहनप्रसाद बेल्बासे

कम्प्युटर : पुजा कंडेल

इति संवत् २०८० माघ ३ गते रोज ४ शुभम् ।

३५

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा. न्या.श्री अब्दुल अजीज मुसलमान, ०७९-CR-१११८, अपहरण तथा शरीर

बन्धक, सरोज घोरासैनी वि. नेपाल सरकार

मिसिल संलग्न प्रहरी प्रतिवेदन, जाहेरवाला श्यामसुन्दर अग्रवालको किटानी जाहेरी दरखास्त, जाहेरवालाले प्रतिवादीहरूउपर गरेको किटानी सनाखत कागज, जाहेरवालाको घटना विवरण कागज, जाहेरवालाको किटानी बकपत्र, प्रतिवादी प्रकाश लामिछानेसमेतलाई पोल गरी प्रतिवादी सरोज घोरासैनीसमेतले आफूहरू कसुरमा संलग्न रहेको भनी मौकामा गरेको किटानी साबिती बयान, प्रतिवादी किशोर गिरी मौकामा र अदालतमा साबित रही बयान गर्दा प्रतिवादी सरोज घोरासैनीसमेत आफूले वारदात घटाई जाहेरवाला श्यामसुन्दर अग्रवाललाई बन्धक बनाई फिरौती रकम रु.१०,७०,०००।- लिई बराबरी बाँडी खाएको भनेको देखिएको समेतको सबुत प्रमाणहरूबाट पुनरावेदक/प्रतिवादी सरोज घोरासैनीसमेतले जाहेरवाला श्यामसुन्दर अग्रवाललाई अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको २, ३ र ७ नं. अन्तर्गतको कसुर गरेको पुष्टि हुनआएको देखियो । सो देखिनाले प्रतिवादी सरोज घोरासैनीलाई सोही महलको ३ नं. बमोजिम कैद ८ वर्ष र जरिवाना रु.५५,०००।- (पचपन्न हजार) हुने ।

साथै सो वारदात सङ्गठित रूपमा भएको देखिँदा ऐ. महलको ७ नं. बमोजिम २ वर्ष थप कैद गरी जम्मा कैद जनही १० वर्ष हुने । पुनरावेदक/प्रतिवादीसमेतले जाहेरवाला श्यामसुन्दर अग्रवाललाई बन्धक बनाई निजको साथमा रहेको नगद रु.७०,०००।- राधिका सुनारले जाहेरवालाको पसलबाट रु.२,००,०००।- र चेक साटी रु. ८,००,०००।- गरी जम्मा रु.१०,७०,०००।- फिरौती लिएको पुष्टि भएको सो रकम प्रतिवादीहरू प्रकाश लामिछाने, किशोर गिरी र सरोज घोरासैनीले बराबर बाँडी खाएको देखिँदा प्रतिवादीहरू प्रकाश लामिछाने र किशोर गिरीबाट दामासाहीले हिसाब गर्दा हुन आउने जनही रु.३,५६,६६७।- (तीन लाख छपन्न हजार छ

सय सतसट्ठी) का दरले र पुनरावेदक/प्रतिवादी सरोज घोरासैनीबाट बरामद भएको रु.६०,०००।- समेत फिरोती रकममध्येकै भन्ने देखिएको हुँदा सो रकम जाहेरवालाले फिर्ता पाउने र सो फिर्ता पाउने रकम घटाई निज पुनरावेदक/प्रतिवादी सरोज घोरासैनीबाट अपुग बाँकी रहने रु.२,९६,६६७।- बराबरको बिगोसमेत जाहेरवालाले अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १२ नं. बमोजिम बिगो भराइपाउने र पुनरावेदक/प्रतिवादीसमेतले जाहेरवालालाई बन्धक बनाई अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १२ नं. बमोजिम निजहरूले जाहेरवालाबाट लिएको पुष्टि हुन आएको फिरोती बिगो रकम रु.१०,७०,०००।- दामासाहीको हिसाबले यी पुनरावेदक/प्रतिवादीले जरिवाना रु.३,५६,६६७।- (तीन लाख छपन्न हजार छ सय सतसट्ठी) बुझाउनुपर्ने ठहरेको सन्दर्भमा हाल प्रचलित मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को अपहरण वा शरीर बन्धकसम्बन्धी कसुरमा बिगोबमोजिम जरिवाना गर्ने कानूनी व्यवस्था नभएको अवस्थामा केही नेपाल कानूनलाई संशोधन, एकीकरण, समायोजन र खारेज गर्ने सम्बन्धमा व्यवस्था गर्न बनेको ऐन, २०७४ को दफा ३९ को उपदफा (२) को खण्ड (ख) को प्रतिबन्धात्मक वाक्यांशमा “कुनै फौजदारी कसुरको सजाय मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएको भन्दा बढी रहेछ भने मुलुकी अपराध संहितामा लेखिएको हदसम्म मात्र सजाय हुने” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेकोले तत्काल प्रचलित मुलुकी ऐन, अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १२ नं. बमोजिम रु.३,५६,६६७।- (तीन लाख छपन्न हजार छ सय सतसट्ठी) का दरले पुनरावेदक/प्रतिवादीलाई जरिवाना गर्ने गरी सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी हुने र वादी नेपाल सरकारले प्रतिवादी सरोज घोरासैनीसमेतबाट पीडित जाहेरवाला श्यामसुन्दर अग्रवाललाई क्षतिपूर्तिसमेत दिलाइपाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिर लिएको सन्दर्भमा

पुनरावेदक/प्रतिवादीबाट रु.१०,०००।- (दश हजार) क्षतिपूर्ति भराइदिने ठहर्‍याई उच्च अदालत, पाटनबाट मिति २०७८।०७।१५ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : मोहनप्रसाद बेलबासे
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन
इति संवत् २०८० पौष २२ गते रोज १ शुभम्।

३६

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा. न्या.श्री महेश शर्मा
पौडेल, ०७८-CR-०२७४, लागु औषध (अफिम),
भक्तबहादुर ब्लोन वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी भक्तबहादुर ब्लोनले निजको घरबाट बरामद भएको लागु औषध बेचविखन गर्न मैले ल्याएको होइन भनी आरोपित कसुरमा अदालतमा इन्कार भएपनि आफ्नो घरबाट प्रतिबन्धित लागु औषध (अफिम) २०० ग्राम बरामद भएको तथ्यलाई भने निजले मौकामा र अदालतमा समेत स्वीकार गरेको पाइन्छ। प्रतिवादीको घरबाट २०० ग्राम लागु औषध बरामद भएको भनी सुदिपकुमार लामा समेतका मानिसहरूले गरेको घटना विवरण कागज, वस्तुस्थिति मुचुल्काका राजेन्द्र बलले गरेको बकपत्र बरामदी मुचुल्काका राजेन्द्र बलले गरेको बकपत्र र स्वयं प्रतिवादीका साक्षी विकास भोलनले गरेको बकपत्रसमेतबाट पुष्टि भएको देखिने।

प्रस्तुत मुद्दामा अन्यथा प्रमाणित नभएको अवस्थामा प्रतिवादीको घरबाट बरामद भएको लागु औषध मेरो साना साना बच्चाहरूले प्रहरीले फाँडी नष्ट गरेको गाउँघरको (अफिम) औषधी हुन्छ भनी टिपी घरमा ल्याई राखेछन्। मैले उक्त (अफिम) घरमा ल्याई राखेको होइन। मेरो साना बच्चाले घरमा राखेको भन्ने कुरा मलाई थाहा थिएन। उक्त (अफिम) मेरो होइन भनी प्रतिवादीले अदालतमा गरेको इन्कारी बयान मात्र कसुरबाट उन्मुक्ति पाउने आधार हुन सक्ने देखिएन। साना बच्चाहरूले अफिमको फुल वा गोटी

घरमा ल्याए पनि त्यसलाई प्रशोधन गरी सेवनयुक्त बनाई प्लास्टिकमा बेरी लुकाई छिपाई राख्ने कामसमेत बालवच्चाले गरेको भनी पत्याउन सक्ने अवस्था रहदैन । प्रतिवादीको भनाइलाई मान्ने हो भने पनि कच्चा अफिममा फुल गोटीलाई प्रशोधन गरी सेवनयुक्त गराउने कार्य यिनै प्रतिवादीबाट हुनसक्ने यथार्थतालाई प्रतिवादीले अन्यथा देखाउने गरी बयान गरे पनि सो पुष्टि हुन नसकेको ।

प्रतिवादी भक्तबहादुर ब्लोनलाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को (घ), (ङ) र (च) बमोजिमको कसुरमा सोही ऐनको दफा १४ को उपदफा (१) को (छ)(३) बमोजिम १६(सोह) वर्ष कैद र रु ६,००,०००।- (छ लाख) जरिवाना हुने ठहर गरेको सुरु मकवानपुर जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको उच्च अदालत पाटन, हेटौँडा इजलासको मिति २०७७।११।०४ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : प्रेम नारायण पराजुली

कम्प्युटर : पुजा कंडेल

इति संवत् २०८१ साल भाद्र १४ गते रोज ६ शुभम् ।

३७

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल, ०७८-CR-११३२, जबरजस्ती करणी, रुद्रबहादुर पुन वि. नेपाल सरकार

मैले पीडितको संवेदनशील अंग छोएको पुष्टि भएमा पनि बालयौन दुरुपयोगतर्फ सजाय हुनुपर्छ भनी प्रतिवादीले पुनरावेदन जिकिर लिएको देखिन्छ । मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २१९ (२) (ग) ले गुदद्वार वा मुखमा लिङ्ग पसाएमा, गुदद्वार, मुख वा योनिमा केही मात्र पसेको भएमा, लिङ्ग बाहेक अन्य कुनै वस्तु योनिमा प्रवेश गराएमा पनि जबरजस्ती करणी गरेको मानिने छ” भन्ने कानूनी ब्यवस्था रहेको पाइन्छ । पीडितको योनिमा प्रतिवादीले लिङ्ग पसाएको भन्ने नदेखिए पनि निजको योनिमा हातको औला छिराएको

भन्ने तथ्य प्रतिवादीको मौकाको बयान, कन्याजाली च्यालिएको (Hymen Tear) भन्ने पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन, पीडितको अनुसन्धानको क्रममा भएको कागज र सो कागज बमोजिमको निजको अदालतमा भएको बकपत्रसमेतका प्रमाणबाट पुष्टि भएको देखिँदा उल्लिखित कानूनी प्रावधान अनुरूप पीडितको योनिमा औंला छिराएको अवस्थामा समेत जबरजस्ती करणीसम्बन्धी कसुर हुने हुँदा प्रतिवादीले पीडितलाई आशय करणी गरेको भन्न मिल्नेसमेत नदेखिने ।

मिसिल संलग्न प्रतिवादीउपरको किटानी जाहेरी र जाहेरवालाको अदालतमा भएको बकपत्र, पीडितको अनुसन्धानको क्रममा भएको कागज र अदालतमा भएको बकपत्र, प्रतिवादीको मौकाको बयान, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदन र स्वास्थ्य परीक्षण गर्ने डाक्टरको अदालतमा भएको बकपत्र, दामोदर पाण्डेसमेतका मानिसहरूले गरेको वस्तुस्थिति मुचुल्कासमेतका मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीले दश वर्षभन्दा माथि चौध वर्षभन्दा कम उमेर भएकी पीडित परिवर्तित नाम ५० पन्ध्र बिगाहालाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने अभियोग दाबी पुष्टि भएको देखियो । यसअवस्थामा निज प्रतिवादीलाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २१९ (३)(ख) बमोजिम १८ (अठार) वर्ष कैद सजाय हुने र प्रतिवादीले पीडितलाई ऐ. दफा २२८ बमोजिम रु.१,००,०००।- (एक लाख) क्षतिपूर्तिसमेत भराइदिने ठहर गरेको रुपन्देही जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासको फैसला मिलेको देखिँदा अन्यथा गरिरहनु परेन । अतः अभियोग दाबीबाट सफाई पाउँ भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर र उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासको फैसला त्रुटिपूर्ण रहेको हुँदा प्रत्यर्थी झिकाउने आदेश गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदकको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् वैतनिक

अधिवक्ताको बहस जिकिरसँगसमेत सहमत हुन नसकिने।

प्रतिवादी रुद्रबहादुर पुनलाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा २१९ (३)(ख) बमोजिम १८ (अठार) वर्ष कैद सजाय हुने र प्रतिवादीले पीडितलाई ऐ. दफा २२८ बमोजिम रु.१,००,०००।- (एक लाख) क्षतिपूर्तिसमेत भराइदिने ठहर गरेको रुपन्देही जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको उच्च अदालत तुलसीपुर, बुटवल इजलासको मिति २०७८।०५।२२ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : प्रेम नारायण पराजुली
कम्प्युटर :- पुजा कंडेल

इति संवत् २०८१ साल भाद्र १४ गते रोज ६ शुभम्।

३८

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल, ०८१-WH-००४९, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, युद्धबहादुर के.सी वि. सर्वोच्च अदालत प्रशासन शाखासमेत

शारदा सुवेदीसमेतको जाहेरीले वादी नेपाल सरकार प्रतिवादी यिनै निवेदक युद्धबहादुर के.सी. भएको वैदेशिक रोजगार कसुर मुद्दामा दुई वर्ष छ महिना कैद सजाय र रु २,५०,०००।- जरिवाना हुने जाहेरवालाहरूले बिगो र सो बिगोको पचास प्रतिशतले हुने हर्जानासमेत प्रतिवादीबाट भराइलिन पाउने ठहरी मिति २०८१।०२।०६ मा फैसला भएको देखिन्छ। सो फैसलाउपर निवेदकले मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १३७ बमोजिमको सुविधा लिई पुनरावेदन दर्ता गरिपाउँ भनी यस अदालतमा पुनरावेदन पत्रसाथ निवेदनसमेत पेस गरेको देखियो। सो निवेदनमा निवेदकको मागबमोजिमको सुविधा प्रदान गर्न मिलेन भनी यस अदालतका सहरजिस्ट्रारबाट मिति २०८१।०४।०६ मा आदेश भएको देखिन्छ। उक्त आदेशमा चित्त नबुझेको भए निवेदकले सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०७४ को नियम १०(१)

बमोजिम आदेश भएका मितिले १५ दिनभित्र यस अदालतमा निवेदन दिन सक्नेमा निजले सोबमोजिमको निवेदन दिएको नदेखिँदा उक्त आदेश अन्तिम रहेको देखियो। यसै अदालतबाट कानूनबमोजिम भएको दरपिठ आदेश अन्तिम भएर बसेको अवस्थामा सो विपरीत बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट जारी गर्न मिल्ने कानूनी आधारसमेत देखिँदैन। दरपिठ आदेश विरुद्ध निवेदन दिने कानूनी प्रावधान रहेको अवस्थामा सोलाई चुनौती नदिई थुनामा रहेको अवस्थामा निवेदकको थुनालाई गैरकानूनी मान्न मिल्नेसमेत नदेखिने।

अतः निवेदक वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मुद्दा पुर्पक्षका लागि माग भएको धरौटी रकम बुझाउन नसकी हालसम्म पनि थुनामा नै रही मुद्दाको पुर्पक्ष गरिरहेको र कैद लागेको व्यक्ति थुनामा बसेको रहेछ भने निजले थुनामा नै बसी पुनरावेदन गर्नुपर्ने भन्ने कानूनी प्रावधान रहेको, साथै वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको फैसलाउपर निवेदकले यस अदालतमा मुद्दा नं.०८० CR-००४८ को पुनरावेदन पत्र मिति २०८१।०४।०६ मा दर्ता गरी कारबाहीयुक्त अवस्थामा रहेको देखिँदा निवेदकको थुना गैरकानूनी भन्ने नदेखिने।

वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट भएको फैसलाबमोजिम निवेदकलाई लागेको कैद तथा जरिवानाबापतमा निज थुनामा रहेको, मुलुकी फौजदारी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा १३७ बमोजिमको सुविधा प्रदान गरी पुनरावेदन पत्र दर्ता गरिपाउँ भनी निवेदकले दिएको निवेदनमा निवेदकको मागबमोजिमको सुविधा प्रदान गर्न मिलेन भनी यस अदालतबाट मिति २०८१।०४।०६ मा भएको आदेश अन्तिम भई बसेको र वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट भएको मिति २०८१।०२।०६ को फैसलाउपर निजले मिति २०८१।०४।०६ मा पुनरावेदन पत्र दर्ता गरी यस अदालतमा कारबाहीयुक्त अवस्थामा रहेको देखिँदा निवेदकको थुनालाई

गैरकानूनी थुना भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न मिलेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।
इजलास अधिकृत :- प्रेमनारायण पराजुली
कम्प्युटर :- पुजा कंडेल
इति संवत् २०८१ साल भाद्र ३० गते रोज १ शुभम् ।

३९

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा. न्या. महेश शर्मा पौडेल,
०८१-WH-००२२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, अजय शंकर
झा "रूपेस वि. जिल्ला सरकारी वकिलको कार्यालय
सुर्खेतसमेत

कानूनको विवादमा परेका नाबालक परिवर्तित नामथर ६४ छिन्चु (को) लाई रु ६,००,०००/- जरिवाना गर्ने गरी सुर्खेत जिल्ला अदालतबाट फैसला भएको देखिन्छ । बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०७५ को दफा ३६(२) ले दश वर्षभन्दा माथि चौध वर्षभन्दा मुनिका बालबालिकाले जरिवानाबापतको कसुर गरेमा निजलाई सम्झाई बुझाई गरी छाडिदिनुपर्ने हुन्छ । मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४६(३)(ग) मा १४ वर्षमुनिको नाबालकको हकमा जरिवानाबापत कैदमा राख्ने व्यवस्था नै राखिएको देखिँदैन । नाबालकलाई जरिवानाबापतमा सजाय गर्ने सम्बन्धमा कानूनमा प्रस्ट व्यवस्था नगरेको अवस्थामा अदालतले स्वविवेक प्रयोग गरी जरिवाना गर्न नमिल्ने ।

परिवर्तित नामथर ६४ छिन्चु (ब२) को जाहेरीले वादी नेपाल सरकार र प्रतिवादी परिवर्तित नामथर ६४ छिन्चु (को) भएको जबरजस्ती करणी मुद्दामा कानूनको विवादमा परेका नाबालक परिवर्तित नामथर ६४ छिन्चु (को) लाई सुर्खेत जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलाले १ वर्ष बाल सुधार गृहमा रहने र रु.६,००,०००/- (छ लाख रुपियाँ) जरिवाना तथा पीडित राहत कोषमा रु.२४,०००/- दाखिला गर्ने गरी सजाय भएको । सो फैसलाउपर प्रतिवादीले पुनरावेदन नगरी फैसला अन्तिम भई बसेको देखिन्छ । सुर्खेत जिल्ला अदालतको फैसलाउपर

निवेदकले पुनरावेदन नगरेको भए तापनि फैसला कार्यान्वयन गर्ने अवस्थामा समेत सो फैसलाको कार्यान्वयन कानूनअनुरूप भएको छ वा छैन भनी हेर्न मिल्ने नै हुन्छ । फैसला कार्यान्वयन गर्ने अवस्थामा कानूनविपरीत भएका फैसला कार्यान्वयन गरी कुनै पनि अवस्थामा नागरिकलाई गैरकानूनी थुनामा राख्नु उचित नहुने ।

निवेदक मुद्दा पुर्पक्षका क्रममा २२ दिन प्रहरी हिरासतमा रहेको, निवेदकलाई अदालतले खोजेका बखत उपस्थित गराउने सुरुमा अभिभावक जिम्मा लगाउने भन्ने सुर्खेत जिल्ला अदालतको आदेशानुसार निज मिति २०७७।१२।०८ देखि अभिभावकको जिम्मामा रही मिति २०७७।१२।२४ मा अदालतमा उपस्थित भएको देखिन्छ । सो अवधिलाई समेत हिरासतमा बसेको अवधी गणना गर्दा निज १६ दिन हिरासतमा बसेको देखियो । निवेदक २०८१।०१।१० देखि आजसम्म पनि बाल सुधार गृह बाँकेमा रहेको देखिँदा निवेदकबाट असुल गर्नुपर्ने कैद अवधि छ महिना भुक्तान भइसकेको देखियो । यस अवस्थामा यी निवेदकलाई सो अवधिभन्दा बढी अवधी बाल सुधार गृहमा राखेको अवस्थालाई कानूनी थुना मान्न नमिल्ने ।

निवेदक नाबालक परिवर्तित नामथर ६४ छिन्चु (को) लाई बाल सुधार गृहबाट छाडिदिनु भनी बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत : प्रेमनारायण पराजुली
कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०८१ साल भाद्र ३० गते रोज १ शुभम् ।

४०

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री महेश शर्मा पौडेल,
०७९-CR-०७४९, अपहरण तथा शरीर
बन्धक र जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. चन्चले
माइला भन्ने ज्ञानबहादुर थिङ्गसमेत

प्रतिवादी चन्चले माइला भन्ने ज्ञानबहादुर

थिङलाई अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १ नं. तथा २ नं. को कसुरमा सोही महलको ३ नं. अनुसार सजाय गरी सामूहिक रूपमा जबरजस्ती करणी गरेबापत जबरजस्ती करणी महलको ३(क) नं. बमोजिम थप सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा विचार गर्दा, प्रतिवादीमध्येका कुमार मुक्तान र माया लोपचन मेरो घरमा आई छोरी वर्ष १६ की परिवर्तित नाम क्यानेश्वर (१०) लाई राम्रो जागिर लगाइदिने प्रलोभन देखाई घरबाट छोरीलाई लिई गएका भन्ने परिवर्तित नाम क्यानेश्वर (११) को जाहेरी दरखास्त रहेको देखिन्छ । सो जाहेरी दरखास्तमा यी प्रतिवादी जाहेरवालाको घरमा गएको भन्ने उल्लेख भएको पाइँदैन । पीडितको अनुसन्धानको क्रममा भएको कागज र अदालतमा भएको बकपत्रसमेतबाट यी प्रतिवादीले पीडितलाई निजको घरबाट लिई आएको भन्ने देखिँदैन । पीडितलाई राखिएको हरिवनको विशाल बाबा होटलमा निजलाई डर त्रास धम्की दिई कोठामा बन्धक बनाइराखेको भन्नेसमेत मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट पुष्टि भएको नदेखिँदा प्रतिवादी चन्चले माइला भन्ने ज्ञानबहादुर थिङको हकमा साबिक मुलुकी ऐन, अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १ नं. तथा २ नं. को कसुर पुष्टि हुन नसकेको ।

त्यसैगरी प्रतिवादीहरू चन्चले माइला भन्ने ज्ञानबहादुर थिङ र नारायणराज उप्रेतीलाई सामूहिक रूपमा जबरजस्ती करणी गरेकोमा सोतर्फ समेत सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरका सम्बन्धमा विचार गर्दा, माथिका प्रकरणहरूमा विवेचना गरिएबमोजिम प्रतिवादी नारायणराज उप्रेतीउपरको अभियोग दाबी पुष्टि हुन नसकी निजले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर भएको हुँदा निजको प्रस्तुत वारदातमा संलग्नता देखिएन । प्रतिवादी चन्चले माइला भन्ने ज्ञानबहादुर

थिङबाहेक अन्य व्यक्तिले समेत पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको भन्ने ठोस प्रमाणबाट पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा त्यसतर्फको अभियोग दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याएको उच्च अदालत जनकपुरको फैसलासमेत अन्यथा गर्नुपर्ने देखिएन । अतः उच्च अदालत जनकपुरको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिमको कसुरमा सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर र उच्च अदालतको फैसला त्रुटिपूर्ण हुँदा प्रत्यर्थी झिकाउने आदेश गरिपाउँ भन्ने विद्वान् उपन्यायाधिवक्ताको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादीमध्येको चन्चले माइला भन्ने ज्ञानबहादुर थिङलाई साबिक मुलुकी ऐन जबरजस्ती करणीको ३(३) नं. बमोजिम ९ (नौ) वर्ष कैद सजाय हुने गरी भएको सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतको मिति २०७७।१२।०३को फैसला निजको हकमा सदर हुने र प्रतिवादी नारायणराज उप्रेतीको हकमा सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी भई निजले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर्‍याएको उच्च अदालत जनकपुरको मिति २०७९।०२।२५ को फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : प्रेमनारायण पराजुली

कम्प्युटर : पुजा कंडेल

इति संवत् २०८१ साल भदौ १४ गते रोज ६ शुभम् ।

४१

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल, ०७५-८१-००२७, ०७५-८१-००२८, दूषित लिखत र कित्ताकाट बदर, शङ्करमान प्रधानसमेत वि. कुलमान तामाङ, विरेन्द्रमान प्रधानसमेत वि. कुलमान तामाङ

मिसिल संलग्न विवादको कि.नं.९८ को जग्गाको फिल्डबुक हेर्दा, काठमाडौं जिल्ला, नाडलेभारे गा.वि.स वडा नं.९(ड) कि.नं.९८ ज.रो.१२-०-० को जग्गाको किसानको नाम, थर, वतन महलमा फुलमान

तामाङ का.ई. पटापगाउँ, जग्गावालाको नाम, थर, वतन महलमा फुलमान तामाङ का.ई. पटापगाउँ र किसानको बेहोरामा यो जग्गा मेरै हक भोगको हो भनी उल्लेख भई नाप नक्सा भएको देखिन्छ । अर्कोतर्फ प्रत्यर्थी वादी कुलमान तामाङले मालपोत कार्यालय चावहिलमा उक्त कि.नं.९८ को कित्ता जग्गा दर्ता नामसारी गरिपाउँ भनी मिति २०७०।०४।१४ मा निवेदन दिएको देखिन्छ । उक्त निवेदन हेर्दा, पिता फुलमान तामाङको नाममा नाप नक्सा भएको, पिता फुलमान तामाङको मिति २०२९।१०।१५ मा, आमा काली तामाङको मिति २०३०।०५।१० मा आ-आफ्नै कालगतिले परलोक हुनु भई निजहरूको हकदार छोरा म निवेदक मात्र रहेको भनी गा.वि.स.को सिफारिससहित उक्त जग्गा दर्ता नामसारी गरिपाउँ भनी निवेदन गरेको देखिन्छ । सो क्रममा मालपोत कार्यालयले मोठ र लगत भिडाउँदा काठमाडौं कपनमा मोठ फेला नपरेको र मौजा प्रताप ६/३१ फुलमान तामाङका नाउँमा पाटेघर - १३० लगत कायम छ भनी लगत फाँटबाट प्रमाणित गरेको देखिन्छ । यस तथ्यबाट कुलमान तामाङका नाउँमा पाटेघर - १३० लगत भएको भन्ने नै देखिने ।

अर्कोतर्फ दिने जितबहादुर राउत र लिने हसनादेवी प्रधानसमेत १२ जना भई मिति २०४४।०४।१३ मा र.नं.२१५(ख) बाट पारित राजीनामा लिखत हेर्दा, काठमाडौं नाङ्गलेभारे वडा नं.९(ड) कि.नं.९८ क्षेत्रफल १३-०-०मध्ये ९-०-० (नौ रोपनी) पूर्वतर्फबाट कित्ताकाट गरी मोही आफैं भनी बेहोरा उल्लेख गरी राजीनामाको लिखत पारित भएको देखिन्छ । उक्त पारित लिखतमा कित्ता नं.९८ को जग्गाको मोही आफैं अर्थात् निज फुलमान तामाङ नै हो भनी उल्लेख भएको छ । नाप नक्सा हुँदाका बखत खडा भएको फिल्डबुकमा किसानको नाम, थर, वतन महलमा र जग्गावालाको नाम, थर, वतन महलमा फुलमान तामाङ का.ई. पटापगाउँ भनी दुवै महलमा फुलमान तामाङ एउटै व्यक्तिको नाम उल्लेख भएको

देखिन्छ । यसरी फिल्डबुकमा लेखिएबमोजिमको बेहोरालाई अन्यथा हो भनी लगत कट्टा गरी निज जितबहादुर राउतका नाउँमा के कसरी उक्त जग्गा दर्ता नामसारी गरिएको हो भन्ने सबुद प्रमाण प्रतिवादीहरूले पेस दाखिल गर्न सकेको नदेखिने ।

वादीका बुबा फुलमान तामाङको नाममा सभे नापीमा कायम भएको कि.नं. ९८ को १३-०-०-०मध्ये ९-०-०-० जग्गा र.नं.२१५(ख) बाट पारित लिखत कानूनी रूपमा मान्य नदेखिएकोले उक्त र.नं.२१५/ख मिति २०४४।४।१३ को पारित लिखत बदर गर्नुपर्नेमा सो नगरी फिराद दाबी पुग्न नसक्ने भनी सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७२।०३।२१ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई वादी दाबीबमोजिम दूषित लिखत बदरसमेत हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत पाटनबाट मिति २०७३।०८।२० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : डोलनाथ न्यौपाने

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८० साल पुस १८ गते रोज ४ शुभम् ।

४२

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल, ०७५-WO-०२१२, उत्प्रेषण, परमादेशसमेत, गणेशबहादुर कुर्मी वि. भूमि व्यवस्था सहकारी तथा गरिबी निवारण मन्त्रालय सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत

मिसिल संलग्न जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय कपिलवस्तुका भूमि सुधार अधिकारीले मिति २०५१।११।२३ गरेको निर्णय आदेशमा भूमिसम्बन्धी ऐन २०२१ लागु भएपछि सो ऐनको दफा १३ बमोजिम विपक्षी राजेश्वरीदेवीको पति श्रीपत सिंह क्षेत्रीले जम्मा ज.वि. ३१३-८-११ को ७ नं. फाँटवारी पेस गरेको, निवेदकले दाबी गरेका जग्गा कि.नं. हरू भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को सम्बन्धित दफाहरू ७(३)(४), १३ र १५ लागु भएको मिति २०२२/०८/०१ पछि २०३०/११/१२ मा मात्र

राजीनामा रजिस्ट्रेसन पास गरिएको देखिएको, हदबन्दीभन्दा बढी देखिन आएको जग्गाहरू राजीनामा रजिस्ट्रेसन पास गरी लिएको लिखतले कानूनी मान्यता नपाउने स्पष्ट देखिएकोले श्रीपत सिं क्षेत्रीले जम्मा ज.वि. ३१३-८-११ को ७ नं. फाँटबारीलाई आधार मानी ७ नं. फाँटबारी छानबिन गर्दा ऐ. दफा १३ बमोजिम जग्गावालाले रोजेको जग्गा राख्न पाउने व्यवस्थाबमोजिम श्रीपत सिं क्षेत्री मर्दा निजको हकमा राजेश्वरीदेवीले ज. बि. २८-०-० राख्न पाउने कोटा कायम गरी अन्य अधिकतम हदभन्दा बढी ९२-१३-१३ जग्गा विभिन्न व्यक्तिलाई राजीनामा रजिस्ट्रेसन पास गरी लिएको लिखतलाई भूमि सुधार ऐन, २०२१ को दफा ७(३)(४) बमोजिम मान्यता नदिई सबै जग्गा जग्गावाला श्रीपत सिं क्षेत्रीको साथमा रहेको मानी यी निवेदकले दाबी गरेका जग्गासमेत जम्मा जग्गा बिगाहा १४३-७-२ भूमिसुधार कार्यालयको २०२५/०३/३१ को आदेश एवं भूमिसम्बन्धी ऐन (संशोधनसहित) २०२१ को दफा १५ बमोजिम प्राप्त भएको हुँदा सोहीबमोजिम यकिन हुन आएकोले सो जग्गाहरू कार्यालयको अभिलेखमा आमदानी जनाई राख्ने ठहर्छ भनी उल्लेख भएको देखिने।

निवेदकका पितासमेत निवेदक भई यस अदालतमा दर्ता गरेको माथि उल्लिखित संवत् २०४२ सालको रिट नं. १५०१ मा भएको फैसलाअनुसार जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय कपिलवस्तुका भूमि सुधार अधिकारीले मिति २०५१/११/२३ मा पुनः गरेको निर्णयउपर निवेदकका पिताले कुनै कानूनी उपचारमा नगई चित्त बुझाई बसेको २३ वर्षपछि रिट निवेदकले मेरो पिताको मिति २०७५/०२/१५ मा र आमा सोना कुर्मीको मिति २०६९/०७/१० मा परलोक भएको र नजिकको एक मात्र हकवाला म निवेदक भएको भन्ने जनाई मिति २०७५/०३/१३ मा उल्लिखित जग्गा कित्ताहरू दा.खा. नामसारीको लागि मालपोत कार्यालय कपिलवस्तुमा निवेदन दर्ता

गरेको देखिन्छ। सो निवेदनउपर जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय कपिलवस्तुबाट रोक्का जग्गा फुकुवा भएमा नियमानुसार हुने गरी हाल मिसिल तामेलीमा पठाइदिनु भन्ने बेहोराको मिति २०७५/०३/१४ मा मालपोत कार्यालय कपिलवस्तुले आदेश गरेपछि विपक्षीको मिति २०४२/०१/२६ को निर्णय सो निर्णयका आधारमा म रिट निवेदकको पिताको नाममा रहेको उल्लिखित कित्ता जग्गाहरू रोक्का राख्न गरिएको पत्राचार अन्य सम्पूर्ण काम कारबाहीहरू तथा मिति २०७५/०३/१४ को मालपोत कार्यालय कपिलवस्तुको सो टिप्पणी आदेश उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरी निर्णय पर्चामा उल्लेख भएका र नभएर पनि रोक्का रहेका जग्गा कित्ताहरू फुकुवा गरी म रिट निवेदकका नाममा नामसारी गरिदिनु भनी विपक्षहरूका नाममा परमादेशलगायतका उपयुक्त आज्ञा आदेश जारी गरिपाउँ भनी यस अदालतको रिट क्षेत्राधिकारमा प्रवेश गरेको देखिने।

निवेदकका पिताले २०५१/११/२३ मा भूमिसुधार अधिकारीको निर्णयप्रति कुनै कानूनी उपचार नगरी चित्त बुझाएर दुई दशकभन्दा बढी अवधि व्यतीत गरेको देखिन्छ। यसरी, २०५१/११/२३ मा नै निवेदकको पिताकै जीवितकालमा निर्णय भई निजले सो निर्णय चित्त बुझाई अन्तिम भएको विषयलाई झण्डै २३ वर्षपछि मात्र निवेदकले पिताको २०७५/०२/१५ मा निधन भएपछि सरकारलाई कानूनबमोजिम प्राप्त सो जग्गाहरू नामसारीको लागि निवेदन दर्ता गरी सो निवेदनउपर भएको कानूनसम्मत निर्णयउपर रिट क्षेत्रका माथि विवेचना गरिएका आधारभूत तत्वहरू एवं कानूनी प्रश्नको अभावमा निवेदकका पिताले विभिन्न मितिमा तह तह अड्डा एवं अदालतबाट समेत निर्णय भई निर्णय चित्त बुझाई बसी सो निर्णय कानूनसम्मत अन्तिम भई बसेको विषयका सन्दर्भमा सोझै रिट क्षेत्रबाट यस अदालतमा प्रवेश गरेकोले यस अदालतको रिट क्षेत्राधिकार आकर्षित हुन सक्नेसमेत नदेखिने।

जिल्ला भूमिसुधार कार्यालय कपिलवस्तुका

भूमिसुधार अधिकारीले यी निवेदकले दाबी गरेका जग्गासमेत जग्गा जग्गा बिगाहा १४३-७-२ का सम्बन्धमा भूमिसम्बन्धी ऐन (संशोधनसहित) २०२१ को दफा ७(३)(४), १३ र १५ बमोजिम मिति २०५१।११।२३ मा गरेको निर्णय र सोही आधारमा भएको मिति २०७५।०३।१४ को मालपोत कार्यालय कपिलवस्तुले गरेको आदेशसमेत कानूनसम्मत देखिँदा र रिट निवेदकले आफ्ना पिताले विभिन्न मितिमा तह तह अड्डा एवं अदालतबाट समेत निर्णय भई चित्त बुझाई अन्तिम भई बसेका कानूनसम्मत निर्णयहरूउपर रिट क्षेत्रका कुनै पनि आधारभूत तत्वहरूको अभावमा रिट क्षेत्रबाट यस अदालतमा प्रवेश गरेको समेत देखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन मागबमोजिम उत्प्रेषणयुक्त परमादेशको आदेश जारी हुने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : कृष्णप्रसाद अधिकारी

कम्प्युटर : अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०८१ साल मङ्सिर ४ गते रोज ३ शुभम्।

४३

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री बालकृष्ण ढकाल, ०७३-CR-०३१०, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. मुकुन्द भन्ने एकराज हुमागाई

वारदात भएको भनिएको भोलिपल्ट भएको पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा उल्लिखित बेहोरा हेर्दा निजको शारीरिक अवस्था ठिक छ। निजको योनि सुनिनेको र रातो भएको छैन। योनि वरिपरि पुरुष वीर्य लागेको छैन र Vaginal Swab को परीक्षण गर्दा Spermatozoa देखिएको छैन। निजको कन्याजाली च्यातिएको छैन। निजले लगाएको कपडामा रौँ रगत वीर्य लागेको छैन भनी उल्लेख भएबाट ४८ वर्षको बयस्क प्रतिवादीले १० वर्षकी नाबालिकालाई करणी गरेको भए निजको योनिमा घाउ चोटपटक भई योनि क्षतविक्षत भई रगतआएको बगेको समेतको अवस्था

नदेखिएको स्थितिमा वस्तुनिष्ठ ठोस प्रमाणबाट आरोप पुष्टि नभएबाट वादी पक्षको पुनरावेदन जिकिरबमोजिम अभियोजित जबरजस्ती करणीको प्रस्तुत कसुर अपराध निज प्रतिवादीबाट भए गरेको भन्न सकिने अवस्था रहेको देखिएन। प्रस्तुत वारदातको सबुद प्रमाणको अभावमा जाहेरीमा जबरजस्ती करणी भइरहेको देखेको भनी उल्लेख गरेको आधारमा मात्र आरोप पुष्टि हुन सक्दैन। फौजदारी कसुरको अभियोग सबुद प्रमाणबाट पुष्टि हुनुपर्नेमा सो हुन सकेको पाइँदैन। वारदातको मिति २०७१।११।०७ गते दिउँसो अन्दाजी १५:०० बजेको समय रहेको, वारदात भएपछि प्रतिवादी कहींकतै नभागी गाउँ घरमै रहे भएको अवस्थामा पक्राउ परेको, पीडितको आमा जाहेरवाला घरमै रहे भएको, वारदातका लागि प्रतिवादीले ढोका लगाएको भए जाहेरवालाले यो यसरी ढोका खोल्नु परेको र खोलेको कुरा जाहेरीसमेतमा कहींकतै उल्लेख नगरेबाट ढोका लगाएको नदेखिएको समेत हुँदा जबरजस्ती करणीजस्तो वारदात ढोका बन्द नगरी पीडितको आमा घरमा हुँदाहुँदै दिउँसै नाबालिकाउपर करणी गर्ने कार्य भएको भए सो घटना प्रमाणबाट पुष्टि नभएको अवस्थामा विनाप्रमाण निज प्रतिवादीबाट प्रस्तुत कसुर अपराध भयो होला भनी अनुमान गर्न मिल्ने देखिँदैन। नाबालिका (१० वर्षीय) उपर प्रस्तुत जबरजस्ती करणी वारदात हुँदै गरेको शङ्का मानी जाहेरवाला जाँदा चुपचाप जबरजस्ती करणी भइरहेको देखिँ भन्ने भनाइ स्वयंमा नै विश्वासलायक हुन आउने देखिँदैन। बयस्क पुरुषले १० वर्षीय नाबालिकालाई होहल्ला नभई दुःख पीडाको स्वर आवाज नआई जबरजस्ती करणी भइरहेको देखेर हारगुहार मागेको भन्ने तथ्य नै समर्थित हुन सकेको देखिँदैन। जाहेरवालाले हारगुहार मागी आएको भनिएको जेठाजुको छोरा भन्ने मानिस को हुन् ? नाम के हो ? निजको अनुसन्धानको क्रम मौकामा बयान कागज किन भएन र किन हुन

सकेन ? सो सम्बन्धमा मिसिल सामेल कागजात र प्रमाणमा कहींकतै उल्लेख रहे भएको देखिँदैन । निज प्रतिवादी वारदात भएको भनिएको जाहेरवालाको घरकोठामा आफ्नो खुसी राजीले आफैँ नगई सोलार ब्याट्री चार्ज बनाइदिन जाहेरवाला स्वयंले बोलाएको हुँदा भएको भन्ने देखिन्छ । प्रतिवादीले यो यसरी यो अवस्था, तरिका र परिबन्धबाट पीडित १० वर्षकी नाबालिकालाई जबरजस्ती करणी गरेको भनी सुरु अभियोग माग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भनी वादी पक्षबाट परेको पुनरावेदन जिकिर भए तापनी उक्त जबरजस्ती करणीको वारदात भए गरेको भन्ने कुरा स्वास्थ्य परीक्षणबाट ठोस रूपमा समर्थित हुन सकेको देखिँदैन । प्रतिवादीले कसुर अपराध गरेको भन्ने कुरा शङ्कारहित रूपमा प्रमाणित गर्नुपर्ने भार वादी पक्षमा रहने हुँदा पीडित १० वर्षकी नाबालिकालाई जबरजस्ती करणी भए गरेको भनी स्वास्थ्य परीक्षणजस्तो वैज्ञानिक परीक्षण प्रतिवेदनबाट पुष्टि भएको हुनुपर्दछ । तर प्रस्तुत वारदातमा सोअनुरूप उक्त जबरजस्ती करणीको वारदात कहींकतैबाट ठोस रूपमा पुष्टि गराउन पुनरावेदक वादी पक्षले सकेको देखिँदैन । यसरी उक्त जबरजस्ती करणीको वारदात भएको गरेको मिसिल संलग्न कागजात र प्रमाणहरूबाट पुष्टि भई खम्बिर हुन नसकेको देखिँदा प्रतिवादी दोषी हुन भन्न नसकिने ।

प्रतिवादी मुकुन्द भन्ने एकराज हुमागाईँले पीडित वर्ष १० की नाबालिका नाम परिवर्तित ०४९-१६(०७१।७२) लाई जबरजस्ती करणी गरेको प्रमाणबाट पुष्टि नभएको परिप्रेक्ष्यमा प्रतिवादी मुकुन्द भन्ने एकराज हुमागाईँलाई जबरजस्ती करणीको उद्योगमा सजाय गरेको सुरु चितवन जिल्ला अदालतको मिति २०७२।०३।२२ को फैसला उल्टी गरी सुरु अभियोग माग दाबीबाट प्रतिवादी मुकुन्द भन्ने एकराज हुमागाईँलाई सफाई हुने गरी तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट मिति २०७३।०१।२१

मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : मोहनप्रसाद बेलबासे

कम्प्युटर :- पुजा कंडेल

इति संवत् २०८१ साल जेष्ठ ६ गते रोज १ शुभम् ।

४४

मा.न्या.श्री कुमार रेग्मी र मा.न्या.श्री नित्यानन्द पाण्डेय, ०७५-WO-०६७२, उत्प्रेषण / प्रतिषेध र परमादेशसमेत, दिपकबिक्रम मिश्र वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय सिंहदरबार, काठमाडौँसमेत
पर्यटन ऐन, २०३५ को दफा ३७ गैरसंवैधानिक हुँदा खारेज गरिपाउँ भनी यिनै निवेदकले यसै अदालतसमक्ष दायर गरेको ०७२-WO-००५८ को उत्प्रेषण रिट निवेदन खारेज हुने ठहरी मिति २०७३।०४।१९ मा आदेश भएकोसमेत देखिन्छ । पर्यटन ऐन, २०३५ को दफा ३७ को वैधानिकता सम्बन्धमा परेको उक्त रिट निवेदन खारेज भई उक्त दफा ३७ प्रभावकारी रहेको स्थिति देखियो । सोही कानूनी व्यवस्थाका आधारमा मन्त्रिपरिषद्को निर्णयअनुसार तोकिएका हिमचुली आरोहण अनुमति प्रदान गर्ने र व्यवस्थापन गर्ने जिम्मेवारी नेपाल पर्वतारोहण सङ्घलाई सुम्पने र पाँच वर्षको लागि नवीकरण गर्ने गरी भएको निर्णय एवं कारबाही कानूनविपरीत भन्न नमिल्ने ।

अब निवेदकले नेपाल पर्वतारोहण सङ्घ अर्थात् निजी क्षेत्रको संस्थालाई राजस्व उठाउन दिनु नेपालको संविधानविपरीत हुन्छ भनी दाबी लिएतर्फ दृष्टिगत गर्दा, सार्वजनिक निजी र सहकारी क्षेत्रको सहभागिता तथा विकासमार्फत उपलब्ध साधन र स्रोतको अधिकतम परिचालनद्वारा तीव्र आर्थिक वृद्धि गर्ने राज्यको आर्थिक उद्देश्य रहेको देखिन्छ । सार्वजनिक, निजी र सहकारी क्षेत्रको सहभागिता र स्वतन्त्र विकासमार्फत राष्ट्रिय अर्थतन्त्र सुदृढ गर्ने र अर्थतन्त्रमा निजी क्षेत्रको भूमिकालाई महत्त्व दिँदै उपलब्ध साधन र स्रोतको अधिकतम परिचालन

गरी आर्थिक समृद्धि हासिल गर्ने राज्यको अर्थ उद्योग र वाणिज्यसम्बन्धी नीति रहेको देखिन्छ। यसरी नेपालको संविधानको राज्यको नीति निर्देशक सिद्धान्तले निजी क्षेत्रलाई अर्थतन्त्रको एक खम्बाको रूपमा स्वीकार गरी निजी क्षेत्रको सहभागिता र भूमिकालाई बढावा दिने नीति अङ्गीकार गरेको देखिने।

मुद्दा नं. ०७२-WO-०३७५ र मुद्दा नं. ०७१-WO-१०२१ मा यस अदालतबाट मिति २०७३।०४।१९ मा भएको आदेशानुसार नेपाल पर्वतारोहण सङ्घलाई मिति २०७४।०६।०३ सम्म हिमाल आरोहणबापत राजस्व रकम उठाउन पाउने भए पनि त्यसपछाडि पनि विपक्षीहरू मिलोमतो गरी नेपाल पर्वतारोहण सङ्घलाई नै राजस्व उठाउन दिइरहेको नमिलेको भन्ने निवेदकको बेहोरा सम्बन्धमा नेपाल पर्वतारोहण संघलाई नेपाल सरकारले तोकेको हिमचुली आरोहण अनुमति प्रदान गर्ने काम सुम्पन्न सक्ने गरी पर्यटन ऐन, २०३५ को दफा ३७(२) ले व्यवस्था गरेको, उक्त विषयको वैधता सम्बन्धमा यस अदालतबाट मु.नं.०७१-WO-१०२१ समेतका रिट निवेदनमा समेत व्याख्या भइसकेको विषयमाथि प्रकरणमा विवेचना भइसकेको छ। सोही हिमचुली आरोहण अनुमति प्रदान गर्ने काम नेपाल पर्वतारोहण संघलाई सुम्पने गरी पुनः अवधि थप गर्ने गरी नेपाल सरकारबाट भएको समान प्रकृतिको विषयमा प्रस्तुत रिट निवेदन दायर भएको देखिँदा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थासमेतको सन्दर्भमा निवेदन दाबी स्थापित हुन सक्ने देखिएन। साथै १२ वटा हिमचुलीहरू म्याद पुनः ५ वर्षका लागि नवीकरण गर्ने गरी नेपाल सरकार मन्त्रिपरिषद्बाट मिति २०७५।०४।१० मा निर्णय भएको भन्ने विपक्षीहरूको लिखित जवाफबाट देखिएकोमा सो अवधिसमेत हाल व्यतीत भइसकेको समेत देखिने।

पर्यटन ऐन, २०३५ को दफा ३७(२) अनुसार पर्यटन सङ्घलाई नेपाल सरकारले तोकेको

हिमचुलीको आरोहण गर्ने अनुमति प्रदान गर्ने काम सुम्पन्न सक्ने कानूनी व्यवस्था रहेकोले सोहीबमोजिम नेपाल पर्वतारोहण सङ्घलाई तोकिएका हिमचुली आरोहण अनुमति प्रदान गर्ने काम सुम्पेको देखिएको र यी रिट निवेदकले दायर गरेको यसै विषयसँग सम्बन्धित मुद्दा नं. ०७१-WO-१०२१ र मुद्दा नं. ०७२-WO-००५८ का रिट निवेदन खारेज हुने ठहरी यसै अदालतबाट मिति २०७३।०४।१९ मा आदेश भएको समेतका आधार कारणबाट सोही प्रकृतिको प्रस्तुत निवेदनमा मागबमोजिम आदेश जारी हुने अवस्था विद्यमान नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत : टीकाबहादुर थापा

कम्प्युटर : अमिर रत्न महर्जन

इति संवत् २०८१ साल माघ ७ गते रोज २ मा शुभम्।

इजलास नं.७

४५

मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल, ०७९-RC-००९२, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. पारससिंह राजपुत

प्रतिवादी पारससिंह राजपुतलाई मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा १७७(२) बमोजिम भएको जन्मकैदको सजायतर्फ विचार गर्दा, प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष तथा अदालतमा बयान गर्दा कसुरतर्फ साबिती रही बयान गरेबाट प्रतिवादीले कसुरको गाम्भीर्य स्वीकारी न्यायिक प्रक्रियामा सहयोग पुऱ्याएको भन्ने देखिन्छ। मृतक प्रतिवादीको श्रीमती रहेको र निजलाई मार्नुपर्ने पूर्वयोजना र मनसाय नरहेको। त्यसै गरी मृतकको मृत्युपश्चात् प्रतिवादी तथा मृतकको नाबालक सन्तानको अभिभावक केवल प्रतिवादी मात्र रहेको देखिन्छ। सो सन्दर्भमा विचार गर्दा, मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा ४७(१)

मा, “कुनै कसुरदारले आफूले गरेको कसुर स्वीकार गरी त्यस्तो सम्बन्धमा प्रमाण जुटाउन अन्य अभियुक्त वा त्यसको गिरोह वा मतियारलाई पक्राउ गर्न वा अनुसन्धान वा अभियोजन पक्ष वा अदालतलाई सघाउ पुऱ्याएकोमा कानूनबमोजिम हुने सजायको बढिमा पचास प्रतिशतसम्म सजाय छुट दिन सकिने छ भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको देखिन्छ । त्यसै गरी फौजदारी कसुर (सजाय निर्धारण तथा कार्यान्वयन) ऐन, २०७४ को दफा १७क मा (१) प्रचलित कानूनबमोजिम जन्मकैद गर्नुपर्ने मुद्दाको अभियुक्तले कसुर गरेको कुरामा अदालतमा साबित भएको र मिसिल संलग्न प्रमाणबाट त्यस्तो साबिती साँचो देखिएमा निजलाई जन्मकैदको सजाय दिँदा त्यस्तो कसुर गर्दाको परिस्थितिलाई विचार गर्दा न्यायको रोहमा बढी पर्ने भई न्यायाधीशले घटी सजाय गर्न उपर्युक्त देखेमा सोको कारण खुलाई रायसहितको फैसला गर्न सक्ने छ” भन्ने व्यवस्था रहेको देखिन्छ । यी प्रतिवादीले कसुर गरेको बेहोरामा मौकामा तथा अदालतमा स्वीकार गरी मुद्दाको कारबाही प्रक्रियालाई सहयोग गरेको देखिएको, प्रतिवादीको नाबालक सन्तान रही निजले नै पारिवारिक जिम्मेवारी वहन गरी शिक्षा, दीक्षालगायतको अभिभावकीय दायित्व पूरा गर्नुपर्ने देखिनुका साथै प्रतिवादीको आपराधिक चाल चलनमा सुधार आई अपराधप्रति पश्चाताप गरी पीडित र समाजमा थप हानि नोक्सानी पुऱ्याउँदैन भन्ने न्यायकर्तालाई लागेमा निजलाई लागेको कैदमा न्यायिक विवेकको प्रयोग गरी घटी सजाय गर्न सक्ने हुँदा निजको हकमा समेत जन्मकैद २० (बिस) वर्ष कैद सजाय न्यायको रोहबाट उपयुक्त हुने नदेखिने ।

प्रतिवादी पारससिंह राजपुतलाई सुरु उदयपुर जिल्ला अदालतबाट जन्मकैदको सजाय भई फैसला भएको र उच्च अदालत विराटनगरबाट उक्त साधक सदर भई फैसला भएकोमा निजलाई कसुर ठहर गरेको हदसम्म उक्त फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने । प्रतिवादीलाई भएको जन्मकैदको सजायको

हकमा निजलाई १५ (पन्ध्र) वर्ष कैद सजाय गर्दा पनि न्यायको मक्सद पूरा हुने देखिँदा प्रतिवादीलाई १५ (पन्ध्र) वर्ष कैद सजाय कायम गरिदिएको छ । साथै निजलाई लागेको कैदअनुसार अपराध पीडित संरक्षण ऐन, २०७५ को दफा ४१(ज) बमोजिम अपराध पीडित राहत कोषमा रु.२२००१- (दुई हजार दुई सय) प्रतिवादीबाट क्षतिपूर्ति शुल्क निर्धारण हुने ।

इजलास अधिकृत : मेजुमी गुरुङ

कम्प्युटर :- शंकर गुरुङ

इति संवत् २०८१ साल जेष्ठ १८ गते रोज ६ शुभम् ।

४६

मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल, ०७६-CR-०४२४, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. कान्छो भन्ने कुमार कान्छा सम्बाहाम्फे

उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट प्रतिवादी कान्छा भन्नेकुमार कान्छा सम्बाहाम्फेलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. को वारदात स्थापित हुन आवश्यक कारक तत्वको विद्यमानताको अभाव भएको देखिँदा ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिमको सजाय हुने ठहऱ्याई भएको सुरु पाँचथर जिल्ला अदालतको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ भनी फैसला भएको देखिन्छ । मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. मा “लाठा, ढुंगा र साधारण सानातिना हातहतियारले कुटी, हानी, रोपी घोची वा अरु ज्यान मार्ने गैहकुरा गरी ज्यान मरेमा एकै जनाले मात्र सो काम गरी ज्यान मारेमा सोही एक जना र धेरै जनाको हूल भई मारेमा यसैले मारेको वा यसको चोटले मरेको भन्ने प्रमाणबाट देखिन ठहर्न आएमा सोही मानिस मुख्य ज्यानमारा ठहर्छ । त्यस्तालाई सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्नुपर्छ । सोबाहेक अरुलाई र यसैले मारेको वा यसैका चोटले मरेको भन्ने कुरा सो हात हतियार छाड्ने कसैउपर कुनै प्रमाणबाट देखिन ठहर्न नआएमा सबैलाई जन्मकैद गर्नुपर्छ भन्ने व्यवस्था

रहेको देखिन्छ । त्यसै गरी मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. मा, “ज्यान मार्नाको मनसाय रहेनछ, ज्यान लिनुपर्नेसम्मको इवी पनि रहेनछ, लुकी चोरीकन हानेको पनि रहेनछ उसै मौकामा उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी जोखिमी हतियारले हानेको वा विष खुवाएकोमा बाहेक साधारण लाठा, ढुङ्गा, लात, मुक्का इत्यादि हान्दा सोही चोट पीरले ऐनको म्यादभित्र ज्यान मरेमा दश वर्ष कैद गर्नुपर्छ भन्ने प्रावधान रहेको पाइन्छ । साबिक मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. मा भएको व्यवस्थालाई हाल प्रचलनमा रहेको मुलुकी अपराध संहिता, २०७४ को दफा १७९(१) (क) मा (१) दफा १७७ वा १७८ मा जुनसुकै कुरा लेखिएको भए तापनि देहायको अवस्थामा ज्यान लिने व्यक्तिलाई दशदेखि पन्ध्र वर्षसम्म कैद र एक लाख रुपियाँदेखि एक लाख पचास हजार रुपियाँसम्म जरिवाना हुने छ (क) कसैले तत्काल गम्भीर उत्तेजना दिलाउने कुनै काम गरेबाट कसुरदारले आत्मसंयमको शक्ति गुमाई त्यस्तो उत्तेजना दिलाउने व्यक्तिको ज्यान मारेकोमा आवेशप्रेरित हत्याको कसुर हुने व्यवस्था गर्दै साबिक मुलुकी ऐनको, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. मा भएको, जोखिमी हतियारले हानेको वा विष खुवाएकोमा बाहेक साधारण लाठा, ढुङ्गा, लात, मुक्का इत्यादि हान्दा सोही चोट पीरले ऐनको म्यादभित्र ज्यान मरेमा दश वर्ष कैद गर्नुपर्छ जस्ता व्यवस्थाहरूलाई decriminalize गरिएको हुँदा वर्तमान कानूनबमोजिम आवेशप्रेरित हत्याको कसुर हुनलाई प्रतिवादी उत्तेजनामा भएको हुनुपर्ने, निजले कस्तो हातहतियार प्रयोग गर्‍यो भन्ने तथ्यले कुनै अर्थ नराख्ने भन्ने देखिन्छ । प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादी मृतक बुवाबिच घरायसी कुरामा विवाद परी सोही विवादका कारण तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी आवेशमा आई घरमा बाल्न राखेको बाँसले प्रहार गर्दा बुवाको मृत्यु भएको र निज प्रतिवादीले बुवालाई मार्ने पूर्वरिसइवी तथा पूर्वतयारी वा मनसायसमेत नरहेको भन्ने पुष्टि

भइरहेको अवस्थामा उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट प्रतिवादीलाई आवेशप्रेरित हत्याको कसुरमा सजाय गर्ने गरेको फैसला मिलेकै देखिने ।

प्रतिवादी कान्छा भन्ने कुमार कान्छा सम्बाहाम्फे विरुद्ध ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. को वारदात स्थापित हुन आवश्यक कारक तत्त्वको विद्यमानताको अभाव भएको देखिँदा ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिमको सजाय हुने ठहर्‍याई भएको सुरु पाँचथर जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४।१।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ भनी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७५।१।०।९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - मेजुमी गुरुङ

कम्प्युटर : रामशरण तिमिलसिना

इति संवत् २०८१ साल जेष्ठ १८ गते रोज ६ शुभम् ।

४७

मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल, ०८०-WH-०२२६, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, RISHABH PAWA समेत वि. जिल्ला प्रहरी परिसर, काठमाडौं, टेकुसमेत निवेदकहरूलाई आरोपित गरिएको सम्बन्धित अनुसन्धान मिसिल हेर्दा नेपालको कानूनमा प्रतिबन्ध लगाइएको क्रिप्टोकरेन्सी र अनलाइन जुवा तथा विदेशी विनिमय अपराधमा यी प्रतिवादीहरूको संलग्नता सम्बन्धमा अनुसन्धान गर्न निजहरूलाई उचित कानूनी प्रक्रिया पुर्‍याई अपराध अनुसन्धानका लागि अनुसन्धान अधिकारीले संविधान र कानूनद्वारा निर्धारित सीमाभित्र रही अभियुक्तलाई अपराध अनुसन्धानका लागि पक्राउ गर्न तथा कानूनबमोजिमको थुनामा राख्न सक्ने अवस्थालाई अन्यथा भन्न मिल्ने देखिँदैन । कानूनले तोकेको प्रक्रिया पुर्‍याई वा पर्याप्त आधार र कारण खुलाई पक्राउ गरी कानूनबमोजिमको (lawful custody) हिरासत राखिएको अवस्थामा

निवेदकहरू वैयक्तिक स्वतन्त्रता कुण्ठित भएको भन्न मिल्दैन । यसरी अनुसन्धान गर्ने र हिरासतमा राख्न पाउने कानूनी व्यवस्था अनुरूप प्रत्यर्थीहरूले आफ्नो कानूनबमोजिम कर्तव्य निर्वाह गर्दा निवेदकहरूको वैयक्तिक स्वतन्त्रताको अवैध वा स्वेच्छाचारी हनन भएको नदेखिई कानूनबमोजिम कारबाही अगाडि बढाउन अनुसन्धानको क्रममा थुनामा राखेको देखिँदा निवेदकहरूको थुना गैरकानूनी नदेखिएकोले निजहरूको हकमा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न मिल्ने नदेखिने ।

एटलान्टिक रिक्लियसन प्रा.लि.ले सञ्चालन गरेको क्यासिनो अनुमतिपत्रको वैधानिकतासमेतलाई हेर्दा जिल्ला अदालतले निवेदकहरूको अनुसन्धान सम्बन्धमा विशेष सतर्कता अपनाई अनुसन्धानको लागि थप समय दिनुपर्ने भए आवश्यकता र औचित्यता हेरी कानून व्यवसायीको बहससमेत सुनी हाल सम्म सङ्कलित प्रमाणहरूसमेतलाई विचार गरी यथाशक्य छिटो अनुसन्धानको प्रक्रिया पूरा गराई अदालती कारबाही गर्न सक्ने नै देखिए तापनि निवेदक तथा निवेदकसरहका व्यक्तिहरू विरुद्ध मुलुकी कार्यविधि संहिता, २०७४ को दफा ९(३) बमोजिम पक्राउ पुर्जी जारी गर्ने अनुमति दिँदा वा संहिताको दफा १४(६) बमोजिम हिरासतमा राख्न म्याद थप गर्नुपूर्व आरोपित व्यक्तिउपरको आरोप पुष्टि हुने अवस्था भए नभएको त्यसको आधार निजलाई हिरासतमै राखी अनुसन्धान गर्नुपर्ने कारणहरूको सम्बन्धमा विशेष सतर्कता अपनाएर व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रताको संरक्षण गर्ने कार्यमा विशेष सावधानी अपनाउनु भनी मुद्दा हेर्ने अधिकारीका नाममा यो निर्देशनात्मक आदेश जारी हुने ।

निवेदकहरूलाई काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट हिरासतमा राखी अनुसन्धानको लागि कानूनबमोजिम म्याद थप अनुमति भएबाट थुनुवाको थुना प्रक्रिया नै गैरकानूनी भएको भन्ने नदेखिएकोले

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता देखिएन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत - विरेन्द्रप्रकाश खड्का
इति संवत् २०८० साल माघ २५ गते रोज ५ शुभम् ।

४८

मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र
मा.न्या.श्री सुनिलकुमार पोखरेल, ०७५-CR-
०४०८, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. उपेन्द्र
दास तत्मा

प्रतिवादी उपेन्द्रदास तत्माले मसँग हिँड, म श्रीमती बनाइ राख्छु, गरगहना किनिदिन्छु, राम्रा कपडा किनेर लगाइदिन्छु भनेपछि म उसैसँग सँगै आएँ निज प्रतिवादीको आफन्तको घरभित्र पुगेको केही बेरमा नै भुइँमा रहेको ठोकुवा बाँसको टाटीमाथि ओछ्याएको परालमाथि निजले मलाई बसाई सुताई जबरजस्ती करणी गरेको हो भनी पीडित परिवर्तित नाम थर कञ्चनपुर ७ ले जाहेरी दरखास्तलाई समर्थित हुने गरी घटना विवरण कागज तथा सुरु अदालतमा बकपत्रसमेत गरेको देखिने ।

प्रतिवादी उपेन्द्रदास तत्माले सुरु अदालतमा बयान गर्दा कसुरमा पूर्णरूपमा इन्कार रही पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको होइन भनी बयान गरेको, अनुसन्धानमा बयान गर्दा पीडितलाई केही दिनदेखि विवाह गर्ने भन्ने आश्वासन दिई वारदातको दिन आफन्तको घरमा लगी करणी गरेको भनी स्वीकार गरेको र निजको साबिती बयान पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनले समर्थन गरिरहेको देखिन्छ । यसरी प्रतिवादीले नाबालक उमेरकी पीडितलाई विवाह गर्ने भनी निजको सहमतिमा करणी गरेको भन्ने वारदात स्थापित भएको देखिन्छ । साथै निज प्रतिवादीले उच्च अदालत जनकपुर, राजविराज इजलासमा पुनरावेदन गर्दा तथा यस अदालतमा लिखित प्रतिवाद फिराउँदा निज पीडितसँग एक वर्षअगाडि नै विवाह गरेको भनी उल्लेख गरी मिसिलसाथ विवाहको तस्विरहरूसमेत

पेस गरेको देखिन्छ । उल्लिखित तस्वीरहरू हेर्दा प्रतिवादीले यी पीडितलाई सिन्दुर हाली विवाह सम्पन्न भएको देखिएबाट यी पीडित र प्रतिवादीबिच पति पत्नीको नाता सम्बन्ध रहेको देखिन आयो । साथै पीडित मुसहर जात र म प्रतिवादी तत्मा जातको भई जात नमिल्ने अन्तरजातीय वैवाहिक सम्बन्धलाई छुट्याउने उद्देश्यले पीडित कञ्चनपुर ड र प्रतिवादी पति पत्नी भई आफन्त दुखीदास तत्माको घरमा गई केहीबेर बसी त्यहाँबाट फर्कने क्रममा प्रहरीले भेटाइ हाम्रो कपडा खोली अर्ध नग्न पारी फोटो खिचिएको हो भनी प्रतिवादीले जिकिर लिएको देखिन्छ । यसबाट पीडित तथा प्रतिवादीको परिवार विवाह गर्न राजी नभएको हुँदा यी प्रतिवादी र पीडितले गोप्य तवरले विवाह गरेको भन्ने देखिने ।

प्रतिवादीले यी पीडितलाई जबरजस्ती करणी गर्नेसम्मको कसुर स्थापित भएको नदेखिएको र दुवैबिच विवाह गर्नेसम्मको कार्य गरेको देखिएको हुनाले सुरु सप्तरी जिल्ला अदालतबाट यी प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(२) नं. बमोजिम सजाय गर्ने भनी भएको फैसला उल्टी गरी उच्च अदालत जनकपुर, राजविराज इजलासले प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ दिने गरी भएको फैसला केही उल्टी भई यी प्रतिवादीले पीडित परिवर्तित नाम कञ्चनपुर ड उपर बालविवाहको कसुर गरेकोले साबिक मुलुकी ऐन, बिहाबारीको महलको २ नं. को देहाय (२) बमोजिम १ (एक) वर्ष कैद र रु. ५,०००।- (पाँच हजार रूपियाँ) जरिवाना हुने ।

इजलास अधिकृत - रोदिप सुनाम

कम्प्युटर : शंकर गुरुङ

इति संवत् २०८१ साल भाद्र १३ गते रोज ५ शुभम् ।

४९

मा.न्या.श्री हरिप्रसाद फुयाल र मा.न्या.श्री सुनिलकुमारपोखरेल, ०७६-CR-०६३२, जबरजस्ती करणी / हाडनाता करणी, साङ्केतिक नाम ०४-५-

ड२ वि. नेपाल सरकार

जाहेरवालाको जाहेरी दरखास्तलाई समर्थन हुने गरी म स्कुलमा गएकोबखत स्कुलबाटै फकाइ मलाई कोठामा लगी जबरजस्ती करणी गरेपछि मलाई आन्टीकोमा ल्याई छोडेका हुन् कानूनबमोजिम कारबाही होस् भनी पीडितले घटना विवरण कागज तथा अदालतमा आई बकपत्रसमेत गरेको देखिन्छ । पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनमा पीडितको योनिद्वारको तलतर्फ भागमा रातोपना देखिएको भन्ने उल्लेख भएको पाइन्छ भने सोही बेहोरालाई पुस्त्याइँ हुने गरी पीडितको शारीरिक परीक्षण गर्ने विशेषज्ञ चिकित्सकले उच्च अदालतमा बकपत्रमा समेत गरेको देखिन्छ । मिसिल संलग्न रहेको कागजातबाट यी प्रतिवादी र पीडित बुबा छोरी रहेको देखिएको, पीडितको उमेर जम्मा ८ वर्षको बालिका रहेको देखिएको तथा पीडितले आफ्नै बुबालाई फसाउने नियतले जबरजस्ती करणीजस्तो गम्भीर प्रकृतिको कसुर गरेको हो भनी अदालतमा गरेको बकपत्रलाई अन्यथा भन्नुपर्ने अवस्थासमेत रहेको देखिँदैन । साथै प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा जाहेरवालासँग कुनै पनि किसिमको रिसइवी नरहेको तथा पीडितलाई डेरा कोठामा लगी नुहाउने बहाना बनाई नुहाइ लुगा फेर्नका लागि कोठामा लिई गई करणी गर्थे र कहिले राति राखी करणी गर्थे भनी कसुरमा साबिती भई बयान गरेको देखिने ।

प्रतिवादीले सुरु अदालतसमक्ष बयान गर्दा मैले पीडित छोरी ०४-५-ड लाई ललाइफकाइ तथा डर धाकधम्की देखाई जबरजस्ती करणी गरेको छैन, मउपर लागेको अभियोग झुट्टो हो भनी कसुरलाई पूर्णरूपमा इन्कार गरी बयान गरेको देखिए तापनि मिसिल संलग्न रहेको जाहेरवालाको जाहेरी दरखास्त तथा अदालतसमक्ष गरेको बकपत्र, पीडितले मौकाको कागजलाई समेत समर्थित हुने गरी गरेको बकपत्र, प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको बयान

तथा पीडितको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदन एवं चिकित्सकको बकपत्रसमेतका आधारबाट प्रतिवादीले कसुर गरेका छैनन् भन्न सकिने अवस्था नभएकोले सुरु जिल्ला अदालत तथा उच्च अदालतबाट प्रतिवादीको कसुर ठहर गरी सजायसमेत हुने गरी भएको फैसला मिलेकै देखिन आयो । प्रतिवादीले अभियोग मागदाबी अनुसार कसुर नगरेको हुँदा सफाइ दिलाइपाउँ भन्ने प्रतिवादीतर्फका विद्वान् कानून व्यवसायीहरूको बहस जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

सुरु झापा जिल्ला अदालतबाट भएको फैसलालाई सदर गरी पुनरावेदक प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(१) नं. अनुसार १० (दश) वर्ष कैद र हाडनाता करणीको महलको १ नं. अनुसार १० (दश) वर्ष थप कैदसमेत हुने ठहर गरी उच्च अदालत विराटनगर, इलाम इजलासबाट मिति २०७५।८।१० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत - लक्ष्मी राना

फैसला लेखनमा सहयोग गर्ने : रोदिप सुनाम

कम्प्युटर : शंकर गुरुङ

इति संवत् २०८१ साल आषाढ १३ गते रोज ५ शुभम् ।

इजलास नं. १२

५०

मा.न्या.श्री विनोद शर्मा र मा.न्या.श्री शारङ्गा सुवेदी, ०७४-CR-०७४९, वैदेशिक रोजगार कसुर, नन्दकुमार किराती वि. नेपाल सरकार

जाहेरी दरखास्तमा लिखतबमोजिमको रकमसहित विदेश जाने व्यक्तिहरूको राहदानीसमेत लिएको भनिएको छ । लिखत कागज बेहोरामा प्रतिवादीले केशकुमारीसँग सापटी रकम माग गरेको भन्दै वैदेशिक रोजगारीको विषय उल्लेख गरी ३ महिनाभित्र वैदेशिक रोजगारमा नपठाएमा कानूनबमोजिमको ब्याजसमेत

जोडी उक्त रकममा १० प्रतिशत हर्जानासमेत एकमुष्ट फिर्ता गर्ने अन्यथा चल अचल सम्पत्ति जाय जेथाबाट रकम असुलउपर गर्ने कुरा उल्लेख गरिएको देखिन्छ । उक्त लिखतमा प्रतिवादीलाई राहदानी दिएको तथा के-कुन कार्यको लागि, कति पारिश्रमिक पाउने गरी, कति समयको लागि वैदेशिक रोजगारमा पठाउने हो भन्ने बेहोरा उल्लेख भएको देखिँदैन । प्रतिवादीको साथबाट विदेश जाने व्यक्तिहरूको राहदानी बरामद भएको पनि देखिँदैन । जाहेरवालाहरू केशकुमारी गुरुङ र सुलभ गुरुङले राहदानीपछि फिर्ता गरेको भनी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गरेको देखिन्छ । विदेश जाने भनी नाम उल्लेख भएका सुलभ गुरुङबाहेक अन्य तीन जनाको जाहेरी परेको देखिँदैन भने निजहरूलाई साक्षी प्रमाणको रूपमा समेत पेस गरेको अवस्थासमेत छैन । यसरी वादी पक्षबाट पेस भएका वैदेशिक रोजगारको लागि रकम बुझेको भनिएको लिखतको बेहोरा, जाहेरी दरखास्त र जाहेरवालाहरूको बकपत्र बेहोरामा एकरूपता नभई विरोधाभाष रहेको देखिने ।

प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा पोल्ट्री फर्म खोलन २१ लाख रूपियाँ लिएको भनेको र वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बयान गर्दा सो रकममध्येको आयुष पोल्ट्री फर्मका अर्का सञ्चालक तेजबहादुर क्षेत्रीले जाहेरवाला केशकुमारी गुरुङलाई रु.१०,००,०००/- को चेक दिएकोमा चितवन जिल्ला अदालतमा चेक अनादर मुद्दा चली उक्त चेकबापतको सावाँ ब्याज तिरिसकेको भनी बयान गरेकोमा उक्त तथ्यलाई जाहेरवाला केशकुमारी गुरुङले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गर्दा स्वीकार गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीले रकम बुझेको भनिएको लिखतका साक्षी लोकनाथ सिग्देलले प्रतिवादीको बयान बेहोरालाई समर्थन हुने गरी उक्त लिखत लेनदेनको लिखत भएको भनेका र लिखत कागजकै अर्का साक्षी राजकुमार गुरुङले आफूले रकम लेनदेन भएको नदेखेको र कति रकम दिएको थाहा

भएन भनी वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गरेको देखिन्छ। जाहेरवालाहरूले रकम लेनदेन भएको यकिन मिति र ठाउँ थाहा नभएको भनी बकपत्र गरेको देखिन्छ। लेखक साक्षी रविनप्रसाद ढुङ्गाना तथा विदेश जाने भनिएका सुलभ गुरुडबाहेकका तीन जनालाई वादीले साक्षी प्रमाण को रूपमा पेश गरेको देखिँदैन। यसरी लिखत कागजको बेहोरा, जाहेरी बेहोरा र अदालतमा गरेको बकपत्रमा एकरूपता नभई पृथक् बेहोरा उल्लेखन भइरहेको अवस्थाले जाहेरवाला आफ्नो भनाइमा अडिक नरहेको र जाहेरी पुष्टि गरी आफ्नो भनाइ खम्बिर गर्न नसकेको।

प्रतिवादीले पोल्ट्री फर्म सञ्चालनको लागि कागज बेहोरामा उल्लेख भएकोभन्दा कम रकम अर्थात् २१ लाख रुपियाँ लिएको र सोमध्ये १० लाख रुपियाँ आफ्नो आयुष पोल्ट्री फर्मका पार्टनरले जाहेरवाला केश कमारी गुरुडलाई चेक काटिदिएकोमा चेक अनादर मुद्दाको रोहबाट सावाँ ब्याज भुक्तान गरिसकेको भनी बयान गरे तापनि मिति २०७१।७।२८ मा आफूले जाहेरवाला केशकुमारी गुरुडलाई गरिदिएको लेनदेनको कागज (तमसुक) लाई अन्यथा प्रमाणित गराउन नसकेको र अधिकार प्राप्त अनुसन्धान अधिकारी र न्यायाधिकरणसमक्ष बयान गर्दा रकम लेनदेन भएको तथ्य स्वीकार गरेको अवस्था हुँदा देवानी दायित्व (Civil Liability) अन्तर्गत म्यादभित्र दाबी लिई अदालत प्रवेश गरेमा कानूनबमोजिम हुने नै हुँदा अभियोग दाबीबमोजिम यस मुद्दाबाट प्रतिवादीले फौजदारी दायित्व (Criminal Liability) बेहोर्नुपर्ने गरी निजलाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० र ४३ विपरीतको कसुरमा ऐ. दफा ४३ बमोजिम एक वर्ष छ महिना कैद, रु.१,५०,०००।- रुपियाँ जरिबाना, बिगो रु.५७,००,०००।- र सोको पचास प्रतिशतले हुने हर्जानासमेत प्रतिवादीबाट भराइपाउने ठहर भएको वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको मिति २०७४।२।८ को फैसला मिलेको नदेखिने।

जाहेरी बेहोरा, रकम बुझेको लिखत तथा उक्त लिखतका साक्षीहरू तथा जाहेरवालाहरूको बकपत्रसमेतका आधारमा रकम बुझेको लिखतमा वैदेशिक रोजगारको लागि क्यानडा पठाउन रकम लिएको बेहोरा उल्लेख भई उक्त लिखतमा आफूले सहीछाप गरेको भनी प्रतिवादीले स्वीकार गरेको भए पनि अन्य स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीउपर वैदेशिक रोजगारको कसुर स्थापित हुन आवश्यक वैदेशिक रोजगारसम्बन्धी राहदानी आदान प्रदानलगाएतका परिस्थितिजन्य प्रमाणको अभाव तथा वादी पक्षबाट पेश भएका प्रमाणहरू नै विरोधाभाषपूर्ण रही फौजदारी न्यायका मान्य सिद्धान्तअनुरूप अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर शंकारहित तवरबाट पुष्टि हुन्छ हुँदैन भन्नेतर्फ विचार नगरी प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम कैद, जरिबाना, बिगो र सोको ५० प्रतिशत क्षतिपूर्ति भराउने ठहर गरेको मिति २०७४।२।८ को वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणको फैसला उल्टी भई यी पुनराववेदक प्रतिवादी नन्दकुमार किराँतीले प्रस्तुत मुद्दाको अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने।

इजलास अधिकृत : उमेशप्रसाद पाण्डेय

कम्प्युटर :- पद्मा आचार्य

इति संवत् २०८१ साल असोज ७ गते रोज २ शुभम्।

५१

मा.न्या.श्री विनोद शर्मा र मा.न्या.श्री अब्दुल अजीज मुसलमान, ०८१-WO-०५६३, परमादेशसमेत, लक्ष्मीप्रकाश भाग्य श्रेष्ठसमेत वि. नेपाल सरकार, मन्त्रिपरिषद्, प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबार, काठमाडौंसमेत

एकातिर निवेदकहरूले आफ्ना पिताका नाउँमा जग्गाधनीलाई नगदै दिई प्राप्त गरेको कि.नं. ७३४ को जग्गामध्ये अधिग्रहण भई बाँकी कायम भएको कि.नं. २६ को जग्गा दर्ताको लागि मालपोत कार्यालय भक्तपुरमा दिएको निवेदनको कारबाही

टुङ्गो लगाइदिन आदेश गरिपाउँ भनी परमादेश माग गरेकोमा निवेदक दाबीको पूरै जग्गा अरनिको राजमार्गले अधिग्रहण गरिसकेको र उच्च अदालत पाटनको फैसलासमेतबाट राजमार्गको नाउँमा कायम भएको जग्गाका संरचना हटाई सार्वजनिक जग्गा संरक्षण गर्ने सम्बन्धमा आवश्यक कारबाही गर्नु भनी नगरपालिकालाई लेखी पठाउनु भन्ने उच्च अदालत पाटनबाट फैसला भएकोसमेत देखिन आएको अवस्थामा निवेदकहरूका नाउँमा उक्त कि.नं. २६ को जग्गा दा.खा. नामसारी हुने अवस्थासमेत देखिएन । साथै यही कि.नं. २६ को जग्गा सम्बन्धमा तहतह भई विवादित जग्गाको विषयमा अन्तिम निर्णय भई बसेपछि रिट निवेदकले सडक विस्तार गर्दा अधिग्रहण गरेको कि.नं. ७३४ को जग्गा आवश्यकभन्दा धेरै अधिग्रहण गरेको, सडकले भोग गरेभन्दा बढी जग्गा रहेको उक्त जग्गा हाल कि.नं. २६ भई उक्त जग्गामा आफ्नो बाजेका पालदेखि नै घरटहरो निर्माण गरी भोग गरिरहेकोले उक्त जग्गा आफ्ना नाममा दा.खा. नामसारी गरिपाउन मालपोत कार्यालयमा दिएको निवेदनमा ढिलासुस्ती गरी नामसारी नगरिदिएकाले जग्गा दा.खा. नामसारीको लागि उपर्युक्त आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने लिइएको जिकिर कानूनसम्मत देखिएन । दाबी गरिएको जग्गा अरनिको सडक विस्तार गर्दा नेपाल सरकारले आफ्नो नाउँमा दा.खा. नामसारी गरी नेपाल सरकारको स्वामित्वमा आएको देखिँदा मालपोत ऐन, २०३४ को दफा २४(१) मा सरकारी वा सार्वजनिक जग्गा व्यक्ति विशेषका नाउँमा दर्ता वा आवाद गर्न, गराउन हुँदैन भन्ने कानूनी व्यवस्था एवम् ऐ. ऐनको दफा २४ (२) मा “कसैले यो दफा प्रारम्भ हुनुभन्दा अघि वा पछि कुनै सरकारी वा सार्वजनिक जग्गा व्यक्ति विशेषको नाउँमा दर्ता गरी आवाद गरेकोमा त्यस्तो दर्ता स्वतः बदर हुने छ भन्ने कानूनी व्यवस्थाको रोहमा नेपाल सरकारको नाउँमा कायम भइसकेको जग्गा व्यक्तिको नाउँमा दा.खा. नामसारी गर्न मिल्ने कानूनी आधार नदेखिने ।

यसरी निवेदकले दाबी गरेको कि.नं. ७३४ को जग्गा पूरै अरनिको राजमार्ग विस्तारमा परेको भनी मालपोत कार्यालयको लिखित जवाफ रहेको साथै निवेदकले समेत अरनिको राजमार्ग विस्तार गर्दा उक्त केही जग्गा सडक बिस्तारमा परेको कुरालाई स्वीकार गरेको देखिँदा मालपोत ऐन, २०३४ को कानूनी व्यवस्था तथा उच्च अदालतबाट भएको फैसलालगायतका आधारमा अरनिको राजमार्गले right of way भन्दा बढी जग्गा अधिग्रहण गरेको हुँदा उक्त जग्गा आफ्नो नाउँमा दा.खा. गर्ने आदेश गरिपाउँ भन्ने निवेदन जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन । साथै अदालतको फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा स्थानीय नगरपालिकाले सरकारी जग्गामा निर्मित संरचना हटाई त्यस्ता सार्वजनिक तथा सरकारी जग्गाहरूको संरक्षण गर्नका लागि पठाएको सूचना तथा पत्रलाई गैहकानूनी मान्न मिल्ने अवस्थासमेत देखिएन । निवेदन जिकिरबमोजिमको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदन तथा निजको तर्फबाट उपस्थित विद्वान् अधिवक्ताहरूको बहससँग सहमत हुन नसकिने ।

रिट निवेदकले उठान गरेको उक्त जग्गाका सम्बन्धमा अदालतमा मुद्दा परी तहतह अदालतले उक्त जग्गा अरनिको राजमार्गले अधिग्रहण गरिसकेको र नेपाल सरकारको स्वामित्वमा रहेकोले व्यक्तिको नाउँमा दा.खा नामसारी गर्न नमिल्ने भनी फैसलासमेत गरेको र उक्त फैसला कार्यान्वयनको क्रममा नगरपालिकाले उक्त कि.नं. २६ मा निर्मित टहरोलगायतका संरचना हटाई सरकारी जग्गा संरक्षण गर्न गरेको आदेश कानूनसम्मत नै रहे भएको देखिएकोले निवेदकको मागबमोजिम विपक्षीहरूका नाउँमा उत्प्रेषणलगायत परमादेशको आदेश जारी गर्न मिल्ने अवस्था देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत : राजनप्रसाद सुवेदी

कम्प्युटर : राधिका घोरासाइने

इति संवत् २०८१ साल माघ ६ गते रोज १ शुभम् ।